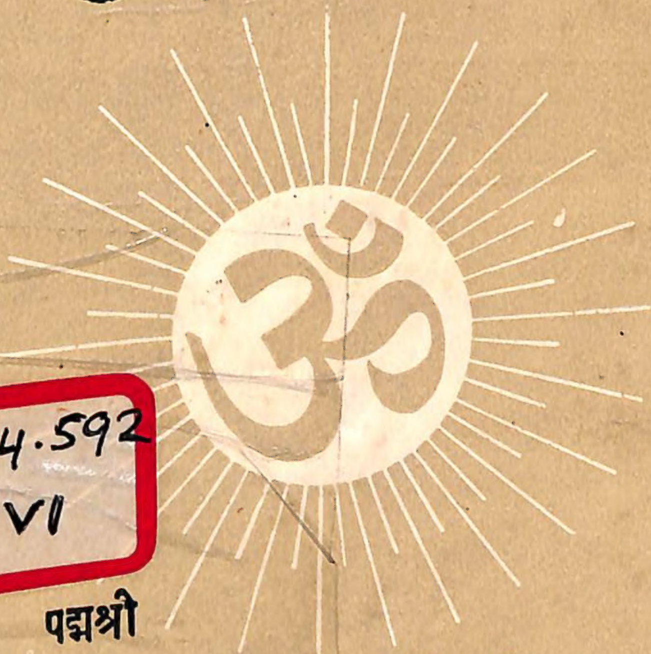
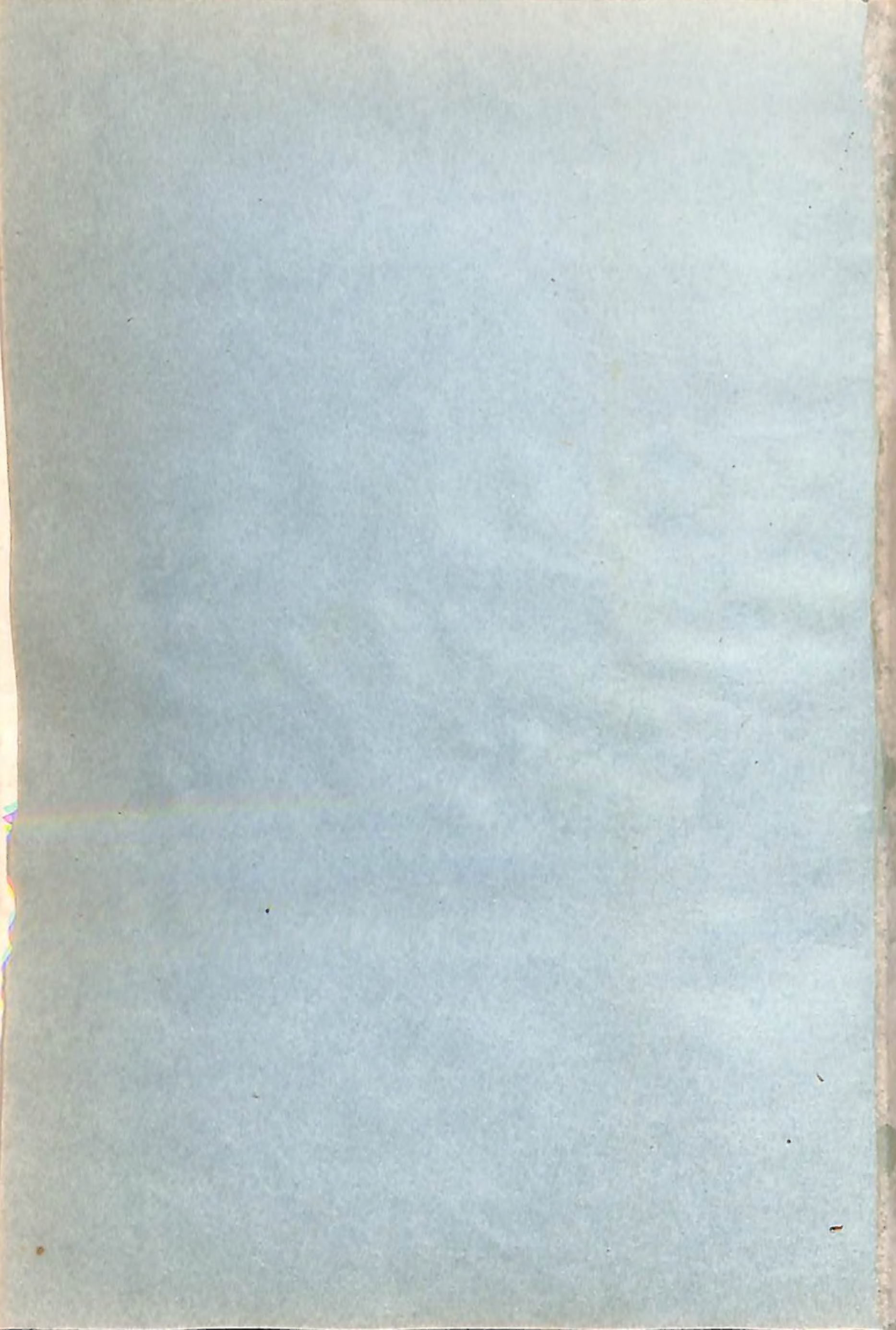
वेदामृतम्

यजुर्वेद सुभाषितावली



पद्मश्री
डा० कपिलदेव द्विवेदी



ओ३म्

वेदामृतम् : भाग - ९

यजुर्वेद - सुभाषितावली

(2434 MAXIMS FROM THE YAJURVEDA

लेखक

पद्मश्री डा० कपिलदेव द्विवेदी
निदेशक, विश्वभारती अनुसंधान परिषद्
ज्ञानपुर (वाराणसी)

एवं

डा० भारतेन्दु द्विवेदी
अध्यक्ष, विश्वभारती अनुसंधान परिषद्
ज्ञानपुर (वाराणसी)



विश्वभारती अनुसन्धान परिषद्

ज्ञानपुर (वाराणसी)

VEDAMRITAM -Vol. IX
(YAJURVEDA-SUBHĀSITĀVALĪ)
2434 Maxims From The Yajurveda.

By : Dr. K.D. DVIVEDI & Dr. B. DVIVEDI

संस्करण : सन् १९९४ ई०

मूल्य : सजिल्द ३५.०० अजिल्द २५.००

ISBN 81-85246-19-X
ISBN 81-85246-20-3

ISBN 81-85246-02-5.

वितरक :
विश्वभारती बुक एजेन्सी,
ज्ञानपुर (वाराणसी)

प्रकाशक :
विश्वभारती अनुसंधान परिषद्
शान्ति-निकेतन, ज्ञानपुर (वाराणसी)

कम्पोजिंग : *मोहित कम्प्यूटर*,
बी०२६/२५७ नबाबगंज, राजेश सदन
दुर्गाकुण्ड, वाराणसी (उ.प्र.)

प्राक्कथन

यजुर्वेद का महत्त्व : वेद प्रभु की वाणी है। वेद ज्ञान के स्रोत हैं । वेदों में अनन्त ज्ञान भरा हुआ है । वे मानवमात्र के लिए प्रकाश-स्तम्भ हैं । यजुर्वेद ज्ञान-प्रधान वेद है । मानव-जीवन यज्ञमय है। परमात्मा की पूरी सृष्टि यज्ञमय है । अतएव ब्राह्मण-ग्रन्थों में परमात्मा और मनुष्य को यज्ञ कहा गया है । (यज्ञो वै विष्णुः, पुरुषो वै यज्ञः) ।

परमात्मा के द्वारा सृष्टि-रचना यज्ञ है। मनुष्य के जीवन का प्रत्येक कार्य यज्ञ का अंग है। 'इदं न मम' (यह मेरा नही है) की भावना यज्ञ का शुद्ध रूप है। जीवन सभी दृष्टि से उन्नत, परिष्कृत और परिपुष्ट हो, यह यज्ञ का वास्तविक लक्ष्य है । अत एव यजुर्वेद में जीवन के सर्वाङ्गीण विकास की विधि प्रस्तुत की गई है ।

सुभाषित-संकलन : प्रस्तुत संकलन में शुक्ल यजुर्वेद संहिता (वाजसनेयि-माध्यन्दिन शाखा) से २४३४ सुभाषित संग्रह किये गये हैं। सुभाषित ग्रन्थ के प्राण या सार होते हैं। इनमें सूत्ररूप में जीवन की विविध शिक्षाएं दी हुई हैं। ये स्मरणीय हैं। इनमें से कुछ सुभाषितों को भी जीवन में क्रियात्मक रूप में उतारने पर जीवन पवित्र और उन्नत होता है, मानव की सभी अभिलाषाएँ पूर्ण होती हैं तथा महासंकटों से उद्धार होता है। सुभाषित प्रकाश-स्तम्भ हैं ।

सुभाषितों का वर्गीकरण : समस्त सुभाषितों को विषय की दृष्टि से १४ भागों में बाँटा गया है। सुविधा के लिए इनके भी उपविभाग किये गये हैं। सारे सुभाषित विषयानुसार अकारादि-क्रम से दिये गये हैं। प्रत्येक विषय से संबद्ध सुभाषित उसी शीर्षक के अन्तर्गत दिये गये हैं। १४ शीर्षक ये हैं :– १. धार्मिक, २. आचारशिक्षा, ३. नीतिशिक्षा, ४. राजनीतिशास्त्र, ५. अर्थशास्त्रीय, ६. समाजशास्त्रीय, ७. राष्ट्रीय, विश्वकल्याण, ८. दार्शनिक, ९. आयुर्वेद, १०. विज्ञान, ११. मनोविज्ञान, १२. वनस्पतिशास्त्र, १३. प्राणिविज्ञान, १४. विविध।

सन्दर्भ-निर्देश - सारे सुभाषित शुक्ल यजुर्वेद-संहिता से लिए गए हैं, अतः प्रत्येक सुभाषित के आगे यजुर्वेद या यजु॰ नहीं लिखा गया है। सुभाषित के आगे दो संख्याएँ दी गई हैं, जैसे– १.२३, ४०.२ आदि। पहली संख्या अध्याय की सूचक है और दूसरी मंत्र की ।

मन्त्रार्थ-विधि : मन्त्रार्थ के विषय में महर्षि पतञ्जलि के वैज्ञानिक मन्तव्य को अपनाया गया है कि 'यच्छब्द आह तदस्माकं प्रमाणम्' अर्थात् जो शब्द या मन्त्र का पद कहता है, वह हमारे लिए प्रमाण है । अतः मन्त्रार्थ के लिए वेद के शब्दों को ही आदर्श माना गया है और जो अर्थ अति सरल विधि से मन्त्र से निकलता है, वही दिया गया है । एक परमात्मा के ही अग्नि, इन्द्र, वरुण आदि नाम हैं, अतः यथास्थान इन शब्दों का अर्थ परमात्मा दिया गया है । सुभाषितों नें मन्त्र का कुछ अंश आदि या अन्त में नहीं आया है, अतः वाक्य-पूर्ति के लिए आदि या अन्त में वह अंश हिन्दी अर्थ में दिया गया है । इससे वाक्य का अर्थ पूरा स्पष्ट हो जाता है । कहीं-कहीं पर शाब्दिक अनुवाद न करके अर्थ-स्पष्टता के लिए सुबोध अर्थ दिया गया है । मन्त्रार्थ में नैरुक्त-प्रक्रिया और भाषावैज्ञानिक पद्धति को विशेष रूप से अपनाया गया है ।

मुद्रण कार्य : प्रेस के लिए ँ (ग्वङ्) समस्या थी, अतः उसके स्थान पर अनुस्वार (ं) का प्रयोग किया गया है । कुछ स्थानों पर अर्थ - स्पष्टता के लिये यण् आदि सन्धियों को तोड़कर रखा गया है। ... संकेत का अर्थ है- मध्य में कुछ अंश छोड़ा गया है।

पुस्तक के प्रकाशन-सम्बन्धी कार्यों में तथा प्रूफरीडिंग आदि में चि॰ धर्मेन्दु, ज्ञानेन्दु, विश्वेन्दु, आर्येन्दु एवं श्रीमती सविता द्विवेदी ने विशेष सहयोग दिया है, तदर्थ वे आशीर्वाद के पात्र हैं ।

आशा है वेदामृतम् का यह नवम भाग वेद-प्रेमियों की आवश्यकता पूर्ण करेगा और उनकी वेदों के प्रति रुचि बढ़ाएगा।

शान्ति-निकेतन, ज्ञानपुर (वाराणसी) **-डा॰ कपिलदेव द्विवेदी**
१-४-८६ ई॰

यजुर्वेद-सुभाषितावली

विषयसूची

[१] धार्मिक १-५०

[२] आचार-शिक्षा ५०-८५

ओम्

यजुर्वेद-सुभाषितावली

(१) धार्मिक

(क) यज्ञ

१. **अग्निं स्तोमेन बोधय । यजु० २२.१५**
हे मनुष्य! अग्निरूप ईश्वर को स्तुति से प्रदीप्त करो ।

२. **अग्निमद्य होतारमवृणीतायं यजमानः । २१.५९**
इस यजमान ने यज्ञिय अग्नि को चुना है ।

३. **अग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे । ३.५**
मैं अन्नभक्षक अग्नि को अन्न-समृद्धि के लिए रखता हूँ ।

४. **अग्ने बृहद् यजमाने वयो धाः । ११.३५**
हे अग्नि! यजमान को महान् शक्ति दो ।

५. **अग्ने मा ते प्रतिवेशा रिषाम । ११.७५**
हे अग्नि! तेरे पड़ौसी हम दुःखित न हों।

६. **अतमेरुर्यजमानस्य प्रजा भूयात् । १.२३**
यजमान की सन्तान खिन्न न रहे ।

७. **अदब्धासो अदाभ्यम्··· समिधीमहि । ३.१८**
अक्षत हम अधृष्य अग्नि को प्रदीप्त करते हैं।

८. **अनुवीरैरनु पुष्यास्म गोभिः । २६.१९**
हम वीर पुत्रों और गायों से पुष्ट हों ।

९. **अपामतिं दुर्मतिं बाधमानाः । १७.५४**
हम अज्ञान और कुमति को नष्ट करें ।

१०. **अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः । २३.६२**
यह यज्ञ संसार का केन्द्र है।

११. अयजन्तोर्जा … देवाः । १७.५५
देवों ने शक्ति से यज्ञ किया ।

१२. अर्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि । ३७.११
हे यज्ञ! तुम ज्वाला, तेज और तप हो।

१३. अव त्वं द्यावापृथिवी । २.९
तुम द्युलोक और पृथिवी की रक्षा करो ।

१४. अस्मिन् यज्ञे विश्रयन्ताम् ऋतावृधः । २८.५
इस यज्ञ में सत्य के प्रचारक आश्रय लें ।

१५. अस्मै यजमानायोरु राये कृधि । ६.३३
हे सोम! इस यजमान को महान् ऐश्वर्य दो।

१६. अहुतादः …. स्वयं पिबन्तु मधुनो घृतस्य । १७.१३
अहुताद प्राण आदि देव स्वयं मधु और घृत का पान करें ।

१७. आज्यस्य होतर्यज । २८.१
हे यजमान! घी से यज्ञ कर ।

१८. आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि । १९.४८
यज्ञ की हवि आत्मिक बल, प्रजा और पशुधन देती है।

१९. आत्मा च मे तनूश्च मे । १८.३
मुझमें आत्मिक शक्ति और शारीरिक बल हो ।

२०. आत्मा यज्ञेन कल्पताम् । १८.२९, २२.३३
यज्ञ से आत्मिक बल प्राप्त हो ।

२१. आ यातु यज्ञमुप नो जुषाणः । २०.३८
आनन्दित इन्द्र हमारे यज्ञ में आवे ।

२२. आयुर्यज्ञेन कल्पताम् । ९.२१, १८.२९, २२.३३
यज्ञ से आयुवृद्धि हो ।

२३. आरे बाधस्व दुच्छुनाम् । १९.३८
हे अग्नि! दुर्जनों को हमसे दूर रखो ।

२४. **आ सुवोर्जमिषं च नः । १९.३८**
हे अग्नि! हमें शक्ति और अन्न-समृद्धि दो ।

२५. **आहुतयो मे कामान् समर्धयन्तु । २०.१२**
आहुतियाँ मेरी कामनाओं को पूर्ण करें ।

२६. **इदं हविः प्रजननं मे अस्तु । १९.४८**
यह हवि मेरे लिए सन्तानप्रद हो ।

२७. **इन्द्राय धत्त इन्द्रियम् । २८.७**
हे अश्विनीकुमार! तुम आत्मा को शक्ति दो।

२८. **इन्धाना अग्निं स्वराभरन्तः । १५.४९**
ऋषियों ने यज्ञ किया और सुख पाया ।

२९. **इन्धानास्त्वा शतं हिमा द्युमन्तं समिधीमहि । ३.१८**
तेजोमय अग्नि को प्रदीप्त करते हुए हम सौ वर्ष तेजस्वी रहें ।

३०. **इमं देव यज्ञं स्वाहा वाते धाः । २.२१**
हे देव! इस यज्ञ को वायुमण्डल में ले जाओ।

३१. **इमं यज्ञमवतामध्वरं नः । २७.१७**
उषा और रात्रि हमारे इस पवित्र यज्ञ की रक्षा करें ।

३२. **इममद्य यज्ञं नयताग्रे । १.१२**
दिव्य जल इस यज्ञ को आगे ले जावें ।

३३. **इयं वेदिः परो अन्तः पृथिव्याः । २३.६२**
यह यज्ञवेदी पृथिवी का परम धाम है।

३४. **इषमूर्जं यजमानाय धेहि । १२.५८**
हे अग्नि! यजमान को अन्न और बल दो ।

३५. **इष्टयजुषा संस्थाम्, आप्नोति । १९.२९**
यजुर्वेद के मंत्रों से यज्ञ के द्वारा स्थिरता प्राप्त होती है।

३६. **इष्टापूर्ते कृणवाथाविरस्मे । १८.६०**
यज्ञ और दानकर्म इसका मार्ग प्रकाशित करें ।

३७. **इष्टापूर्ते संसृजेथामयं च । १८.६१**
यह यजमान यज्ञ और दानकर्म से संयुक्त हो ।

३८. **इष्टो यज्ञो भृगुभिराशीर्दा वसुभिः । १८.५६**
भृगुओं और वसु देवों ने सुखदायक यज्ञ किया।

३९. **उदेनमुत्तरां नयाग्ने घृतेनाहुत । १७.५०**
घी से प्रदीप्त हे अग्नि! इस यजमान को उन्नति की ओर ले चलो ।

४०. **ऊर्ध्वमिममध्वरं दिवि देवेषु होत्रा यच्छ । ६.२५**
इस यज्ञ और याजकों की उच्च द्युलोक में देवों तक ले जाओ ।

४१. **ऊर्ध्वो अध्वरं दिवि देवेषु धेहि। ३७.१९**
इस यज्ञ को द्युलोक में देवों तक ले जाओ।

४२. **ऊर्ध्वोऽध्वर आस्थात् । २.८**
यज्ञ सदा उच्चस्थानीय रहा ।

४३. **ऋचेमं यज्ञं नो नय स्वर्देवेषु गन्तवे । १८.६३**
ऋचाओं के द्वारा इस यज्ञको स्वर्ग में देवो तक ले जाओ ।

४४. **ऋजवे त्वा साधवे त्वा सुक्षित्यै त्वा । ३७.१०**
सरलता, सज्जनता और सुखद निवास के लिए यज्ञ को अपनाते हैं।

४५. **ऋतवस्ते यज्ञं वितन्वन्तु । २६.१४**
ऋतुएँ यज्ञ का विस्तार करें ।

४६. **ओजश्च मे सहश्च मे । १८.३**
मुझे ओज और शक्ति मिले ।

४७. **क्रतवे स्वाहा वसवे स्वाहा । ९.२०**
शुभ विचार और सुनिवास के लिए आहुति है ।

४८. **क्रमध्वमग्निना नाकम् । १७.६५**
अग्नि के द्वारा स्वर्ग तक पहुँचो ।

४९. **घर्मो अप्येतु देवान् । ८.६१**
हव्य देवों तक पहुँचे ।

५०. घृतं तीव्रं जुहोतन । ३.२
गर्म घी से यज्ञ करो ।

५१. घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज । २१.२९
घी और मधु का पान करो। हे होता! घी से यज्ञ करो ।

५२. घृतेन द्यावापृथिवी पूर्येथाम् । ५.२८
द्युलोक और पृथिवी घी से परिपूर्ण हों।

५३. घृतेन वर्धयामसि । ३.३
अग्नि को घी से प्रदीप्त करते हैं ।

५४. घृतेनञ्जन् सं पथो देवयानान् । २९.२
घी से देवयान मार्ग को सुन्दर बनाते हैं ।

५५. घृतैर्बोधयतातिथिम् । ३.१, १२.३०
घी से अतिथिरूप अग्नि को प्रदीप्त करो ।

५६. चक्षुर्यज्ञेन कल्पताम् । १८.२९
यज्ञ से नेत्र-शक्ति प्राप्त हो ।

५७. चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय। ३.१८
हे ऐश्वर्य युक्त अग्नि! तेरे द्वारा हम सकुशल पार पहुँचें ।

५८. जना यदग्निमयजन्त पञ्च। १२.२३
पंच जनों ने यज्ञ किया ।

५९. जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः । ५.३
प्रकट और अप्रकट दोनों अग्नियाँ हमारे लिए शुभ हों।

६०. जिन्व यज्ञपतिम् । ८.७
यज्ञपति को पुष्ट करो ।

६१. जिन्व यज्ञम् । ८.७
यज्ञ को पुष्ट करो ।

६२. जुषस्व समिधो मम । ३.४
हे अग्नि! मेरे हव्य को स्वीकार करो ।

६३. जुहोत प्र च तिष्ठत । २६.२२
यज्ञ करो और प्रतिष्ठित हो।

६४. जेमा च मे महिमा च मे । १८.४
मुझे विजय और महत्त्व प्राप्त हो ।

६५. ज्योतिर्यज्ञेन कल्पताम् । १८.२९, २२.३३
यज्ञ से ज्योति प्राप्त हो ।

६६. ज्योतिश्च मे स्वश्च मे यज्ञेन कल्पताम् । १८.१
यज्ञ से ज्योति और सुख मिले ।

६७. तं पत्नीभिरनु गच्छेम देवाः । १५.५०
विद्वान् पत्नियों के साथ यज्ञ में जावें ।

६८. तदग्निर्वैश्वकर्मणः स्वर्देवेषु नो दधत् । १८.६५
सर्वशक्तिमान् अग्नि हमें दिव्य सुख दे ।

६९. तदेतत् सर्वमाप्नोति यज्ञे सौत्रामणी सुते । १९.३१
सौत्रामणी यज्ञ करने से यह सब कुछ मिलता है।

७०. तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् । ३१.१६
उस समय यज्ञ आदि प्रमुख कर्तव्य थे।

७१. तिस्रो देवीर्बर्हिरिदं - - - सदन्तु । २९.३३
इडा आदि तीनों देवियाँ इस यज्ञ में बैठें।

७२. तृम्पन्तु होत्राः । ७.१५
याजक तृप्त हों ।

७३. तेन यज्ञपतिं तेन मामव । २.१२
यज्ञ के द्वारा यज्ञपति और मेरी रक्षा करो ।

७४. तेन यज्ञेन स्वरंकृतेन - - - आ पृणध्वम् । २५.२८
हे देवो! उस सुन्दर यज्ञ से प्रसन्न होकर हमें पूर्ण करो ।

७५. तेनेमं यज्ञं नो नय स्वर्देवेषु गन्तवे । १५.५५, १८.६२
हमारे इस यज्ञ को स्वर्ग में देवों तक पहुँचाओ ।

७६. दक्षश्च मे बलं च मे । १८.२
दक्षता और बल मुझे प्राप्त हो ।

७७. दमेदमे समिधं यक्ष्यग्ने । ८.२४
हे अग्नि! प्रत्येक घर में समिधा से यज्ञ करते हो।

७८. दात्रे वोचः । ६.३३
हे सोम! तुम दाता को उपदेश दो ।

७९. दिवं ते धूमो गच्छतु । ६.२१
यज्ञ का धुआँ आकाश में जावे।

८०. दिवि देवेषु होत्रा यच्छ । ६.२५
होता को द्युलोक में देवों के मध्य रखो।

८१. दिवि धा इमं यज्ञम् । ३८.११
इस यज्ञ को द्युलोक में ले जाओ ।

८२. दिव्यं नभो गच्छ । ६.२१
यज्ञ सूक्ष्म आकाश तक जावे।

८३. दिव्यं नभो गच्छतु । २.२२
यज्ञ दिव्य आकाश में जावे ।

८४. देवं बर्हिः···· देवमिन्द्रमवर्धयत् । २८.३५
दिव्य यज्ञ ने देव इन्द्र को बढ़ाया ।

८५. देवं सवितारं गच्छ । ६.२१
यज्ञ सूर्य देव तक जावे ।

८६. देव सवितः प्रसुव यज्ञम् । ९.१
हे देव सूर्य! यज्ञ को प्रेरणा दो ।

८७. देवा नो यज्ञमृतुथा नयन्तु । २६.१९
देवता ऋतुओं के अनुसार हमारे यज्ञ को आगे ले जावें ।

८८. देवान् दिवमगन् यज्ञः । ८.६०
यज्ञ द्युलोक में देवों तक पहुँचा ।

८९. **देवा यज्ञं नयन्तु नः । ३३.८९, ३७.७**
देवता हमारे यज्ञ को आगे ले जावें ।

९०. **देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृहणामि । ७.२३**
देवभक्त को यज्ञ की समृद्धि के लिए अपनाते हैं।

९१. **देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणे । १.१**
प्रेरक परमात्मा तुम्हें श्रेष्ठतम कर्म यज्ञ के लिए ले जावे ।

९२. **द्युमद् विभाति क्रतुमज्जनेषु । २६.३**
यज्ञकर्ता जनता में तेजस्वी होकर चमकता है ।

९३. **धिनुहि देवान् । १.२०**
देवों को प्रसन्न करो ।

९४. **धीतिश्च मे क्रतुश्च मे । १८.१**
बुद्धि और ज्ञान मुझे प्राप्त हो ।

९५. **ध्रुवासि ध्रुवोऽयं यजमानोऽस्मिन्नायतने प्रजया पशुभिर्भूयात् । ५.२८**
पृथिवी निश्चल है । यह यजमान इस घर में सन्तान और पशुओं से युक्त होकर स्थिर भाव से रहे ।

९६. **नमो देवेभ्यः स्वधा पितृभ्यः । २.७**
देवों को नमस्कार। हम पितरों या विद्वानों को अन्न दें।

९७. **नमो भरन्त एमसि । ३.२२**
हम परमात्मा को नमस्कार करते हुए आते हैं ।

९८. **नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके । १५.५०**
पवित्र लोक में मोक्ष प्राप्त करें ।

९९. **परिगृह्य देवा यज्ञमायन् । १७.५६**
यज्ञाग्नि को लेकर देवता यज्ञ में आए।

१००. **पञ्च दिशो दैवीर्यज्ञमवन्तु । १७.५४**
पाँच दिव्य दिशाएँ यज्ञ की रक्षा करें ।

१०१. **पाहि यज्ञं पाहि यज्ञपतिम्** । ७.२०
यज्ञ और यज्ञपति की रक्षा करो ।

१०२. **पाहि यज्ञम्** ।२.६
यज्ञ की रक्षा करो ।

१०३. **पाहि यज्ञपतिं पाहि मां यज्ञन्यम्** । २.६
हे विष्णु ! तुम यज्ञपति की और मुझ यज्ञकर्ता की रक्षा करो ।

१०४. **पितॄन् पृथिवीमगन् यज्ञः** । ८.६०
यज्ञ पृथिवी पर पितरों या विद्वानों के पास गया।

१०५. **पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यै** । १५.५०
पुत्र, भाइयों और सुवर्णादि द्रव्यों के साथ यज्ञ करें ।

१०६. **पृथिवि देवयजनि** । १.२५
पृथिवी देवयज्ञ वाली है ।

१०७. **प्रजया च बहुं कृधि** ।१७.५०
मुझे सन्तान से महान् बनाओ।

१०८. **प्रजां च परिपातु नः** । २६.१४
वर्ष हमारी प्रजा की रक्षा करे ।

१०९. **प्रजानन् यज्ञमुप याहि विद्वान्** । ८.२०
हे अग्नि ! तुम विद्वान् हो । ज्ञानपूर्वक यज्ञ में आवो ।

११०. **प्रप्र यज्ञपतिं तिर** । ५.३८
हे विष्णु ! यज्ञपति का उद्धार करो ।

१११. **प्रसुव यज्ञपतिं भगाय** । ९.१
हे सविता ! यज्ञपति को ऐश्वर्य के लिए प्रेरणा दो ।

११२. **प्राणो यज्ञेन कल्पताम्** । ९.२१, १८.२९, २२.३३
यज्ञ से प्राणशक्ति प्राप्त हो ।

११३. **बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टम्**।२.१३
बृहस्पति इस यज्ञ को मंगलमय करे ।

११४. भद्रो नो अग्निराहुतः । १५.३८
यह आहुत अग्नि हमारे लिए शुभ हो ।

११५. भिषजा सखाया हविषेन्द्रं भिषज्यतः । २८.७
मित्र अश्विनी हवि से इन्द्र को नीरोग करते हैं ।

११६. मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे । ३७.३
यज्ञ और यज्ञ की सर्वोच्चता के लिए मैं पदार्थों को लेता हूँ ।

११७. मनुष्यानन्तरिक्षमगन् यज्ञः । ८.६०
यज्ञ मनुष्य के हितार्थ अन्तरिक्ष में गया।

११८. मनो यज्ञेन कल्पताम् । १८.२९, २२.३३
यज्ञ से मनोबल प्राप्त हो ।

११९. मन्त्रं वोचेमाग्नये । ३.११
अग्नि देवता के लिए मन्त्र बोलें।

१२०. मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम् । ८.३२
महान् द्युलोक और पृथिवी हमारे इस यज्ञ को सफल करें ।

१२१. मा च रिषदुपसत्ता ते अग्ने । २७.२
हे अग्नि! तेरा उपासक कभी दुःखित न हो ।

१२२. मा यज्ञं हिंसिष्टं मा यज्ञपतिम् । ५.३, १२.६०
भौतिक और दैवी अग्नि यज्ञ और यज्ञपति को हानि न पहुँचावें।

१२३. मा ह्वार्मा ते यज्ञपतिर्ह्वार्षीत् । १.२, १.९
यज्ञ और यज्ञपति पथच्युत न हों ।

१२४. यं कं लोकमगन् यज्ञस्ततो मे भद्रमभूत् । ८.६०
यज्ञ जिस लोक में भी जाता है, वहाँ से हमारा कल्याण हो ।

१२५. यजमानमवर्धयन् । २०.७३
देवों ने यजमान को बढ़ाया ।

१२६. यजमानाय द्रविणं दधात । ८.१७
देव यजमान को ऐश्वर्य दें।

१२७. **यजमानाः ···· विश्वा वसु दधिरे वार्याणि** । १२.२८
यजमानों को सभी श्रेष्ठ ऐश्वर्य प्राप्त हुए।

१२८. **यजिष्ठेन मनसा यक्षि देवान्** । १८.७५
अत्यन्त श्रद्धालु हृदय से देवों के लिए यज्ञ करो।

१२९. **यज्ञं ये विश्वतोधारं सुविद्वांसो वितेनिरे** । १७.६८
विद्वानों ने विश्वव्यापी यज्ञ का विस्तार किया।

१३०. **यज्ञं समिमं दधातु (बृहस्पतिः)** । २.१३
बृहस्पति यज्ञ को ठीक सम्पन्न करे ।

१३१. **यज्ञ नमश्च** । २.१९
यज्ञ को नमस्कार ।

१३२. **यज्ञमव** । २.१२
यज्ञ की रक्षा करो ।

१३३. **यज्ञ यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छ** । ८.२२
हे यज्ञ! तुम यज्ञ में जाओ और यज्ञपति के पास जाओ।

१३४. **यज्ञस्य शिवे संतिष्ठस्व** । २.१९
हे यज्ञ! तुम यज्ञ के मंगलमय रूप में रहो ।

१३५. **यज्ञेन यज्ञमजन्त देवाः** । ३१.१६
देवों ने यज्ञ के द्वारा यज्ञ को फैलाया।

१३६. **यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नम्** । ८.४, ३३.६८
यज्ञ देवों के पास कल्याणकारी रूप में जाता है ।

१३७. **यज्ञो देवेषु कल्पताम्** । १९.४५
यज्ञ देवों के लिए होवे ।

१३८. **यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्** । ९.२१, १८.२९, २२.३३
यज्ञ यज्ञ से फैले ।

१३९. **यत्र यज्ञो घृतस्य धारा अभि तत् पवन्ते** । १७.१७
यज्ञ और घी की धारा स्थान को पवित्र करते हैं ।

१४०. **यद् दत्तं यत् परादानं यत् पूर्तं याश्च दक्षिणाः । १८.६४**
दान, दीनों को दान, पुण्य के कार्य और दक्षिणा देवों को प्राप्त हों ।

१४१. **यस्य कुर्मो गृहे हविस्तमग्ने वर्धया त्वम् । १७.५२**
हे अग्नि! हम जिसके घर में यज्ञ करते हैं, उसे सम्पन्न करो ।

१४२. **यूपेन यूप आप्यते । १९.१७**
यज्ञिय स्तम्भ के द्वारा यूप मिलता है।

१४३. **येषामिन्द्रो युवा सखा । ७.३२**
युवा इन्द्र जिनका मित्र है, उन्हें श्री मिलती है।

१४४. **रसेनान्नं यजमानाय धेहि । १९.५**
हे सोम! रसयुक्त अन्न यजमान को दो ।

१४५. **रायस्पोषं विश्वमायुरशीय । ८.६२**
मैं योगक्षेम और पूर्ण आयु प्राप्त करूँ।

१४६. **रायस्पोषे अधि यज्ञो अस्थात् । १७.५४**
यज्ञ योगक्षेम के लिए है ।

१४७. **रायस्पोषेण सं सृज । १७.५०**
हे अग्नि! हमें योगक्षेम से युक्त करो ।

१४८. **रायस्पोषेण समिषा मदन्तः । ११.७५**
हे अग्नि! योगक्षेम और धन-धान्य से हम प्रसन्न रहें ।

१४९. **रावाऽसि गभीरमिममध्वरं कृधि । ६.३०**
हे अग्नि! तुम दाता हो । इस यज्ञ को महान् बनाओ ।

१५०. **रेवति यजमाने प्रियं धाः । ६.११**
हे वाग्देवी ! तुम ऐश्वर्य-सम्पन्न हो । यजमान का भला करो ।

१५१. **लोकसन्यभयसनि । १९.४८**
यज्ञ की आहुति लोकप्रियता और निर्भयता देती है ।

१५२. **वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद् हविः । ३१.१४**
दैवी यज्ञ में वसन्त घी था, ग्रीष्म समिधा और शरद् हव्य था।

१५३. वसोः पवित्रमसि - - - विश्वधा असि । १.२
यज्ञ पवित्र है और संसार का धारक है।

१५४. वसोः पवित्रमसि शतधारम् । १.३
यज्ञ पवित्र है और अनन्त धारा वाला है।

१५५. वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् । १.३
यज्ञ पवित्र है और सहस्रों धाराओं वाला है।

१५६. वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्जं शतक्रतो । ३.४९
हे इन्द्र! हम यज्ञरूपी मूल्य से अन्न और बल खरीदते हैं ।

१५७. वाक् च मे मनश्च मे । १८.२
मुझे वाक्शक्ति और मनोबल प्राप्त हो ।

१५८. वाग् यज्ञेन कल्पताम् । १८.२९, २२.३३
यज्ञ से वाक्शक्ति प्राप्त हो ।

१५९. वायो ये ते - - - रथासस्तेभिरा गहि । २७.३२
हे वायु! तुम अपने रथों से यज्ञ में आओ।

१६०. विश्वकर्मन् हविषा - - - इन्द्रमकृणोरवध्यम् । १७.२४
हे विश्वकर्मा! तुमने हवि से इन्द्र को अजेय बना दिया।

१६१. विश्वजनस्य छाया । ५.२८
पृथिवी संसार भर को छाया प्रदान करती है।

१६२. विष्णो हव्यं रक्ष । १.४
हे विष्णु! हमारे हव्य की रक्षा करो।

१६३. वेद्या वेदिः समाप्यते । १९.१७
यज्ञवेदी से पवित्र स्थान प्राप्त होता है।

१६४. शतमक्षराणि, अशीतिर्होमाः । २३.५८
मन्त्रों में सौ तक अक्षर हैं। ८० प्रकार के यज्ञ हैं।

१६५. शर्म च मे वर्म च मे । १८.३
मुझे सुख और सुरक्षा प्राप्त हो ।

१६६. सं यज्ञपतिराशिषा । ६.१०
यजमान आशीर्वाद से युक्त हो ।

१६७. संवत्सरस्ते यज्ञं दधातु नः । २६.१४
वर्ष तुम्हारे यज्ञ को देवों के पास पहुँचावे ।

१६८. सखिविदं सत्राजितं धनजितं स्वर्विदम् । ११.८
यज्ञ मित्र-दाता, सदा विजयी, धनदाता और प्रकाश-दाता है।

१६९. सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः। १२.४४
यजमान की कामनाएँ पूर्ण हों।

१७०. स नः स्योनः सुयजा यजेह । ५.४
अग्नि हमारे लिए सुखद है और वह सुख से यज्ञ करे ।

१७१. स नो भव शिवस्त्वम् । १७.५३
हे अग्नि! तुम हमारे लिए शुभ होओ।

१७२. सप्त होतार ऋतुशो यजन्ति । २३.५८
सात होता ऋतु के अनुसार यज्ञ करते हैं।

१७३. समिद्धो अग्निः समिधा । २१.१२
अग्नि समिधा से प्रदीप्त होती है।

१७४. समिधाग्निं दुवस्यत । ३.१, १२.३०
समिधा से अग्नि की पूजा करो ।

१७५. समिधानं महद् यशः । २८.२४
अग्नि महान् यश को प्रदीप्त करती है ।

१७६. समेनं वर्चसा सृज । १७.५१
इस यजमान को वर्चस्वी बनाओ।

१७७. सर्ववीरस्तं जुषस्व । ८.२२
सारे वीरों के साथ यज्ञ करो ।

१७८. सवितर्यज्ञं प्रणय देवाव्यम् । ११.८
हे सविता! इस देवप्रिय यज्ञ को आगे ले चलो।

१७९. **सादया यज्ञं सुकृतस्य योनौ । ११.३५**
यज्ञ को सत्कर्मों के मूल में रखो।

१८०. **सुम्नहूर्यज्ञ आ च वक्षत् । १७.६२**
सुखकर यज्ञ देवों को लावे ।

१८१. **स्रुचश्च मे चमसाश्च मे । १८.२१**
स्रुवा और चमचा मेरे पास हों ।

१८२. **स्वधामस्मै यजमानाय धेहि । २९.२**
इस यजमान को ज्ञान दो ।

१८३. **स्वयं यजस्व पृथिवीमुत द्याम् । १७.२२**
स्वयं द्युलोक और पृथिवी के लिए यज्ञ करो ।

१८४. **स्वदाति यज्ञं मधुना घृतेन । २०.४५**
वह यज्ञ को मधु और घी से स्वादिष्ट बनाता है ।

१८५. **स्वर्देवा अगन्म, अमृता अभूम । १८.२९**
देवता प्रकाश को प्राप्त हुए और अमर हो गए।

१८६. **स्वर्यज्ञेन कल्पताम् । १८.१९, २२.३३**
यज्ञ से दिव्य सुख प्राप्त हो ।

१८७. **स्वर्यन्तु यजमानाः स्वस्ति । १७.५९**
यजमान सकुशल स्वर्ग को प्राप्त हो ।

१८८. **स्वां योनिं गच्छ। ८.२२**
यज्ञ अपने मूल स्थान को प्राप्त हो ।

१८९. **स्वाहाकृतं हविरदन्तु देवाः । २९.३६**
स्वाहा के द्वारा दी गई हवि को देवता खावें।

१९०. **स्वाहाकृते ऊर्ध्वनभसं मारुतं गच्छतम् । ६.१६**
स्वाहा किए जाने पर ऊपर अन्तरिक्षस्थ वायु में जाओ ।

१९१. **स्वाहा यज्ञं मनसः । ४.६**
मानस यज्ञ के लिए यह आहुति है ।

१९२. हविः शमीष्व । १.१५
हव्य को सुसंस्कृत करो ।

१९३. हविरदन्तु देवाः। २९.११
देवता हव्य खावें ।

१९४. हविषेन्द्रमवर्धयन् । २०.६८
देवों ने हवि से इन्द्र को पुष्ट किया।

१९५. हविष्कृदेहि हविष्कृदेहि ।१.१५.
यज्ञकर्ता आवे, यज्ञकर्ता आवे ।

१९६. हविष्मतीरिमा आपः । ६.२३
ये जल हव्य से युक्त हैं ।

१९७. हविष्माँ अस्तु सूर्यः । ६.२३
सूर्य हव्य से युक्त हो ।

१९८. हिरण्यैश्चन्द्री यजति प्रणेताः । २०.३७
विद्वान् एवं धनी यजमान सुवर्ण से यज्ञ करता है।

१९९. हृदे त्वा मनसे त्वा । ३७.१९
हृदय और मन की शक्ति के लिए हम यज्ञ करते हैं।

२००. होतर्यज । २३.६४
हे होता! तू यज्ञ कर ।

(ख) अग्नि देवता

२०१. अगन्म विश्ववेदसम् । ३.३८
सर्वसमृद्धियुक्त अग्नि (परमात्मा) को हम प्राप्त हुए।

२०२. अग्न आ याहि वीतये । ११.४६
हे अग्नि! हव्य के उपभोग के लिए आइए।

२०३. अग्न आयूंषि पवसे । १९.३८
हे अग्नि! तुम जीवन को पवित्र करते हो ।

२०४. **अग्नयो गोपायत मा । ५.३४**
ये अग्नियाँ मेरी रक्षा करें ।

२०५. **अग्निं दूतं पुरो दधे । २२.१७**
अग्निरूपी दूत को मैं आगे रखता हूँ ।

२०६. **अग्निं सुम्नाय दधिरे पुरो जनाः । १२.१११**
लोगों ने अपने सुख के लिए अग्नि को आगे रखा।

२०७. **अग्निं होतारं मन्ये दास्वन्तं वसुम् । १५.४७**
देवों के आह्वाता अग्नि को मैं दाता और धनरूप मानता हूँ।

२०८. **अग्निः प्रजां बहुलां मे करोतु। १९.४८**
अग्नि हमारी सन्तान-वृद्धि करे ।

२०९. **अग्निमामादं जहि । १.१७**
मांसभक्षक अग्नि का त्याग करो ।

२१०. **अग्निरमृतो अभवद् वयोभिः । १२.२५**
अग्नि अपनी शक्ति से अमर हुआ।

२११. **अग्निरस्मि, जन्मना जातवेदाः । १८.६६**
मैं अग्नि हूँ और जन्म से ही जीवमात्र को जानता हूँ ।

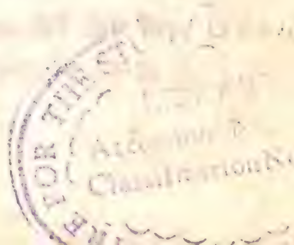
२१२. **अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः । २६.९**
अग्नि द्रष्टा है, पवित्रकर्ता है, पाञ्चजन्य है और पुरोहित है।

२१३. **अग्निर्देवानामभवत् पुरोगाः । २९.३६**
अग्नि देवों का नेता है।

२१४. **अग्निर्देवो देवाँ आ च वक्षत् । १७.६२**
अग्नि देवता सब देवों को लावे ।

२१५. **अग्निर्धिया समृण्वति । २२.१६**
अग्नि बुद्धि से सुसंस्कृत करता है ।

२१६. **अग्निर्नः पातु दुरितादवद्यात् । ४.१५**
अग्नि हमें पापों और कुकर्मों से बचावे।



२१७. अग्निर्नो वनते रयिम् । १७.१६
अग्नि हमें ऐश्वर्य देता है ।

२१८. अग्निर्मूर्धा दिवः - - - अपां रेतांसि जिन्वति । ३.१२
अग्नि द्युलोक का शिरोभाग है । यह जलीय तत्त्वों को पुष्ट करता है ।

२१९. अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद् । ३३.९
अग्नि पापों (प्रदूषण) को नष्ट करता है ।

२२०. अग्ने गृहपतेऽभि द्युम्नमभि सह आ यच्छस्व । ३.३९
हे गृहपति अग्नि ! तुम हमें धन और बल दो ।

२२१. अग्ने त्वं सु जागृहि । ४.१४
हे अग्नि ! तुम सदा जागरूक रहो ।

२२२. अग्ने त्वां कामये गिरा । १२.११५
हे अग्नि ! मैं तुमको स्तुति के द्वारा चाहता हूँ ।

२२३. अग्ने नय सुपथा राये । ७.४३
हे अग्निरूप ईश्वर ! तुम ऐश्वर्य के लिए हमें सन्मार्ग से ले चलो ।

२२४. अग्ने यक्षि स्वं दमम् ।३३.३
हे अग्नि ! तुम अपने घर को पवित्र करो ।

२२५. अग्ने यत्ते दिवि वर्चः । १२.४८
हे अग्नि ! तुम्हारा द्युलोक में जो तेज है, मैं उसकी स्तुति करता हूँ।

२२६. अग्ने शर्ध महते सौभगाय । ३३.१२
हे *अग्नि (जीव)* ! महान् सौभाग्य के प्रयत्नशील हो ।

२२७. अग्नेस्तनूरसि । १.१५
हे जीव ! तुम अग्नि के शरीर रूप हो ।

२२८. अच्युतानामच्युतक्षित्तमः । ७.२५
हे अग्नि ! तुम अनश्वरों में सर्वोच्च अनश्वर हो ।

२२९. अन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त । १९.४८
हे अग्नि ! तुम अन्न, जल और शक्ति हमें दो ।

२३०. **अयं नो अग्निर्वरिवस्कृणोतु** । ७.४४
यह अग्नि हमें धन दे।

२३१. **अयं मृधः पुर एतु प्रभिन्दन्** । ७.४४
यह अग्नि शत्रुओं को नष्ट करता हुआ आगे चले ।

२३२. **अयमग्निः पुरीष्यो रयिमान् पुष्टिवर्धनः** । ३.४०
यह अग्नि श्रीवर्धक, ऐश्वर्ययुक्त और पुष्टिकारक है।

२३३. **अयमग्निर्गृहपतिर्गार्हपत्यः** । ३.३९
यह गार्हपत्य अग्नि गृहस्वामी है ।

२३४. **अश्याम तं काममग्ने तवोती** । १८.७४
हे अग्नि! तेरे संरक्षण में हम अपने मनोरथ प्राप्त करें ।

२३५. **अश्याम द्युम्नमजराजरं ते** । १८.७४
हे अग्नि! तेरे अक्षय धन को हम प्राप्त करें।

२३६. **अश्याम रयिं रयिवः सुवीरम्** । १८.७४
हे धनसंपन्न अग्नि! हम वीर पुत्रों से युक्त धन प्राप्त करें ।

२३७. **आसुवोर्जमिषं च नः** । ३५.१६
हे अग्नि! हमें अन्न और बल दो ।

२३८. **इष्टापूर्ते संसृजेथामयं च** । १५.५४
यह यजमान यज्ञ और दान-पुण्य से युक्त हो ।

२३९. **उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि** । १५.५४
हे अग्नि! तुम प्रबुद्ध होओ और जागरूक रहो ।

२४०. **उपसत्ता वर्धतां ते अनिष्टृतः** । २७.४
हे अग्नि! तुम्हारा उपासक अक्षत रहते हुए बढ़े ।

२४१. **ऋध्यामा त ओहैः** । १७.७७
हे अग्नि! तेरी स्तुतियों से हम समृद्ध हों ।

२४२. **कविं सम्राजमतिथिं जनानाम्** । ७.२४, ३३.८
अग्नि कवि, सम्राट् और मनुष्यों का अतिथि है ।

२४३. **क्रव्यादमग्निं प्र हिणोमि दूरम्** । ३५.१९
मैं मांसभक्षक अग्नि को दूर हटाता हूँ ।

२४४. **क्ष्मया वृधान ओजसा** । ३३.९२
अग्नि मानवीय प्रार्थनाओं और अपने बल से बढ़ता है ।

२४५. **जातवेदः शिवो भव** । १२.१६
हे अग्नि! तुम हमारे लिए शुभ हो ।

२४६. **तव द्युम्नान्युत्तमानि सन्तु** । ३३.१२
हे अग्नि! तुम्हारा तेज सर्वश्रेष्ठ हो ।

२४७. **तेजसा दिश उद्दृंह** । १७.७२
हे अग्नि! तुम अपने तेज से दिशाओं को दृढ़ करो ।

२४८. **तेन वयं गमेम ब्रध्नस्य विष्टपम्** । १८.५१
अग्नि के द्वारा हम सूर्यलोक को प्राप्त हों ।

२४९. **त्वं दूतः कविरसि प्रचेताः** । २९.२५
हे अग्नि! तुम दूत, कवि और ज्ञानवान् हो ।

२५०. **त्वं नो अन्तम उत त्राता** । २५.४७
हे अग्नि! तुम हमारे समीपस्थ और रक्षक हो ।

२५१. **त्वं यज्ञेष्वीड्यः** । ४.१६
हे अग्नि! तुम यज्ञों में स्तुत्य हो ।

२५२. **त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄन् पाहि** । १८.७७
हे सदा-तरुण अग्नि! तुम दाता लोगों की रक्षा करो ।

२५३. **त्वं हि धनदा असि** । ९.२८
हे अग्नि! तुम धनदाता हो ।

२५४. **त्वं हि रत्नधा असि** । २६.२१
हे अग्नि! तुम रत्नों के धारक हो ।

२५५. **त्वमग्ने प्रथमो अङ्गिरा ऋषिः** । ३४.१२
हे अग्नि! तुम प्रथम ज्ञानी ऋषि हो ।

२५६. **त्वमग्ने व्रतपा असि । ४.१६**
हे अग्नि! तुम व्रत के रक्षक हो ।

२५७. **त्वमग्ने सूर्यस्य वर्चसागथाः । ३.१९**
हे अग्नि! तुम सूर्य के तेज के साथ आओ।

२५८. **देवत्रा च कृणुह्यध्वरं नः । २९.२६**
हे अग्नि! तुम हमारे यज्ञ को देवों तक पहुँचाओ।

२५९. **देवयजं वह । १.१७**
हे यजमान! तुम यज्ञिय अग्नि को अपनाओ ।

२६०. **देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाः । १२.२**
धनदाता देवों ने अग्नि (ईश्वर) को धारण किया ।

२६१. **देवो अग्निः स्विष्टकृत् । २८.४५**
अग्नि देवता यज्ञ को मंगलकारी करता है ।

२६२. **देवो देवेषु देवः । २७.१२**
अग्नि देवता देवों में श्रेष्ट देवता है ।

२६३. **दैव्यो अतिथिः शिवो नः। १२.३४**
अग्नि दिव्य अतिथि है । वह हमारे लिए शुभ हो ।

२६४. **द्यावाक्षामा रुक्मो अन्तर्विभाति । १२.२**
तेजोमय अग्नि द्यावा-पृथिवी के बीच शोभित होता है ।

२६५. **धनञ्जयं रणे रणे । ११.३४**
अग्नि प्रत्येक युद्ध में शत्रुओं के धन को जीतता है ।

२६६. **ध्रुवाणां ध्रुवतमः । ७.२५**
अग्नि स्थिरों में अतिस्थिर है ।

२६७. **नमो वोऽस्तु । ५.३४**
अग्नियों को नमस्कार ।

२६८. **निष्क्रव्यादं सेधा । १.१७**
मांसभक्षक अग्नि को दूर हटाओ ।

२६९. पथो अनक्तु मध्वा घृतेन । २७.१२
अग्नि हमारे मार्ग को मधु और घी से सिक्त करे ।

२७०. पात माऽग्नयः । ५.३४
अग्नियाँ मेरी रक्षा करें।

२७१. पावको अस्मभ्यं शिवो भव । १७.४, ३६.२०
हे अग्नि! तुम हमारे लिए शुभ होओ।

२७२. पिपृत माऽग्नयः । ५.३४
हे अग्नियाँ! तुम मुझे पूर्ण करो ।

२७३. पुनरग्न इषायुषा । १२.९
हे अग्नि! हमें पुनः अन्न और दीर्घायु से युक्त करो ।

२७४. पुनरूर्जा नि वर्तस्व । १२.९
हे अग्नि! हमें पुनः शक्ति दो ।

२७५. पुनर्नः पाह्यंहसः । १२.९
हे अग्नि! हमें पुनः पापों से बचाओ ।

२७६. पुनर्नो नष्टमा कृधि । १२.८
हे अग्नि! हमारे नष्ट धन को पुनः प्राप्त कराओ।

२७७. पुनर्नो रयिमा कृधि । १२.८
हे अग्नि! पुनः हमें धन दो ।

२७८. पुरीष्यासो अग्नयः । १२.५०
अग्नियाँ श्रीवृद्धिकर हैं।

२७९. प्रजापतेस्तपसा वावृधानः । २९.११
अग्नि प्रजापति के तप से बढ़ता है ।

२८०. प्र नो जीवातवे सुव । १८.६७
हे अग्नि! हमें दीर्घ जीवन के लिए प्रेरणा दो ।

२८१. प्रबुधे नः पुनस्कृधि । ४.१४
हे अग्नि! हमें पुनः प्रबुद्ध करो ।

२८२. **प्रियासः सन्तु सूरयः । ३३.१४**
हे अग्नि! विद्वान् तुम्हारे प्रिय हों ।

२८३. **भासाऽन्तरिक्षमा पृण । १७.७२**
हे अग्नि! तुम से अन्तरिक्ष को भर दो ।

२८४. **मनीषाणां प्रार्पणः । १२.२२**
हे अग्नि! तुम बुद्धि के दाता हो ।

२८५. **मर्तेष्वग्निरमृतो नि धायि । १२.२४**
मरणशील मनुष्यों में अमर अग्नि रखी हुई है ।

२८६. **मा मा हिंसिष्ट । ५.३४**
हे अग्नियाँ! तुम मुझे हानि न पहुँचाओ ।

२८७. **मा हिंसीस्तन्वा प्रजाः । १२.३२**
हे अग्नि! तुम अपने शरीर से लोगों को हानि न पहुँचाओ।

२८८. **यतन्ते वृथगग्नयः । ३३.२**
अग्नियाँ पृथक्-पृथक् कार्य करती हैं ।

२८९. **यदोषधीष्वप्स्वा यजत्र । १२.४८**
हे पूज्य अग्नि ! तुम्हारा तेज ओषधियों और जल में है ।

२९०. **यमग्ने पृत्सु मर्त्यमवाः । ६.२९**
हे अग्नि! तुमने युद्धों में मनुष्य की रक्षा की ।

२९१. **यास्ते अग्ने सूर्ये रुचः । १३.२२, १८.४६**
हे अग्नि! तुम्हारी कान्ति सूर्य में है।

२९२. **ये अग्नयः पाञ्चजन्याः । १८.६७**
जो अग्नियाँ पंचजनों (४ वर्ण + निषाद) से सेवित हैं ।

२९३. **रक्ष तन्वश्च वन्द्य । ३४.१३**
हे वन्दनीय अग्नि! हमारे शरीर की रक्षा करो ।

२९४. **रक्षा णो अप्रयुच्छन् । ४.१४**
हे अग्नि! प्रमादरहित होकर हमारी रक्षा करो ।

२९५. **रक्षा तोकमुत त्मना । १८.७७**
हे अग्नि! तुम स्वयं हमारे बच्चों की रक्षा करो ।

२९६. **वयं सु मन्दिषीमहि । ४.१४**
हम पूर्णतया आनन्दित हों ।

२९७. **वह्निः सन्तारणो भव । ३५.१३**
हे अग्नि! तुम हमारे तारक होओ।

२९८. **विद्मा ये अग्ने त्रेधा त्रयाणि । १२.१९**
हे अग्नि! हम तुम्हारे ३ X ३ = ९ रूपों को जानते हैं।

२९९. **विश्वस्य दूतममृतम् । १५.३२, ३३**
अग्नि संसार का अमर दूत है ।

३००. **विश्वा ओषधीरा विवेश । १८.७३**
अग्नि सभी ओषधियों में प्रविष्ट है।

३०१. **विश्वा द्वेषांसि प्र मुमुग्ध्यस्मत् । २१.३**
अग्नि सारे द्वेषभावों को हमसे दूर हटावे।

३०२. **विश्वान्यग्ने वयुनानि विद्वान् । १२.१५**
हे अग्नि! तुम हमारे सारे कर्मों को जानते हो।

३०३. **वैश्वानरमृत आ जातमग्निम् । ७.२४**
यह वैश्वानर अग्नि यज्ञ में उत्पन्न होती है ।

३०४. **वैश्वानराय त्वा । २.२५**
मैं तुझ अग्नि को सर्वजनहित के लिए रखता हूँ।

३०५. **शिवाः कृत्वा दिशः सर्वाः । १२.१७**
हे अग्नि! तुम सारी दिशाओं को पवित्र करो ।

३०६. **शिवो अग्ने संवरणे भवा नः । २७.३**
हे अग्नि! तुम हमारी उन्नति में शुभ होना।

३०७. **शिवो भवा वरूथ्यः । २५.४७**
हे रक्षक अग्नि! तुम हमारे लिए शुभ होना ।

३०८. **शिवो भूत्वा मह्यमग्ने - - - सीद शिवस्त्वम्** । १२.१७
हे अग्नि! तुम मेरे लिए शुभ होकर शुभ रूप में यहाँ रहो ।

३०९. **श्रीणामुदारो धरुणो रयीणाम्** । १२.२२
अग्नि धन का दाता और ऐश्वर्य का धारक है।

३१०. **सं त्वा विशन्त्वोषधीरुतापः** । ८.२५
तुझ समुद्रस्थ अग्नि में ओषधियाँ और जल प्रवेश करें ।

३११. **स नो दिवा स रिषस्पातु नक्तम्** । १८.७३
वह अग्नि हमें दिन-रात क्षति से बचावे।

३१२. **स नो भव शिवस्त्वम्** । १२.३१
हे अग्नि! तुम हमारे लिए शुभ होओ ।

३१३. **सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः** । १७.७९
हे अग्नि! तुम्हारी सात समिधाएँ और सात जीभ हैं ।

३१४. **सप्त धाम प्रियाणि**। १७.७९
हे अग्नि! तुम्हारे सात प्रिय धाम हैं।

३१५. **समुद्रे ते हृदयमप्स्वन्तः**। ८.२५
हे अग्नि! समुद्र में जल के अन्दर तुम्हारा हृदय है।

३१६. **समुद्रे त्वा नृमणा अप्स्वन्तर्नृचक्षा ईधे** । १२.२०
प्रजापति ने समुद्र के अन्दर जल में बाड़वाग्नि रूप में तुझे प्रदीप्त किया है ।

३१७. **स यन्ता शश्वतीरिषः** । ६.२९
अग्नि का प्रिय व्यक्ति सदा अन्न-समृद्धि पाता है।

३१८. **सह रय्या नि वर्तस्वाग्ने** । १२.१०
हे अग्नि! ऐश्वर्य के साथ हमें पुष्ट करो ।

३१९. **सुमृडीको भवतु जातवेदाः** । ३३.१६
अग्नि हमारे लिए सुखद हो ।

३२०. **सुम्नाय नूनमीमहे सखिभ्यः** । २५.४७
सुख के लिए हम मित्रों के साथ अग्नि के पास जाते हैं।

३२१. **सुशर्मणो बृहतः शर्मणि स्याम् । ११.४९**
हम सुखद महान् अग्नि की शरण में रहें ।

३२२. **स्विष्टकृत् स्विष्टमद्य करोतु नः । २८.२२**
शुभ करने वाला अग्नि आज हमारे यज्ञ को शुभ करे ।

३२३. **स्वो रुहाणा अधि नाकमुत्तमम् । १८.५१**
अग्नि के द्वारा स्वर्ग होते हुए उत्तम मोक्ष को प्राप्त करें ।

(ग) इन्द्र देवता

३२४. **अन्तस्ते द्यावापृथिवी दधामि । ७.५**
मैं तेरे अन्दर द्यावापृथिवी को रखता हूँ ।

३२५. **अभि त्वा शूर नोनुमः । ३७.३५**
हे शूर इन्द्र! हम तुम्हें प्रणाम करते हैं ।

३२६. **अवर्धन्निन्द्रं मरुतश्चिदत्र । ३३.६४**
तीव्र वायुओं ने इन्द्र को बढ़ाया।

३२७. **अशस्तिहा जनिता विश्वतूरसि । ३३.६६**
हे इन्द्र! तुम शत्रुनाशक, सुखजनक और सभी शत्रुओं के नाशक हो।

३२८. **अस्मद्र्यग् वावृधे वीर्याय - - - कर्तृभिर्भूत् । ७.३९**
यजमानों से स्तुत इन्द्र वृद्धिशील पराक्रम के लिए हमारी ओर आवे ।

३२९. **आ न इन्द्रो दूरादा न आसाद् - - - अवसे यासदुग्रः । २०.४८**
भयंकर इन्द्र दूर और समीप से हमारी रक्षा के लिए आवे।

३३०. **आयुर्दधद् यज्ञपतावविहूरुतम् । ३३.३०**
इन्द्र यज्ञकर्ता को अक्षत आयु देता है।

३३१. **आराच्चिद् द्वेषः सनुतर्युयोतु । २०.५२**
इन्द्र द्वेषभाव को दूर से ही एक ओर हटावे।

३३२. **इन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन् । १७.८६**
दिव्य प्रजा मरुत् (तीव्र वायु) इन्द्र के पीछे चले।

३३३. इन्द्रं श्रियै जनयन्नप्सु राजा । १९.९४
जल का राजा वरुण इन्द्र को श्री के लिए उत्पन्न करता है ।

३३४. इन्द्र कर्मसु नोऽवत । २०.७४
हे इन्द्र! पुरुपार्थ के कार्यों में हमारी रक्षा करो ।.

३३५. इन्द्राय त्वा षोडशिने । ८.३३
पोडशकलायुक्त इन्द्र के लिए यह आहुति है ।

३३६. इन्द्राय बृहते मरुतो ब्रह्मार्चत । ३३.९६
हे मरुतो! महान् इन्द्र के लिए मंत्रगान करो।

३३७. इन्द्रो विश्वस्य राजति । ३६.८
इन्द्र संसार का स्वामी है।

३३८. इमां ते धियं प्र भरे । ३३.२९
हे इन्द्र! मैं अपनी यह प्रार्थना तुम्हें अर्पित करता हूँ ।

३३९. इषमूर्जमन्या वक्षत् सग्धिं सपीतिमन्या । २८.१६
एक अन्न-बल देती है और दूसरी सहभोज एवं सहपान ।

३४०. इहास्माकं मघवा सूरिरस्तु । १७,२२
इन्द्र हमारा ज्ञानोपदेशक होवे।

३४१. ईशानमस्य जगतः । २७.३५
इन्द्र चर-जगत् का स्वामी है।

३४२. ईशानमिन्द्र तस्थुषः । २७.३५
इन्द्र स्थावर जगत् का स्वामी है ।

३४३. उग्रं सहोदामिह तं हुवेम । ७.३६
उग्र एवं शक्तिप्रद इन्द्र का हम आह्वान करते हैं।

३४४. उभे नि पासि जन्मनी । ८.३
हे इन्द्र! तुम हमारे दोनों जन्मों की रक्षा करते हो।

३४५. ऋषीणां च स्तुतीरुप यज्ञं च मानुषाणाम् । ८.३५
ऋषियों की स्तुति और मनुष्यों के यज्ञ में इन्द्र आता है ।

३४६. **ओजिष्ठेभिर्नृपतिर्वज्रबाहुः । २०.४८**
इन्द्र राजा, वज्रवत् बाहु-युक्त और ओजस्वी बल वाला है ।

३४७. **कदाचन प्र युच्छसि । ८.३**
हे इन्द्र! तुम कभी प्रमाद नहीं करते हो ।

३४८. **जघान वृत्रं वि दुरो ववार । २०.३६**
इन्द्र ने वृत्र को मारा और द्वारा खोला ।

३४९. **जनिष्ठा उग्रः सहसे तुराय । ३३.६४**
इन्द्र शक्ति और शीघ्रता के लिए उग्र हुआ ।

३५०. **तदिदास भुवनेषु ज्येष्ठम् । ३३.८०**
वह संसार में सर्वश्रेष्ठ हुआ।

३५१. **तमुत्सवे च प्रसवे च सासहिमिन्द्रम् । ३३.२९**
उस विजयी इन्द्र को उत्सव और जन्मादि पर स्मरण किया जाता है।

३५२. **तस्मै विशः समनमन्त पूर्वीः । १७.२४**
उस इन्द्र को प्राचीन प्रजाओं ने नमस्कार किया ।

३५३. **त्वं तूर्य तरुष्यतः । ३३.६६**
हे इन्द्र! तुम घातक शत्रुओं को नष्ट करो ।

३५४. **त्वं हि धीभिर्दयसे वि वाजान् । ३३.१८**
हे इन्द्र! तुम अपनी बुद्धि से अन्न-धन देते हो ।

३५५. **देवास्त इन्द्र सख्याय येमिरे । ३३.९५**
हे इन्द्र! देवता तुम्हारी मित्रता के लिए संयम रखते हैं।

३५६. **धियो जोष्टारमिन्द्रियम् । २८.१०**
इन्द्र बुद्धि का प्रेरक और आत्मा के लिए हितकर है ।

३५७. **न त्वावाँ अस्ति देवता विदानः । ३३.७९**
हे इन्द्र! तेरे जैसा ज्ञानी देवता कोई और नहीं है।

३५८. **नीचा यच्छ पृतन्यतः । १८.७०**
हे इन्द्र! तुम आक्रमणकारी शत्रुओं को नीचा दिखाओ।

३५९. **नेन्द्र सश्चसि दाशुषे । ३.३४, ८.२**
हे इन्द्र! तुम दाता के लिए कोई विघ्न नहीं होने देते ।

३६०. **पिबा सोमं शतक्रतो । २६.४**
हे इन्द्र! तुम सोमपान करो।

३६१. **प्रजाः पुपोष पुरुधा वि राजति । ३३.३०**
इन्द्र ने प्रजा का पालन किया और वह अनेक रूप में विराजमान है।

३६२. **प्र मायिनाममिनाद् वर्पणीतिः । ३३.२६**
अनेक रूपधारी इन्द्र ने मायावियों को नष्ट किया।

३६३. **बाधतां द्वेषो अभयं कृणोतु । २०.५१**
इन्द्र शत्रु को रोके और निर्भय करे।

३६४. **बृहदिन्द्राय गायत । २०.३०**
इन्द्र के लिए सामगान करो।

३६५. **भूय इन्नु ते दानम् । ३.३४**
हे इन्द्र! तुम्हारा दान महान् है।

३६६. **मयि गृह्णामि त्वामहम् । २०.३२**
परमात्म-रूप तुमको मैं अपने हृदय में रखता हूँ ।

३६७. **मयीदमिन्द्र इन्द्रियं दधातु । २.१०**
हे इन्द्र! मेरे अन्दर शक्ति दो ।

३६८. **मरुतां त्वौजसे । ७.३६**
हे इन्द्र! तुम मरुत् देवों के ओज हो ।

३६९. **महाँ अभिष्टिरोजसा । ३३.२५**
हे इन्द्र! तुम अपनी शक्ति से महान् सहायक हो ।

३७०. **य ईशे महतो महान् । २०.३२**
वह महान् परमात्मा महत् तत्त्व आदि तत्त्वों का स्वामी है

३७१. **यास्यायं विश्व आर्यो दासः । ३३.८२**
उस इन्द्र के लिए सभी आर्य सेवकत... ह ।

...ुल्य रक्षणीय हैं ।

३७२. यावती द्यावापृथिवी - - - तावन्तमिन्द्र ते ग्रहम् । ३८.२६
जहाँ तक द्यावापृथिवी है, वहाँ तक तेरा अधिकार है ।

३७३. येन ज्योतिरजनयन् ऋतावृधः । २०.३०
सत्यवादी देवों ने इन्द्र के द्वारा ज्योति उत्पन्न की ।

३७४. यो अस्माँ अभिदासत्यधरं गमया तमः । १८.७०
जो हमें हराना चाहता है, उसे घोर अन्धकार में डालो।

३७५. वार्त्रहत्याय शवसे ··· इन्द्र त्वावर्तयामसि । १८.६८
वृत्र-नाशनरूपी पराक्रम के लिए हे इन्द्र! तुम्हें हम पास बुलाते हैं।

३७६. वि शत्रून् ताढि वि मृधो नुदस्व । १८.७१
शत्रुओं को मारो और आक्रमणकारियों को दूर भगावो ।

३७७. विश्वास्ते स्पृधः श्नथयन्त मन्यवे । ३३.६७
सारे प्रतिस्पर्धी शत्रु तेरे क्रोध के आगे शिथिल हो जाते हैं।

३७८. वृत्रं यदिन्द्र तूर्वसि । ३३.६७
हे इन्द्र! तुम वृत्र को मारते हो ।

३७९. सद्यो जज्ञानो नि रिणाति शत्रून् । ३३.८०
इन्द्र उत्पन्न होते ही शत्रुओं को नष्ट करता है।

३८०. समिन्द्र णो मनसा नेषि गोभिः । ८.१५
हे इन्द्र! तुम हमें मन और ज्ञानेन्द्रियों से युक्त करते हो ।

३८१. सर्वं तदिन्द्र ते वशे । ३३.३५
हे इन्द्र! सारा संसार तेरे वश में है।

३८२. सुदुघे पयसेन्द्रमवर्धताम् । २८.१६
दूध देने वाली दोनों देवियों ने दूध से इन्द्र को बड़ा किया ।

३८३. सुमृडीको भवतु विश्ववेदाः । २०.५१
सर्वज्ञ इन्द्र हमारे लिए सुखकर हो ।

३८४. स्वदाति यज्ञं मधुना घृतेन । २८.१०
इन्द्र यज्ञ को मधु और घृत से स्वादिष्ट बनाता है।

३८५. स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः । २०.५०
धनवान् इन्द्र हमारा कल्याण करे ।

३८६. हवामहे सखाय इन्द्रमूतये । ११.१४
हम मित्रगण सुरक्षा के लिए इन्द्र को पुकारते हैं।

३८७. हूवयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रम् । २०.५०
मैं शक्तिशाली एवं बहुत प्रार्थित इन्द्र को बुलाता हूँ ।

(घ) इन्द्राग्नी

३८८. इन्द्राग्नी पुष्टिवर्धना । २१.२०
इन्द्र और अग्निदेव पुष्टिवर्धक हैं ।

३८९. उभा दाताराविषां रयीणाम् । ३.१३
दोनों अन्न और धन के दाता हैं ।

(ङ) देव

३९०. अनाधृष्यं देवानामोजः । ५.५
देवों का तेज अधृष्य है ।

३९१. अर्वाञ्चो अद्या भवता यजत्रा । ३३.५१
पूजनीय देव आज हमारे अनुकूल हों।

३९२. एतदन्नमत्त देवाः । २३.८
हे देवो! इस अन्न को खाइए ।

३९३. तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे । ३३.१७
हम आज देवों की उस सुरक्षा को चाहते हैं।

३९४. तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः । ९.१८
हे देवो! तुम तृप्त होकर देवयान मार्ग से जाओ।

३९५. ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम् । ७.१९
वे देवगण इस यज्ञ को स्वीकार करें ।

३९६. दक्षक्रतवस्ते नोऽवन्तु ते नः पान्तु । ४.११
ज्ञान और बल वाले वे देवगण हमारी रक्षा करें और हमें बचावें ।

३९७. **देवं-देवं हुवेम वाजसातये । ३३.९१**
बलप्राप्ति के लिए हम प्रत्येक देव का आह्वान करते हैं ।

३९८. **देवाः शर्धः प्र यन्त । ३३.४८**
देवगण हमें शक्ति दें।

३९९. **देवा अमृता मादयन्ताम् । २०.४६**
अमर देवगण प्रसन्न रहें ।

४००. **देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे । २५.१५**
देवगण दीर्घ जीवन के लिए हमारी आयु बढ़ावें ।

४०१. **देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम् । २५.१५**
सरल देवों की सुखद सुमति हमें प्राप्त हो ।

४०२. **देवानां सख्यमुपसेदिमा वयम् । २५.१५**
हम देवों की मित्रता प्राप्त करें ।

४०३. **देवानामुत्क्रमणमसि । ७.२६**
हे सोम! तुम देवों के उद्धारक हो ।

४०४. **देवानामुत्तमं यशः । २८.३०**
देवों का यश उत्तम है ।

४०५. **देवा यज्ञमतन्वत । १९.१२**
देवों ने यज्ञ का विस्तार किया ।

४०६. **देवेभ्यस्त्वा मरीचिपेभ्यः । ७.३**
सूर्य की किरणों का पान करने वाले देवों के लिए तुझे देता हूँ।

४०७. **देवो देवान् पाहि । ३७.१८**
हे अग्नि देव ! तुम देवों की रक्षा करो ।

४०८. **यज्ञं प्रावन्तु नः शुभे । १८.७६**
देवगण शुभ के लिए हमारे यज्ञ की रक्षा करें।

४०९. **यत्र देवानाम् आज्यपानां प्रिया धामानि । २१.४६**
जहाँ घृतपायी देवों के शुभ स्थान हैं, वहाँ यज्ञ करो ।

४१०. **ये देवा देवेष्वधि देवत्वमायन्** । १७.१४
प्राण देवों में भी श्रेष्ठ देव हैं ।

४११. **ये देवा मनोजाता मनोयुजः** । ४.११
मन से उत्पन्न और मन के प्रेरक देवगण हमारी रक्षा करें ।

४१२. **ये देवासो दिव्येकादश स्थ** । ७.१९
द्युलोक में रहने वाले ११ देवता इस यज्ञ को स्वीकार करें ।

४१३. **विश्वं तद् भद्रं यदवन्ति देवाः** । ३४.५८
देवगण जिस प्रकार रक्षा करते हैं, वह सर्वथा शुभ है।

४१४. **विश्वे देवा अमर्त्याः** । २१.१७
सारे देवता अमर हैं ।

४१५. **विश्वे देवास इह मादयन्ताम्** । २.१३
सारे देवता यहाँ आनन्दित रहें ।

४१६. **विश्वे नो देवा अवसागमन्निह** । २५.२०
सारे देवता हमारी रक्षा के लिए आवें ।

४१७. **सचेतसो विश्वे देवाः** । १८.७६
सारे देवता चेतन हैं ।

४१८. **सुक्रतवः शुचयो धियन्धाः - - - देवाः** । २९.२७
देवता शक्तिशाली पवित्र और बुद्धिमान् हैं ।

४१९. **स्वदन्तु हव्यं मधुना घृतेन** । २९.३५
देवता हव्य को मधु और घी से स्वादिष्ट बनावें ।

(च) विश्वेदेव

४२०. **आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्वम्** । ३३.५३
सारे देव इस यज्ञ में बैठकर आनन्दित हों ।

४२१. **विश्वे देवास आ गत** । ७.३३
सारे देव यहाँ आवें ।

४२२. **विश्वे नो देवा अवसाऽऽगमन्तु । १८.३१**
सारे देव हमारी सहायता के लिए यहाँ आवें।

४२३. **शृणुता म इमं हवम् । ७.३४**
सारे देव हमारी प्रार्थना सुनें।

(छ) अदिति

४२४. **अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् । २५.२३**
उत्पन्न संसार और भावी संसार सब अदिति (ब्रह्म) ही है ।

४२५. **अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षम् । २५.२३**
अदिति ही द्युलोक है और अदिति ही अन्तरिक्ष है।

४२६. **अदितिर्माता स पिता स पुत्रः । २५.२३**
अदिति ही माता, पिता और पुत्र है ।

४२७. **महीमू षु मातरं सुव्रतानाम् । २१.५**
अदिति सत्कर्मों की महान् जननी है ।

४२८. **विश्वे देवा अदितिः पञ्च जनाः । २५.२३**
सारे देव और सारे पंच जन अदिति के रूप हैं।

४२९. **सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम् । २१.६**
अदिति सुखद और शुभ मार्गदर्शक है ।

४३०. **स्योनं कृण्वाना सुविते दधातु । २९.४**
अदिति सुख देते हुए हमें सन्मार्ग पर लगावे ।

(ज) अश्विनौ

४३१. **अधातामश्विना मधु भेषजम् । २०.५७**
अश्विनी ने मधु को भेषज (दवा) के रूप में रखा ।

४३२. **अप्नस्वतीमश्विना वाचमस्मे कृतम् । ३४.२९**
अश्विनी हमें सक्रिय वाणी दें।

४३३. **अश्विनाविषं समूर्जं सं रयिं दधुः । २०.५८**
अश्विनी ने हमें अन्न, बल और ऐश्वर्य दिया।

४३४. आभार्ष्टां वसु वार्याणि यजमानाय । २८.१७
अश्विनी ने यजमान को श्रेष्ठ धन दिया।

४३५. उभा नः शर्म यच्छतम् । ३४.२८
दोनों अश्विनी हमें सुख दें।

४३६. तनूपा भिषजा सुतेऽश्विनोभा । २०.५६
दोनों अश्विनी शरीर-रक्षक और वैद्य हैं।

४३७. देवा - - - देवमिन्द्रमवर्धताम् । २८.१७
अश्विनी देवों ने इन्द्र देव को पुष्ट किया।

४३८. प्रायुस्तारिष्टं नी रपांसि मृक्षतम् । ३४.४७
अश्विनी हमारी आयु बढ़ावें और पापों को दूर करें ।

४३९. मा नो मर्धिष्टमा गतम् । ३३.८८
अश्विनी हमारी उपेक्षा न करें और आवें ।

४४०. वृधे च नो भवतं वाजसातौ । ३४.२९
अश्विनी धनोपलब्धि में हमारी वृद्धि के लिए हों ।

४४१. सेधतं द्वेषो भवतं सचाभुवा । ३४.४७
अश्विनी द्वेषभाव दूर करें और साथ रहें ।

(झ) वरुण

४४२. अपदे पादा प्रतिधातवेऽकः । ८.२३
वरुण ने सूर्य के लिए अन्तरिक्ष में पैर रखने की व्यवस्था की ।

४४३. अभिष्ठितो वरुणस्य पाशः । ८.२३
वरुण का पाश सर्वत्र फैला है ।

४४४. इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय । २१.१
हे वरुण ! मेरी इस प्रार्थना को सुनो और आज हमें सुख दो ।

४४५. उरुं हि राजा वरुणश्चकार
सूर्याय पन्थामन्वेतवा उ । ८.२३
राजा वरुण ने सूर्य के चलने के लिए विशाल मार्ग बनाया है ।

४४६. त्वामवस्युरा चके । २१.१
हे वरुण! रक्षा का इच्छुक मैं तुम्हें चाहता हूँ ।

४४७. निषसाद धृतव्रतों वरुणः पस्त्यास्वा । २०.२
व्रती वरुण प्रजाओं में अधिष्ठित हुआ ।

४४८. परो मर्तः परः श्वा । २२.५
निरस्कृत मनुष्य निरस्कृत कुत्ते के तुल्य होता है ।

४४९. पस्त्यासु चक्रे वरुणः सधस्थम् । १०.७
वरुण ने प्रजाओं में अपना स्थान बनाया।

४५०. मा न आयुः प्र मोषीः २१.२
हे वरुण! हमारी आयु नष्ट न करो ।

४५१. वरुणं भेषजं कविम् । २८.३४
वरुण देव वैद्य और क्रान्तदर्शी है ।

४५२. वरुणः प्राविता भुवत् । ३३.४६
वरुण हमारा रक्षक हो ।

४५३. समुद्रे ते हृदयमप्स्वन्तः । ८.२५, २०.१९
हे वरुण! तेरा हृदय समुद्र में जल के अन्दर है ।

४५४. सविता - - - वरुणो धर्मपतीनाम् । ९.३९
वरुण धर्माचरण करने वालों का प्रेरक है।

४५५. साम्राज्याय सुक्रतुः । २०.२
वरुण साम्राज्य के लिए समर्थ है ।

(ञ) विष्णु

४५६. इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । ५.१५
विष्णु ने पराक्रम किया और तीन प्रकार से पैर रखे।

४५७. जागृवांसः समिन्धते, विष्णोर्यत् परमं पदम् । ३४.४४
विष्णु के परम पद को जागरूक व्यक्ति ही हृदय में दीप्त करते हैं।

४५८. **तद् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः ।** ६.५
विष्णु के परम पद को विद्वान् ही सदा देख पाते हैं।

४५९. **त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुर्गोपाः ।** ३४.४३
इन्द्रियों के रक्षक विष्णु ने तीन पैर रखकर पराक्रम किया ।

४६०. **प्र तद् विष्णुः स्तवते वीर्येण ।** ५.२०
विष्णु की अपने पराक्रम के लिए स्तुति की जाती है ।

४६१. **यतो व्रतानि पस्पशे ।** १३.३३
वह मनुष्य के कर्मों को देखता है ।

४६२. **विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः ।** ५.१८
विशाल गति वाला विष्णु तीन प्रकार से प्रयत्न करता है।

४६३. **विष्णोः कर्माणि पश्यत ।** ६.४, १३.३३
विष्णु के कार्यों को देखो।

४६४. **विष्णोः परमं पदमव भाति भूरि ।** ६.३
विष्णु का परम पद बहुत अधिक प्रकाशमान है ।

४६५. **विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्र वोचम् ।** ५.१८
मैं विष्णु के पराक्रमों का वर्णन करता हूँ ।

४६६. **वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ।** ५.२१
तुम विष्णु से संबद्ध हो । विष्णु के लिए तुम्हें अपनाता हूँ ।

४६७. **वैष्णमसि वैष्णवा स्थ ।** ५.२५
तुम विष्णु से संबद्ध हो । तुम विष्णु के लिए हो ।

(ट) सूर्य

४६८. **अग्निर्देवता, वातो देवता, सूर्यो देवता ।** १४.२०
अग्नि, वायु और सूर्य, ये देवता हैं ।

४६९. **अद्धा देव महाँ असि ।** ३३.३९
हे देव सूर्य ! तुम वस्तुतः महान् हो ।

४७०. **आदित्यासो भवता मृडयन्तः । ८.४, ३३.६८**
सभी सूर्य हमारे लिए सुखकारी हों ।

४७१. **आदिद् दामानं सवितर्व्यूर्णुषेऽनूचीना जीविता मानुषेभ्यः । ३३.५४**
हे सूर्य! तुम दाता को प्रकाशित करते हो और मनुष्यों को नव जीवन देते हो।

४७२. **आपप्रिवान् रोदसी अन्तरिक्षम् । १७.५९**
सूर्य ने द्यावापृथिवी और अन्तरिक्ष को प्रकाश से पूर्ण किया।

४७३. **आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षम् । ७.४२**
सूर्य द्यावापृथिवी और अन्तरिक्ष में व्याप्त हुआ।

४७४. **गन्धर्वाः सप्तविंशतिः । ९.७**
गन्धर्व (पृथिवी के धारकतत्त्व) २७ हैं ।

४७५. **ज्योतिष्कृदसि सूर्य । ३३.३६**
हे सूर्य! तुम प्रकाश करने वाले हो ।

४७६. **तत् सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वम् । ३३.३७**
यह सूर्य का देवत्व और महत्त्व है।

४७७. **देवं वहन्ति केतवः । ७.४१**
सूर्य देव को उसके केतु (ध्वज, चिह्न) फैलाते हैं ।

४७८. **देवो याति भुवनानि पश्यन् । ३३.४३, ३४.३१**
सूर्य देव संसार को देखता हुआ जाता है ।

४७९. **बट् सूर्य श्रवसा महाँ असि । ३३.४०**
हे सूर्य! तुम अपने यश से वस्तुतः महान् हो ।

४८०. **बडादित्य महाँ असि । ३३.३९**
हे सूर्य! तुम वस्तुतः महान् हो।

४८१. **महस्ते सतो महिमा पनस्यते । ३३.३९**
हे सूर्य! तुझ महान् की महिमा की स्तुति की जाती है ।

४८२. मह्ना देवानामसुर्यः पुरोहितः । ३३.४०
हे सूर्य ! तुम अपनी महत्ता से देवों के शक्तिशाली पुरोहित हो ।

४८३. यज्ञियेभ्योऽमृतत्वं सुवसि भागमुत्तमम् । ३३.५४
हे सूर्य ! तुम पूज्य देवों को अमरत्वरूप उत्तम भाग देते हो ।

४८४. विश्वमा भासि रोचनम् । ३३.३६
हे सूर्य ! तुम सभी प्रकाशमान वस्तुओं को प्रकाशित करते हो ।

४८५. विश्वरूपो अमृतानि तस्थौ । ३३.२२
सूर्य नाना रूप वाला है । वह अमरत्व में स्थित है ।

४८६. विश्वानरः सविता देव एतु । ३३.३४
सर्वजनहितकारी सूर्य देवता यहाँ आवे ।

४८७. शृणोतु देवः सविता हवं मे । ६.२६
सूर्य देवता हमारी प्रार्थना सुने ।

४८८. श्रियो वसानश्चरति स्वरोचिः । ३३.२२
श्री को धारण करता हुआ सूर्य स्वयं प्रकाशमान होकर विचरण करता है ।

४८९. श्रेष्ठे स्याम सवितुः सवीमनि । ३३.१७
हम सूर्य की श्रेष्ठ प्रेरणा में रहें।

४९०. संपश्यन् विश्वा भुवनानि गोपाः । १७.५८
वह जगत् का रक्षक सूर्य सारे लोकों को देखता हुआ जाता है।

४९१. सविता ज्योतिरुदयाँ अजस्रम् । १७.५८
ज्योतिर्मय सूर्य सदा उदय होता है।

४९२. सुवाति सविता भगः । ३३.२०
ऐश्वर्ययुक्त सूर्य सबको प्रेरणा देता है ।

४९३. सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च। ७.४२
सूर्य चर और अचर की आत्मा है।

४९४. सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् । ३५.१४
हम उत्तम ज्योतिर्मय सूर्य (परमात्मा) को प्राप्त करें ।

४९५. **सूर्याय त्वा भ्राजाय । ८.४०**
तेजोमय सूर्य के लिए नमस्कार ।

४९६. **हुवे विष्णुं सवितारमूतये । ३३.४९**
मैं सुरक्षा के लिए विष्णु और सविता का आहवान करता हूँ ।

(ट) सोम

४९७. **अमृतः सोम इन्दुः । १९.९५**
मैंने अमृतरूपी चन्द्रमा और सोम को दुहा ।

४९८. **इष ऊर्जे पवते । ७.२१**
सोम देवता अन्न और बल के लिए मनुष्य को पवित्र करता है ।

४९९. **एष ते योनिर्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः । ७.२१**
यह तुम्हारा स्थान है । सभी देवों के लिए हम तुम्हें अपनाते हैं ।

५००. **गायता नरः पवमानायेन्दवे । ३३.६२**
हे मनुष्यो! इस पवित्रकर्ता सोम के लिए मन्त्रगान करो ।

५०१. **चन्द्रेग ज्योतिरमृतं दधानाः । १९.९३**
देव चन्द्रमा के द्वारा ज्योति और अमृत प्राप्त करते हैं ।

५०२. **त्वं ज्योतिषा वि तमो ववर्थ। ३४.२२**
हे चन्द्र! तुमने प्रकाश से अन्धकार को नष्ट किया।

५०३. **त्वं रजिष्ठमनु नेषि पन्थाम् । १९.५२**
हे सोम! तुम लोगों को अतिसरल मार्ग से ले जाते हो ।

५०४. **त्वमपो अजनयस्त्वं गाः । ३४.२२**
हे सोम! तुमने जल और पृथिवी को उत्पन्न किया।

५०५. **त्वमा ततन्थोर्वन्तरिक्षम् । ३४.२२**
हे सोम! तुमने विशाल अन्तरिक्ष को फैलाया है ।

५०६. **त्वमिमा ओषधीः सोम विश्वाः । ३४.२२**
हे सोम! तुमने इन सभी ओषधियों को उत्पन्न किया है।

५०७. देव सोमैष ते लोकः । ८.२६
हे देव सोम ! यह तुम्हारा लोक है ।

५०८. ध्रुवं ध्रुवेण मनसा वाचा सोममव नयामि । ७.२५
ध्रुव सोम को मैं स्थिर मन और वाणी से अनुकूल बनाता हूँ ।

५०९. नमस्ते अस्तु मा मा हिंसीः । १८.५३
हे सोम! तुम्हें नमस्ते है । तुम मुझे हानि न पहुँचाना ।

५१०. प्र चरा सोम दुर्यान् । ४.३७
हे सोम! तुम हमारे घरों में आवो ।

५११. मघवन् पाहि सोमम् । ७.४
हे इन्द्र! तुम सोमरस की रक्षा करना ।

५१२. श्येनाय त्वा सोमभृते । ६.३२
सोमरस लाने वाले श्येनपक्षी रूपी गायत्री के लिए हम तुझे रखते हैं।

५१३. सुभूताय पवते । ७.२१
सोम समृद्धि के लिए पवित्र करता है ।

५१४. सोमं पिब । ८.१०
सोमपान करो ।

५१५. सोमं राजानमिह भक्षयामि । १९.३४
मैं राजा सोम के रस का पान करता हूँ ।

५१६. सोमः पवते । ७.२१
सोम पवित्र करता है।

५१७. सोमः पवतेऽस्मै ब्रह्मणेऽस्मै क्षत्राय । ७.२१
सोम ब्रह्मशक्ति और क्षत्र-शक्ति के लिए पवित्र करता है ।

५१८. सोमाग्नेः प्रियं पाथोऽपीहि । ८.५०
हे सोम! तुम अग्नि के प्रिय अन्न के पास जाओ।

५१९. सोमो देवो अमर्त्यः । २१.१४
सोम देवता अमर है ।

५२०. सोमो य उत्तमं हविः । १९.२
सोमरस उत्तम हवि है ।

(ड) रुद्र

५२१. असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधि भूम्याम् । १६.५४
पृथिवी पर अगणित सहस्रों रुद्र हैं ।

५२२. अस्मिन् महत्यर्णवेऽन्तरिक्षे भवा अधि । १६.५५
इस महान् जलयुक्त अन्तरिक्ष में रुद्र है ।

५२३. त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् । ३.६०
सुगन्धित पुष्टिवर्धक त्र्यम्बक (रुद्र) के लिए यज्ञ करते हैं ।

५२४. दिवं रुद्रा उपश्रिताः । १६.५६
रुद्र द्युलोक में हैं ।

५२५. नमः शंभवाय च मयोभवाय च । १६.४१
लौकिक सुख और मोक्षसुख के दाता रुद्र को नमस्कार ।

५२६. नमः शिवाय च शिवतराय च । १६.४१
शान्त और शान्ततर रूप वाले रुद्र को नमस्कार ।

५२७. नमस्ते रुद्र मन्यवे ।१६.१
हे रुद्र ! तुम्हारे क्रोध के लिए नमस्ते ।

५२८. नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे । १६.८
नीलकंठ सहस्राक्ष एवं उदार रुद्र को नमस्ते ।

५२९. नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि । १६.६४
द्युलोक में रहने वाले रुद्रों को नमस्ते ।

५३०. नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे । १६.६५
अन्तरिक्ष में रहने वाले रुद्रों को नमस्ते ।

५३१. नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्याम् । १६.६६
पृथिवी पर रहने वाले रुद्रों को नमस्ते ।

५३२. **नमो हरिकेशायोपवीतिने । १६.१७**
भूरे बालों वाले, यज्ञोपवीत-धारी रुद्र को नमस्ते ।

५३३. **मा हिंसीः पुरुषं जगत् । १६.३**
हे रुद्र! तुम मनुष्यों और संसार को हानि न पहुँचाओ ।

५३४. **ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः । १६.६१**
जो आयुधधारी और खड्गधारी रुद्र तीर्थों में घूमते हैं, उन्हें नमस्ते ।

५३५. **या ते रुद्र शिवा तनूः । १६.२**
हे रुद्र! तुम्हारा जो शुभ शरीर है, उससे हमें देखो ।

५३६. **शर्वा अधः क्षमाचराः । १६.५७**
रुद्र नीचे पृथिवी पर हैं ।

५३७. **शिवो नामासि । ३.६३**
तुम्हारा नाम शिव (सुखकर) है।

५३८. **स दृष्टो मृडयाति नः । १६.७**
देखा गया रुद्र हमें सुख दे ।

(ढ) पितरः

५३९. **अक्षन् पितरः । १९.३६**
पितृगण ने खाना खा लिया ।

५४०. **अतीतृपन्त पितरः । १९.३६**
पितृगण तृप्त हो गए।

५४१. **अत्र पितरो मादयध्वम् । २.३१**
पितृगण यहाँ आनन्दित रहें ।

५४२. **अत्र रिप्तं रसिनः सुतस्य । १९.३५**
पितृगण रसयुक्त सोमरस से लिप्त अन्न को खावें ।

५४३. **अथा नः शंयोररपो दधात । १९.५५**
पितृगण निष्पाप कुशल-क्षेम हमें दें ।

५४४. **अथा रयिं सर्ववीरं दधातन । १९.५९**
पितृगण हमें वीरता से युक्त ऐश्वर्य दें ।

५४५. **अधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान् । १९.५७**
पितृगण हमें उपदेश दें और हमारी रक्षा करें ।

५४६. **अमीमदन्त पितरः । २.३१, १९.३६**
पितृगण प्रसन्न हुए।

५४७. **अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तः । १९.५८**
पितृगण इस यज्ञ में अन्न से प्रसन्न हों ।

५४८. **आ यन्तु नः पितरः सोम्यासः । १९.५८**
हमारे सोम्य पितृगण यहाँ आवें ।

५४९. **आ वह पितॄन् हविषे अत्तवे । १९.७०**
हे अग्नि! तुम पितृगण को हव्य खाने के लिए लावो।

५५०. **आहं पितॄन् सुविदत्राँ अवित्सि । १९.५६**
मैं उदार दानी पितृगण को जानता हूँ।

५५१. **इदं पितृभ्यो नमो अस्तु । १९.६८**
पितृगण को यह नमस्कार है।

५५२. **त आ गमन्तु त इह श्रुवन्तु । १९.५७**
वे पितृगण यहाँ आवें और हमारी बात सुनें ।

५५३. **तर्पयत मे पितॄन् । २.३४**
हे जल! तुम हमारे पितृगण को तृप्त करो ।

५५४. **ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु । १९.४९**
वे पितृगण आह्वान करने पर हमारी रक्षा करें ।

५५५. **नमो वः पितरो जीवाय । २.३२**
हे पितृगण! तुम्हें जीवनशक्ति के लिए नमस्ते है ।

५५६. **नमो वः पितरः स्वधायै । २.३२**
हे पितृगण! तुम्हें अन्न के लिए नमस्ते है ।

५५७. नमो वः पितरो रसाय । २.३२
हे पितृगण! तुम्हें रसयुक्त पदार्थों के लिए नमस्कार है ।

५५८. पितरः शुन्धध्वम् । १९.३६
हे पितृगण! तुम शुद्ध होओ।

५५९. पुनन्तु प्रपितामहाः पवित्रेण शतायुषा । १९.३७
प्रपितामह हमें पवित्र शतायु से पवित्र करें ।

५६०. पुनन्तु मा पितरः सोम्यासः । १९.३७
सोम्य पितृगण मुझे पवित्र करें ।

५६१. पुनन्तु मा पितामहाः । १९.३७
मुझे पितामह पवित्र करें ।

५६२. मा हिंसिष्ट पितरः केन चिन्नः । १९.६२
हे पितृगण! आप मुझे किसी भी कारण से हानि न पहुँचावें।

५६३. यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम । १९.५०
हम पूज्य पितृगण के सौमनस्य में रहें ।

५६४. यद् व आगः पुरुषता कराम । १९.६२
हे पितृगण! हमारा जो भी अपराध है, वह मानवीय स्खलन है, क्षमा करें।

५६५. ये पार्थिवे रजस्या निषत्ताः । १९.६८
जो पितृगण पृथिवी-लोक में रहते हैं, उन्हें नमस्कार है ।

५६६. रयिं धत्त दाशुषे मर्त्याय । १९.६३
हे पितृगण! दानी मनुष्य को ऐश्वर्य दो !

५६७. वस्वः प्र यच्छत । १९.६३
हे पितृगण! हमें धन दो।

५६८. विश्वा यदजय स्पृधः । १९.७१
हे इन्द्र! तुमने सभी शत्रुओं को जीता ।

(ण) पूषन्

५६९. धियं-धियं सीषधाति प्र पूषा । ३४.४२
पूषा देव प्रत्येक प्रार्थना को सिद्ध करता है।

५७०. पूषन् तव व्रते वयं न रिष्येम कदाचन । ३४.४१
हे पूषा! तेरे आदेश में रहते हुए हम कभी दुःखित न हों ।

(त) प्रजापति

५७१. त्रीणि ज्योतींषि सचते स षोडशी । ८.३६
वह प्रजापति अग्नि-वायु-सूर्यरूपी तीनों ज्योतियों को शक्ति देता है।

५७२. य आविवेश भुवनानि विश्वा । ८.३६
वह प्रजापति सारे लोकों में व्याप्त है ।

५७३. यस्मान्न जातः परो अन्यो अस्ति । ८.३६
उस प्रजापति से बढ़कर अन्य कोई नहीं हुआ है ।

(थ) बृहस्पति

५७४. स नो विश्वानि हवनानि जोषत् । ८.४५
बृहस्पति हमारी सारी प्रार्थनाओं को स्वीकार करे ।

५७५. स प्रथमो बृहस्पतिश्चिकित्वान् । ७.१५
वह बृहस्पति सर्वप्रथम विद्वान् है ।

(द) मरुत्

५७६. मामु देवताः सचन्ताम् । १३.१
मुझे देवता बढ़ावें।

५७७. मारुतोऽसि मरुतां गणः शंभूर्मयोभूरभि मा वाहि । १८.४५
तुम वायु हो, मरुत्गण हो, मेरे लिए शुभ एवं सुखद बहो।

(ध) मित्र

५७८. नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे । ४.३५
मित्र और वरुण के तेज को नमस्कार ।

५७९. **मित्रो विश्वाभिरूतिभिः । ३३.४६**
मित्र सभी सुरक्षाओं से हमारी रक्षा करे ।

(न) विश्वकर्मा

५८०. **विश्वकर्मा - - धाता विधाता परमोत सन्दृक् । १७.२६**
विश्वकर्मा कर्ता , विधाता और जीवों का परम द्रष्टा है।

५८१. **विश्वकर्मा ह्यजनिष्ट देवः । १७.३२**
विश्वकर्मा देव सर्वप्रथम उत्पन्न हुआ।

(प) वैश्वानर

५८२. **अवृधन् अमृता अमर्त्यं वैश्वानरं ··· देवाः । ३३.६०**
अमर देवों ने अमर वैश्वानर अग्नि को बढ़ाया ।

५८३. **राजा हि कं भुवनानामभिश्रीः । २६.७**
वैश्वानर अग्नि वस्तुतः राजा है । वह लोकों को शोभा देता है।

५८४. **वैश्वानरस्य सुमतौ स्याम । २६.७**
हम वैश्वानर अग्नि की कृपादृष्टि में रहें।

५८५. **वैश्वानरो न ऊतये आ प्र यातु । २६.८**
वैश्वानर अग्नि हमारी रक्षा के लिए आवे ।

५८६. **वैश्वानरो यतते सूर्येण । २६.७**
वैश्वानर अग्नि सूर्य से स्पर्धा करता है ।

(फ) सरस्वती

५८७. **चोदयित्री सूनृतानां चेतन्ती सुमतीनाम् । २०.८५**
सरस्वती सत्य को प्रेरणा देती है और सुमति को प्रवुद्ध करती है ।

५८८. **तनूपाश्च सरस्वती । २१.१३**
सरस्वती शरीर की रक्षक है ।

५८९. **दुहे कामान् सरस्वती । २०.६०**
सरस्वती मनोरथों को पूर्ण करती है ।

५९०. **दुहे धेनुः सरस्वती सोमं शुक्रमिहेन्द्रियम् । २०.५५**
सरस्वती कामधेनु के तुल्य शील, बल और पराक्रम देती है ।

५९१. **धियो विश्वा वि राजति । २०.८६**
सरस्वती सभी प्राणियों की बुद्धि को प्रकाशित करती है ।

५९२. **पावकाः नः सरस्वती । २०.८४**
सरस्वती हमें पवित्र करती है ।

५९३. **भेषजं नः सरस्वती । २०.६४**
सरस्वती हमारे लिए ओषधि-रूप है ।

५९४. **मधु दुहे धेनुः सरस्वती । २०.६५**
सरस्वती कामधेनु के तुल्य मधुर पदार्थ देती है ।

५९५. **महो अर्णः सरस्वती प्र चेतयति केतुना ।२०.८६**
सरस्वती महासमुद्र है । वह ज्ञान के द्वारा प्रबुद्ध करती है ।

५९६. **यस्ते स्तनः शशयो यो मयोभूः । ३८.५**
सरस्वती का दूध अक्षय और सुखकर है ।

५९७. **येन विश्वा पुष्यसि वार्याणि । ३८.५**
सरस्वती अपने ज्ञान से सभी श्रेष्ठ पदार्थों को पुष्ट करती है ।

५९८. **यो रत्नधा वसुविद्यः सुदत्रः । ३८.५**
सरस्वती रत्नधारक, धनवान् और श्रेष्ठ दानी है ।

५९९. **सरस्वति तमिह धातवेऽकः । ३८.५**
हे सरस्वती! अपना स्तन पीने के लिए दो ।

६००. **सरस्वती त्वा मघवन् अभिष्णक् । १०.३४**
हे इन्द्र! सरस्वती ने तेरी सेवा की।

६०१. **सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् । २५.१६**
सौभाग्यवती सरस्वती हमारा कल्याण करे ।

६०२. **सरस्वत्यै पावकायै स्वाहा । २२.२०**
पवित्र करने वाली सरस्वती के लिए हम आहुति देते हैं।

६०३. **सरस्वत्यै यशोभगिन्यै स्वाहा** । २.२०
यशस्विनी सरस्वती के लिए हम आहुति देते हैं।

६०४. **सा सुदुघा सरस्वती** । २०.७५
वह सरस्वती बहुत दूध देने वाली है ।

(ब) देव्यः

६०५. **तिस्र इडा सरस्वती भारती** । २१.१९
इडा, सरस्वती और भारती, ये तीन देवियाँ हैं ।

६०६. **तिस्रो देवीः पतिमिन्द्रमवर्धयन्** । २८.१८
तीनों देवियों ने अपने पति इन्द्र को बढ़ाया ।

६०७. **प्र वाग्देवी ददातु नः** । ९.२९
वाग्देवी सरस्वती हमें धन दे ।

(भ) उषस्

६०८. **अश्वावतीर्गोमतीर्न उषासः** । ३४.४०
उषा हमारे लिए अश्व और गायों से युक्त हो ।

६०९. **घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीताः** । ३४.४०
सर्वथा परिपुष्ट उषा हमें घृत दे ।

६१०. **वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः** । ३४.४०
वीर जनों से युक्त, शुभ उषा सदा चमकें ।

६११. **यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः** । ३४.४०
उषा सदा अपने कल्याण से हमारी रक्षा करें ।

(म) द्यावापृथिवी

६१२. **अद्वेषे द्यावापृथिवी हुवेम** । १२.२९
द्वेषरहित द्यावापृथिवी का हम आह्वान करते हैं।

६१३. **आ मा गन्तां पितरा मातरा च** । ९.१९
पिता-माता के तुल्य द्यावापृथिवी मुझे प्राप्त हों ।

६१४. एमे द्यावापृथिवी विश्वरूपे । ९.१९
ये द्यावापृथिवी नाना रूपों वाले हैं ।

६१५. द्यावापृथिवी विश्वशंभुवौ। १०.९
द्यावापृथिवी संसार का कल्याण करने वाले हैं।

६१६. धेनू सुदुघे मातरा मही । २८.६
रात्रि और उषा बहुत दूध देनेवाली कामधेनु हैं । ये बड़ी माता के तुल्य हैं।

(२) आचार-शिक्षा

(क) सत्य

६१७. इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि । १.५
यह मैं असत्य छोड़कर सत्य को अपनाता हूँ।

६१८. इमामगृभ्णन् रशनामृतस्य । २२.२
प्राचीन विद्वानों ने सत्य की यह डोरी पकड़ी थी ।

६१९. ऊर्क् च मे सुनृता च मे । १८.९
मुझे बल और सत्य प्राप्त हों ।

६२०. ऋतं च मेऽमृतं च मे । १८.६
मुझे सत्य और अमरत्व प्राप्त हों ।

६२१. ऋतं सत्यम्, ऋतं सत्यम् । ११.४७
ऋत ही सत्य है, सत्य ही ऋत है।

६२२. ऋतं सपर्यत । ४.३५
ऋत तत्त्व की पूजा करो ।

६२३. ऋतस्य पथा प्रेत । ७.४५
ऋत के मार्ग पर चलो ।

६२४. ऋतस्य पथ्या अनु । ६.१२
ऋत की पद्धति का अनुसरण करो।

६२५. ऋतस्य या अभिरक्षन्ति गोपाः । २९.१६
रक्षक देव ऋत की रक्षा करते हैं।

६२६. **ऋतस्य योनाविह सादयामि । २९.६**
मैं तुम्हें ऋत में मूल में रखता हूँ ।

६२७. **ऋतेन सत्यमिन्द्रियम् । १९.७२**
मैंने ऋत से सत्य और बल पाया।

६२८. **एषाः वः सा सत्या संवागभूत् । ९.१२**
तुम्हारी वह अनुकूल वाणी सत्य सिद्ध हुई।

६२९. **दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति । १९.३०**
दक्षता से श्रद्धा प्राप्त होती है ।

६३०. **दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत् सत्यानृते प्रजापतिः । १९.७७**
प्रजापति ने स्वरूप विचार कर सत्य और अनृत को पृथक् किया।

६३१. **प्र देव्येतु सूनृता । ३३.८९, ३७.७**
सत्यवाणीरूपी देवी हमारे पास आवे।

६३२. **भगाय ऋतमृतवादिभ्यः । ५.७**
सत्यवादियों के लिए सत्य बोलना ऐश्वर्य के लिए हो ।

६३३. **मयि दक्षो मयि क्रतुः । ३८.२७**
मेरे अन्दर दक्षता और कर्मठता हो ।

६३४. **वरुणोऽसि सत्यौजाः । १०.२८**
तुम सत्य के तेज वाले वरुण हो ।

६३५. **श्रदस्मै नरो वचसे दधातन । ८.५**
हे मनुष्यो ! तुम इस बात पर श्रद्धा (विश्वास) करो ।

६३६. **श्रद्धया सत्यमाप्यते । १९.३०**
श्रद्धा से सत्यरूप ब्रह्म की प्राप्ति होती है ।

६३७. **श्रद्धां सत्ये प्रजापतिः । १९.७७**
प्रजापति ने सत्य पर अपनी श्रद्धा रखी।

६३८. **सत्यं च मे श्रद्धा च मे । १८.५**
मुझे सत्य और श्रद्धा प्राप्त हो ।

६३९. **सत्यप्रसवसो बृहस्पतेः - - वाजं जेषम् । ९.१३**
मैं सत्य की प्रेरणा देने वाले बृहस्पति का बल पाऊँ ।

६४०. **सत्यमुपगेषं स्विते मा धाः । ९.५**
मैं सत्य को अपनाऊँ । मुझे सद्गति दो ।

६४१. **सत्येन सत्यं यज्ञेन यज्ञः । २०.१२**
सत्य से सत्य (ब्रह्म) मिलता है और यज्ञ से यज्ञ (ईश्वर)।

६४२. **स नो विश्वायुः सप्रथाः । ३८.२०**
सत्य हमें दीर्घायु और प्रसिद्धि दे ।

६४३. **हृदयेन सत्यम् । १९.८५**
परमात्मा ने हृदय से सत्य को जन्म दिया।

(ख) अहिंसा

६४४. **अग्ने मा हिंसीः परमे व्योमन् । १३.४२**
हे अग्नि! परम आकाश में हमें हानि न पहुँचाओ ।

६४५. **इमं मा हिंसीरेकशफं पशुम् । १३.४८**
इस एक खुर वाले पशु की हिंसा मत करो ।

६४६. **इमं मा हिंसीर्द्विपादं पशुम् । १३.४७**
इस दो खुर वाले पशु की हिंसा मत करो ।

६४७. **गां मा हिंसीरदितिं विराजम् । १३.४३**
गाय की हिंसा मत करो । यह अदिति और विराट् देवता है ।

६४८. **घृतं दुहानामदितिं - - मा हिंसीः । १३.४९**
घी और दूध देने वाली गाय की हिंसा मत करो ।

६४९. **मा नः प्रजां रीरिषो मोत वीरान् । ३५.७**
हमारी सन्तान और वीर पुत्रों को कोई हानि न पहुँचाओ ।

६५०. **मा नस्तोके तनये मा न आयुषि । १६.१६**
हे रुद्र! हमारे पुत्र, पौत्र और हमारे जीवन को हानि न पहुँचावो ।

६५१. मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकम् । १६.१५
हे रुद्र! हमारे वृद्ध और बच्चों को हानि न पहँचावो।

६५२. मा नो वधीः पितरं मोत मातरम् । १६.१५
हे रुद्र! हमारे माता-पिता को हानि न पहँचावो ।

६५३. मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीः । १६.१६
हे रुद्र! हमारे तेजस्वी वीरों को मत मारो ।

६५४. मा मा हिंसीः । ३.६३, ४.९
हे रुद्र! मुझे मत मारो ।

६५५. मा मा हिंसीत् जनिता यः पृथिव्याः । १२.१०२
संसार का जनक रुद्र मुझे हानि न पहुँचावे।

६५६. यो अर्वन्तं जिघांसति तमभ्यमीति वरुणः । २२.५
जो घोड़े को मारना चाहता है, उस पर वरुण क्रोध करता है ।

(ग) दुर्गुण-त्याग

६५७. अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वंहसः । २०.१४
अग्नि मुझे सारे पापों और कष्टों से मुक्त करे ।

६५८. अग्नीषोमयोरुज्जितिमनूज्जेषम् । २.१५
अग्नि और सोम की विजय के अनुकूल मुझे विजय मिली ।

६५९. अनागसो अदितये स्याम । १२.१२
निरपराध हम पूर्णता के लिए हों ।

६६०. अनागास्त्वं नो अदितिः कृणोतु । २५.४५
हे अदिति ! तुम हमें निरपराध करो ।

६६१. अन्तरिक्षं मा हिंसीः । ५.४३
अन्तरिक्ष को दूषित न करो ।

६६२. अप दुःष्वप्न्यं सुव । ३५.११
बुरे स्वप्न को दूर भगाओ।

६६३. अप द्वेषो अप ह्वरोऽन्यव्रतस्य सश्चिम । ३८.२०
हम द्वेष और कुटिलता छोड़ें तथा परमात्मा का सायुज्य प्राप्त करें ।

६६४. अप नः शोशुचदघम् । ३५.६
ईश हमारे पापों को जला दे ।

६६५. अपाघमप किल्बिषमप कृत्यामपो रपः । ३५.११
ईश हमारे मानसिक शारीरिक और वाचिक पाप तथा अभिचार कर्म नष्ट करे।

६६६. अपेतो यन्तु पणयोऽसुम्ना देवपीयवः । ३५.१
देवद्रोही, अशुभ, कृपण जन हमसे दूर हों ।

६६७. अवतान्मा नाथितात् । ५.९
परमात्मा मुझे माँगने से बचावे।

६६८. अवतान्मा व्यथितात् । ५.९
परमात्मा मुझे कष्ट से बचावे ।

६६९. अव देवैर्देवकृतमेनोऽयासिषम् । ८.२७
मैंने इन्द्रियों से देवों के प्रति जो अपराध किया है, उसे दूर कर दिया ।

६७०. अव मर्त्यैर्मर्त्यकृतम् । ८.२७
मैंने मानवीय त्रुटि से मनुष्यों के प्रति जो अपराध किया है, उसे दूर कर दिया।

६७१. अश्रद्धामनृतेऽदधात् । १९.७७
प्रजापति ने असत्य में अश्रद्धा का भाव रखा ।

६७२. आत्मकृतस्यैनसोऽवयजनमसि । ८.१३
तुम स्वयंकृत पापों को नष्ट करने वाले हो।

६७३. आरे बाधस्व दुच्छुनाम् । ३५.१६
विपत्ति को दूर भगाओ ।

६७४. आर्त्यै जनवादिनम् । ३०.१७
चुगलखोर कष्ट भोगने के लिए है ।

६७५. **इन्द्राग्नी तमपनुदतां योऽस्मान् द्वेष्टि । २.१५**
इन्द्र और अग्नि हमारे द्वेषी को दूर हटावें ।

६७६. **एनस एनसोऽवयजनमसि । ८.१३**
तुम प्रत्येक पाप को नष्ट करने वाले हो ।

६७७. **एषां बन्धानामवसर्जनाय । १२.६४**
इन बन्धनों से मुक्ति के लिए यज्ञ करता हूँ ।

६७८. **तांस्ते प्रेत्यापि गच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः । ४०.३**
आत्महत्या करने वाले मरकर असुरलोकों को प्राप्त होते हैं ।

६७९. **दासः शेवधिपा अरिः । ३३.८२**
नीच कृपण शत्रुवत् है ।

६८०. **देवकृतस्यैनसोऽवयजनमसि । ८.१३**
तुम देवकृत पापों को नष्ट करने वाले हो ।

६८१. **देव रिषस्पाहि । ८.२७, २०.१**
हे परमात्मन् ! तुम हमें द्वेष से बचाओ ।

६८२. **नमो भूत्यै येदं चकार । १२.६५**
लक्ष्मी देवी को नमस्ते , जिसने यह सब कुछ किया है ।

६८३. **निरंहसः पिपृता निरवद्यात् । ३३.४२**
देवगण हमें पापों और कुकर्मों से बचावें।

६८४. **निर्ऋतिं त्वाऽहं परिवेद विश्वतः । १२.६४**
मैं तुझे सर्वथा निर्ऋति (विपत्ति) मानता हूँ ।

६८५. **पाप्मा हतो न सोमः । ६.३५**
दुर्गुण नष्ट हों , सद्गुण नहीं ।

६८६. **पाहि दुरद्मन्यै । २.२०**
अपथ्य भोजन से मुझे बचाओ ।

६८७. **पाहि दुरिष्ट्यै । २.२०**
अशास्त्रीय यज्ञ से मुझे बचाओ ।

६८८. पाहि प्रसित्यै । २.२०
बन्धन से मुझे बचाओ ।

६८९. पाहि मा दिद्योः । २.२०
शत्रुओं के अस्त्रों से मुझे बचाओ।

६९०. पितृकृतस्यैनसोऽवयजनमसि । ८.१३
तुम पिता के द्वारा किए गए पापों को नष्ट करने वाले हो ।

६९१. पुरुराव्णो देव रिषस्पाहि । ३.४८
हे देव! बहुत दुःखद क्षति से मुझे बचाओ ।

६९२. पूषाः नः पातु दुरितात् । २९.४७
पूषा देव हमें दुगुर्णों से बचावे ।

६९३. प्रयुतं द्वेषः । ६.१८
द्वेषभाव दूर हो ।

६९४. मनुष्यकृतस्यैनसोऽवयजनमसि । ८.१३
तुम मनुष्यकृत पापों को दूर करने वाले हो ।

६९५. माऽभि मंस्थाः । १३.४१
मुझे हानि न पहुँचाओ ।

६९६. मा सु भित्थाः, मा सु रिषः । ११.६८
तुम छिन्न-भिन्न न हो और न नष्ट हो ।

६९७. माऽहिर्भूः, मा पृदाकुः । ६.१२, ८.२३
साँप और अजगर की तरह कुटिल न हो ।

६९८. यदि जाग्रद् यदि स्वप्न एनांसि चकृमा वयम् । २०.१६
जागते और सोते हुए हमने जो पाप किए हैं, सूर्य उनसे मुक्त करे ।

६९९. यदि दिवा यदि नक्तम् एनांसि चकृमा वयम् । २०.१५
हमने दिन और रात में जो पाप किए हैं, वायु उनसे हमें मुक्त करे ।

७००. **यद् ग्रामे यदरण्ये यत् सभायां यदिन्द्रिये ।**
यत् शूद्रे यदर्ये यदेनश्चकृमा वयम् ... **तस्यावयजनमसि । २०.१७**
हमने ग्राम में, जंगल में, सभा में, अपनी इन्द्रियों से, वैश्य और शूद्रों के प्रति जो पाप किया है, उसको आप नष्ट करो ।

७०१. **यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो वातितृष्णं**
बृहस्पतिर्मे तद् दधातु । ३६.२
मेरी आँख, हृदय और मन में जो बड़ी कमी हो गई हो, बृहस्पति उसको पूरा करे ।

७०२. **युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनः । ५.३६**
हे ईश! हमारे कुटिल पापों को नष्ट करो ।

७०३. **युयोध्यस्मद् द्वेषांसि । १२.४३**
हे ईश! हमारे द्वेषभावों को नष्ट करो ।

७०४. **वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वंहसः । २०.१५**
वायु मुझे सभी पापों और कष्टों से मुक्त करे ।

७०५. **विपृच स्थ वि मा पाप्मना पृङ्क्त । १९.११**
हे ईश! तुम विघटक हो, मुझे पापों से हटाओ।

७०६. **वि मा पाप्मना पृङ्क्तम् । ९.४**
मुझे पापों से हटाओ ।

७०७. **स त्वा विमुञ्चति । २.२३**
यज्ञ न करने वाले को परमात्मा भी त्याग देता है ।

७०८. **सर्वस्यैनसोऽवयजनमसि । ८.१३**
तुम सभी पापों को नष्ट करने वाले हो ।

७०९. **सवितर्दुरितानि परा सुव । ३०.३**
हे परमात्मन् । तुम हमारे दुर्गुणों को दूर करो ।

७१०. **सूर्यो मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वंहसः । २०.१६**
सूर्य मुझे पापों और कष्टों से मुक्त करे ।

(घ) माधुर्य

७११. **अग्ने अच्छा वदेह नः । ९.२८**
हे अग्नि! तुम हमसे मधुर वचन बोलो ।

७१२. **उग्रं वचो अपावधीत् । ५.८**
कठोर वचन नाशकारक है ।

७१३. **उतापवक्ता हृदयाविधश्चित् । ८.२३**
वरुण मर्मवेधक वचन बोलने वाले का तिरस्कार करता है ।

७१४. **कुक्कुटोऽसि मधुजिह्वः । १.१६**
कुक्कुट के तुल्य मधुरभाषी हो ।

७१५. **त्वेषं वचो अपावधीत् । ५.८**
क्रोधयुक्त वचन नाशकारक है ।

७१६. **देवस्त्वा सविता मध्वाऽनक्तु । ६.२**
सविता देवा तुम्हें मधुर रस से युक्त करे।

७१७. **प्रति ते जिह्वा घृतमुच्चरण्यत् । ८.२४**
तुम्हारी जिह्वा घृत के तुल्य, मधुरता उगले ।

७१८. **भद्रवाच्याय प्रेषितो मानुषः । २१.६१**
मनुष्य को भद्र वचन बोलने के लिए परमात्मा ने भेजा है ।

७१९. **मधु द्यौरस्तु नः पिता । १३.२८**
पिता के तुल्य द्युलोक हमारे लिए मधुर हो ।

७२०. **मधु नक्तमुतोषसः । १३.२८**
रात्रि और उषाएँ हमारे लिए मधुर हों ।

७२१. **मधु मधु मधु । ३७.१३**
सर्वत्र मधुरता हो ।

७२२. **मधुमत् पार्थिवं रजः । १३.२८**
पृथिवी की धूलि हमारे लिए सुखद हो ।

७२३. **मधुमाँ अस्तु सूर्यः । १३.२९**
सूर्य हमारे लिए सुखद हो ।

७२४. **मधुमान् नो वनस्पतिः । १३.२९**
वन-वृक्ष हमारे लिए मधुर हों ।

७२५. **मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । १३.२७**
वायु मधुर बहती है, नदियाँ मधुर जल बहाती हैं ।

७२६. **माध्वीर्गावो भवन्तु नः । १३.२९**
हमारी गायें मधुर दूध देने वाली हों ।

७२७. **माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः । १३.२७**
ओपधियाँ हमारे लिए मधुर हों ।

७२८. **वाचमस्मे नि यच्छ देवायुवम् । ३७.१६**
परमात्मा हमें देवभक्ति वाली वाणी दे ।

७२९. **वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु । ११.७**
वाचस्पति परमात्मा हमारी वाणी मधुर बनावे ।

७३०. **सह वाचा मयोभुवा । ३.४७**
सुखद वाणी से उन्होंने कर्म किए ।

७३१. **सूक्तवाकाय सूक्ता ब्रूहि । २१.६१**
मधुर भाषण के लिए मधुर वचन बोलो ।

७३२. **सूक्तवाकेनाशिषः (आप्नोति) । १९.२९**
मधुर भाषण से आशीर्वाद मिलता है ।

(ङ) सद्‌गुण

७३३. **अग्रेणीरसि । ६.२**
तुम अग्रगण्य हो ।

७३४. **अतिथेरातिथ्यमसि । ५.१**
तुम अतिथि के लिए आनिथ्य हो ।

७३५. **अयं ये कामः समृध्यताम्** । २६.२
मेरा यह मनोरथ पूर्ण हो ।

७३६. **अहतौ पितरौ मया** । १९.११
मैंने माता-पिता को कोई हानि नहीं पहुचाई।

७३७. **अह्रुतमसि** । १.९
तुम अकुटिल हो।

७३८. **आतिथ्यरूपं मासरम्** । १९.१४
आतिथ्य के लिए दही आदि का पेय है ।

७३९. **आ मा सुचरिते भज** । ४.२८
हे ईश! मुझे सच्चरित्रता दो ।

७४०. **इयं ते यज्ञिया तनूः** । ४.१३
यह तेरा यज्ञ-संबन्धी पवित्र रूप है ।

७४१. **इह रतिरिह रमध्वम्** । ८.५१
यहाँ प्रेम है, यहाँ प्रेम से रहो ।

७४२. **उतो न उत्पुपूर्या उक्थेषु** । १५.४३
तुम हमें यज्ञों में धनादि से पूर्ण करो ।

७४३. **एतत्तदग्ने अनृणो भवामि** । १९.११
हे ईश्वर! मै उऋण हो गया हूँ ।

७४४. **चित स्थोर्ध्वचितः** । १.१८
तुम ज्ञानी हो, उच्चकोटि के ज्ञानी हो ।

७४५. **तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः** । ४०.१
परमात्मा के द्वारा दिए गए पदार्थ का भोग करो ।

७४६. **देवस्त्वा सविता श्रपयतु वर्षिष्ठेऽधि नाके** । १.२२
सविता देव तुम्हें उत्कृष्ट स्वर्ग में पुष्ट करे ।

७४७. **देवेभ्यो मा सुकृतं ब्रूतात्** । ८.४३
तुम देवों को मेरे सुकर्म बताना।

७४८. **द्यां मा लेखीः । ५.४३**
आकाश को दूषित मत करो ।

७४९. **परि माऽग्ने दुश्चरिताद् बाधस्व । ४.२८**
हे ईश्वर ! मुझे दुष्कर्म से बचाओ ।

७५०. **प्रति नः सुमना भव । ९.२८**
हमारे प्रति सद्‌भाव रखो ।

७५१. **भगश्च मे द्रविणं च मे । १८.८**
मुझे ऐश्वर्य और धन प्राप्त हो ।

७५२. **भूताय त्वा नारातये । १.११**
तुम्हें कल्याण के लिए बनाया गया है, न कि कृपणता के लिए ।

७५३. **मनसा मोदमानाः । २७.४६**
तुम मन से प्रसन्न रहो ।

७५४. **मा····अब्रह्मता विदसाम । १०.२२**
हम अभक्ति (नास्तिकता) से नष्ट न हों ।

७५५. **मा गृधः कस्यस्विद् धनम् । ४०.१**
दूसरे के धन को लालच से न देखो ।

७५६. **मित्रस्य मा चक्षुषेक्षध्वम् । ५.३४**
तुम लोग मुझे मित्र की दृष्टि से देखो ।

७५७. **मित्रो न एहि । ४.२७**
तुम मित्रवत् हमारे पास आवो ।

७५८. **यद् भद्रं तन्न आ सुव । ३०.३**
जो शुभ गुण हैं, वे हमें दीजिए।

७५९. **शंयुना पत्नीसंयाजान् । १९.२९**
कुशल-क्षेम से पत्नी-समागम को प्राप्त होता है।

७६०. **सं चेध्यस्वाग्ने प्र च बोधयैनम् । २७.२**
हे अग्नि! तुम प्रदीप्त हो और यजमान को प्रदीप्त करो ।

७६१. **संपृच स्थ सं मा भद्रेण पृङ्क्त । १९.११**
हे देवो! तुम संयोजक हो, मुझे कल्याण से संयुक्त करो ।

७६२. **सं मा भद्रेण पृङ्क्तम् । ९.४**
मुझे सद्गुणों से युक्त करो ।

७६३. **सत्या एषामाशिषः । ३५.२०**
इनके आशीर्वाद सत्य हों ।

७६४. **सहस्रवल्शा वि वयं रुहेम । ५.४३**
हम सहस्रों शाखाओं वाले होकर फलें ।

७६५. **सूक्तं च मे सुकृतं च मे । १८.५**
मुझे मधुर वचन और सत्कर्म प्राप्त हों ।

७६६. **सोमानं स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते । ३.२८**
हे ब्रह्मणस्पति ! परिश्रमी को यशस्वी बनाओ।

७६७. **स्वावेश उन्नेतॄणाम् । ६.२**
तुम उन्नत करने वालों के आश्रय हो ।

७६८. **स्वे गये जागृहि - अप्रयुच्छन् । २७.३**
तुम अपने घर में प्रमादरहित होकर जागरूक रहो, ।

(च) अमरत्व

७६९. **अनु तपस्तपस्पतिः (अमंस्त) । ५.४०**
तप के स्वामी अग्नि ने तपस्या की अनुमति दी ।

७७०. **अन्तर्यच्छ । ७.४**
अपने अन्दर संयम करो ।

७७१. **अमृतं दिवि । ८.३**
यज्ञ में अमृत है ।

७७२. **ऋतस्य पाशेन प्रति मुञ्चामि धर्षा मानुषः । ६.८**
साहसी व्यक्ति को सत्य के पाश से बाँधता हूँ ।

७७३. **तपसा तप्यध्वम् । १.१८**
तपस्या के द्वारा तप करो ।

७७४. **प्रणिनाय महते सौभगाय । ५.४३**
महान् सौभाग्य के लिए तुम्हें बनाया है ।

७७५. **बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः । ३.६०**
मैं संसार के बन्धन से मुक्त होऊँ, मोक्ष से नहीं ।

७७६. **बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् । ३.६०**
मैं मृत्यु के बन्धन से मुक्त होऊँ, अमरत्व से नहीं ।

७७७. **मोदाय त्वाऽऽनन्दाय त्वा महसे त्वा । १९.८**
प्रसन्नता, आनन्द और तेज के लिए तुम्हें (ईश्वर को) अपनाता हूँ ।

(छ) पुरुषार्थ

७७८. **अक्रन् कर्म कर्मकृतः । ३.४७**
कर्मट लोगों ने पुरुषार्थ किया ।

७७९. **अथो सीद ध्रुवा त्वम् । १२.५४**
तुम यहाँ स्थिर होकर रहो ।

७८०. **अनर्वा प्रेहि । ६.१२**
बिना घोड़े के अर्थात् स्वावलम्बन से आगे बढ़ो ।

७८१. **अयं शुक्रो अयामि ते । ३३.८५**
मुझमें यह शक्ति है, मैं तेरे पास आता हूँ ।

७८२. **अस्मे वो अस्त्विन्द्रियम् । ९.२२**
हमें तुम्हारी इन्द्रियों की शक्ति प्राप्त हो ।

७८३. **आ द्यां रोहन्ति रोदसी । १७.६८**
स्वावलम्बन से व्यक्ति द्युलोक, अन्तरिक्ष और पृथिवी से ऊपर उठते हैं ।

७८४. **आशुश्चासि मेध्यश्च । २९.३**
तुम तीव्र और पवित्र हो ।

७८५. **इह धृतिरिह स्वधृतिः** । ८.५१, २२.१९
यहाँ धैर्य और स्वावलम्बन है ।

७८६. **ईड्यश्चासि वन्द्यश्च वाजिन्** । २९.३
हे पुरुषार्थी ! तुम स्तुत्य और वन्दनीय हो ।

७८७. **उरु विष्णो वि क्रमस्व** । ५.३८
हे विष्णु ! तुम विशाल पराक्रम करो ।

७८८. **ऊर्जं धत्स्व** । ६.३५
तुम बलवान् बनो ।

७८९. **ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे** । ११.८३
हे ईश ! हमारे मनुष्यों और पशुओं को बल दो ।

७९०. **कर्म कृत्वास्तं प्रेत सचाभुवः** । ३.४७
पुरुषार्थ करके एक साथ अपने घर जाओ ।

७९१. **कर्मणे वां वेषाय वाम्** । १.६
तुम दोनों को पुरुषार्थ और प्रसार के लिए नियुक्त किया है ।

७९२. **कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः** । ४०.२
इस संसार में कर्म करते हुए ही सौ वर्ष जीना चाहो ।

७९३. **क्रत्वे दक्षाय नो हिनु** । ३४.८
हमें पुरुषार्थ और दक्षता के लिए प्रेरित करो ।

७९४. **देवानां सुम्ने बृहते रणाय** । १४.३
दिव्य सुख और महान् आनन्द के लिए यहाँ रहो ।

७९५. **न कर्म लिप्यते नरे** । ४०.२
निष्कामकर्म से मनुष्य कर्म में लिप्त नहीं होता ।

७९६. **प्रतूर्तं वाजिन्ना द्रव** । ११.१२
हे पुरुषार्थी ! तुम शीघ्र आवो ।

७९७. **महिमा तेऽन्येन न संनशे** । २३.१५
स्वावलंबन की महिमा और कोई नहीं पा सकता है ।

७९८. **यतस्व सदस्यैः । ७.४५**
सदस्यों के साथ प्रयत्न करो ।

७९९. **योजा न्विन्द्र ते हरी । ३.५१**
हे इन्द्र! तुम अपने घोड़ों को जोतो ।

८००. **वाजजितं संमार्ज्मि । २.१४**
हम संग्रामों में विजयी को अलंकृत करते हैं ।

८०१. **सत्याय सत्यं जिन्व । १५.६**
सत्य के लिए सत्य को पुष्ट करो ।

८०२. **स्वयं यजस्व तन्वं वृधानः । १७.२१**
अपने शरीर को पुष्ट करते हुए स्वयं यज्ञ करो ।

८०३. **स्वयं यजस्व स्वयं जुषस्व । २३.१५**
स्वयं यज्ञ करो और स्वयं उसका फल भोगो ।

८०४. **स्वयं वाजिन् तन्वं कल्पयस्व । २३.१५**
हे पुरुषार्थी! तुम स्वयं अपने शरीर को पुष्ट करो ।

८०५. **स्वर्यन्तो नापेक्षन्त । १७.६८**
स्वावलम्वी मोक्ष को जाते हुए अन्यकी अपेक्षा नहीं करते ।

८०६. **स्वैर्दक्षैर्दक्षपितेह सीद । १४.३**
अपनी दक्षता से योग्यता के स्वामी होकर रहो ।

(ज) सुख, शान्ति

८०७. **अन्तरिक्षं शिवं तुभ्यम् । ३५.९**
आकाश तुम्हारे लिए शुभ हो ।

८०८. **अया धिया वामभाजः स्याम । ८.६**
हम इस बुद्धि से धनवान् हों ।

८०९. **अहानि शं भवन्तु नः । ३६.११**
दिन हमारे लिए शुभ हों ।

८१०. **आपः शान्तिरोषधयः शान्तिः । ३६.१७**
जल और ओषधियाँ हमें शान्ति दें ।

८११. **इह रन्तिरिह रमताम् । २२.१९**
यहाँ आनन्द है, यहाँ रमो ।

८१२. **उच्च तिष्ठ महते सौभगाय । २७.२**
महान् सौभाग्य के लिए उठ खड़े हो ।

८१३. **कृणुतं नः स्विष्टिम् । २७.१८**
तुम दोनों हमारा यज्ञ शुभ करो ।

८१४. **क्रीडा च मे मोदश्च मे । १८.५**
मुझे खेल-कूद और आमोद-प्रमोद प्राप्त हों ।

८१५. **क्षेमश्च मे धृतिश्च मे । १८.७**
मुझे सुख और धैर्य प्राप्त हो ।

८१६. **दिवे दिवे वाममस्मभ्यं सावीः । ८.६**
प्रतिदिन हमें धन-ऐश्वर्य दो ।

८१७. **द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः । ३६.१७**
द्युलोक और अन्तरिक्ष शान्ति दें ।

८१८. **पृथिवी शान्तिः । ३६.१७**
पृथिवी पर शान्ति हो ।

८१९. **ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः । ३६.१७**
परमात्मा शान्ति दे । सर्वत्र शान्ति हो ।

८२०. **भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः । २५.२१**
हे देवो! हम कान से अच्छी बातें सुनें ।

८२१. **भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । २५.२१**
आदरणीय हम लोग आँखों से भद्र वस्तुएँ देखें ।

८२२. **भद्रा उत प्रशस्तयः । १५.३८, ३९**
हमारी कीर्ति हमारे लिए शुभ हो ।

८२३. **भद्रा रातिः । १५.३८**
हमारा ऐश्वर्य हमारे लिए शुभ हो ।

८२४. **भद्रो अध्वरः । १५.३८**
हमारा यज्ञ शुभ हो ।

८२५. **वाममद्य सवितर्वाममु श्वः । ८.६**
हे सविता ! हमें आज धन मिले, कल भी धन मिले ।

८२६. **विश्वाहा वयं सुमनस्यमानाः । २९.४५**
हम सदा सौमनस्य से रहे ।

८२७. **वि स्वः पश्य । ७.४५**
तुम सदा सुख-आनन्द देखो ।

८२८. **शं च मे मयश्च मे । १८.८**
मुझे सुख और आनन्द प्राप्त हों ।

८२९. **शं च वक्ष्व परि च वक्ष्व । ८.२६**
हे सोम ! तुम सुख लावो और दुःख भगावो ।

८३०. **शं न इन्द्रो बृहस्पतिः । ३६.९**
इन्द्र और बृहस्पति हमारे लिए सुखकर हों ।

८३१. **शं नः पर्जन्यो अभि वर्षतु । ३६.१०**
बादल हमारे लिए सुखद वर्षा करें ।

८३२. **शं नस्तपतु सूर्यः । ३६.१०**
सूर्य हमारे लिए सुखद रूप से तपे ।

८३३. **शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे । ३६.८**
हमारे मनुष्यों और पशुओं के लिए शुभ हो ।

८३४. **शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । ३६.१२**
दिव्य जल हमारे सुखद पान के लिए हो ।

८३५. **शं नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः । ३६.२**
संसार का स्वामी परमात्मा हमारे लिए सुखद हो ।

८३६. **शं नो मित्रः शं वरुणः । ३६.९**
मित्र और वरुण हमारे लिए शुभ हों ।

८३७. **शं नो वातः पवताम् । ३६.१०**
वायु हमें सुखद ढंग से पवित्र करे।

८३८. **शं नो विष्णुरुरुक्रमः । ३६.९**
महापराक्रमी विष्णु हमारे लिए शुभ हो ।

८३९. **शं योरभि स्रवन्तु नः । ३६.१२**
जल हमें कुशल-क्षेम दे ।

८४०. **शं रात्रीः प्रति धीयताम् । ३६.११**
रात्रियाँ सुखद हों ।

८४१. **शं वातः शं हि ते घृणिः । ३५.८**
तुम्हारे लिए वायु और सूर्य की किरणें सुखद हों ।

८४२. **शमहोभ्यः । ६.१५**
दिनभर के लिए शान्ति हो ।

८४३. **शिवतमास्तुभ्यं भवन्तु सिन्धवः । ३५.९**
तुम्हारे लिए नदियाँ अत्यन्त सुखद हो ।

८४४. **शिवो नः सुमना भव । १६.१३**
हे रुद्र! तुम हमारे लिए सुखद और प्रेमपूर्ण होओ ।

८४५. **सत्याः नः सन्त्वाशिषः । २.१०**
हमारे आशीर्वाद सत्य सिद्ध हों ।

८४६. **सा मा शान्तिरेधि । ३६.१७**
वह शान्ति मुझे प्राप्त हो ।

८४७. **सुखं चे मे शयनं च मे । १८.६**
मुझे सुख और सुखद निद्रा प्राप्त हों ।

८४८. **सुभग भद्रो अध्वरः । १५.३८**
यज्ञ शुभ और सौभाग्यकारी हो ।

८४९. सुम्ने मा धत्तम् । २.१९
मुझे सुख-सुविधा में रखो।

८५०. सूषाश्च मे सुदिनं च मे । १८.६
मुझे सुखद उषा और सुन्दर दिन प्राप्त हों ।

८५१. स्वरभिविख्येषम् । १.११
मैं सुख ही देखूँ ।

८५२. स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः । २५.१९
सर्ववित् पूषा हमारे लिए मंगलमय हो ।

८५३. स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः । २५.१९
महायशस्वी इन्द्र हमारे लिए मंगलमय हो ।

८५४. स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु । २५.१९
बृहस्पति हमारा कल्याण करे ।

(झ) बल, शक्ति

८५५. ऊर्गसि - - ऊर्जं मयि धेहि । ४.१०
हे ईश! तुम बलरूप हो, मुझे बल दो ।

८५६. धरुणमसि-अन्तरिक्षं दृंह । १.१८
हे ईश! तुम शक्तिशाली धारक हो, अन्तरिक्ष को दृढ़ करो ।

८५७. धर्त्रमसि दिवं दृंह । १.१८
हे ईश! तुम प्रबल धारक हो, द्युलोक को दृढ़ करो ।

८५८. ध्रुवमसि पृथिवीं दृंह । १.१७
हे ईश! तुम स्थिर हो, पृथिवी को दृढ़ करो ।

८५९. प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा । १.२०
प्राण, उदान और व्यान वायुओं के लिए हम तुम्हें अपनाते हैं ।

८६०. रेतोधा रेतो मयि धेहि । ८.१०
हे ईश ! तुम शक्तिशाली हो, मुझे शक्ति दो ।

८६१. सं ते प्राणो वातेन गच्छताम् । ६.१०
तुम्हारे प्राण वायु से संगत हों ।

(ञ) सन्मार्ग

८६२. अग्ने नय सुपथा राये । ५.३६
हे परमात्मन्! हमें ऐश्वर्य के लिए सन्मार्ग से ले चलो ।

८६३. देवा गातुविदो गातुं वित्त्वा गातुमित । २.२१, ८.२१
सन्मार्ग जाननेवाले देव, सन्मार्ग जानकर, सन्मार्ग पर चलें ।

८६४. प्रति पन्थामपद्महि स्वस्तिगामनेहसम् । ४.२९
हम सुखद और निष्कंटक मार्ग पर चलें ।

८६५. येन विश्वाः परि द्विषो वृणक्ति विन्दते वसु । ४.२९
शुभ मार्ग से शत्रुओं से बचाव होता है और ऐश्वर्य प्राप्त होता है ।

८६६. सं सूरिभिर्मघवन् सं स्वस्त्या । ८.१५
हे इन्द्र! तुम हमें विद्वानों से और कल्याण से संगत करते हो ।

८६७. सूर्यस्यावृतमन्वावर्ते । २.२६, २.२७
मै सूर्य की गति का अनुसरण करूँ ।

(ट) पुष्टि

८६८. अन्तरिक्षेणान्तरिक्षं जिन्व । १५.६
अन्तरिक्ष से अन्तरिक्ष को पुष्ट करो ।

८६९. अभिजिता तेजसा तेजो जिन्व । १५.७
विजयी तेज से तेज को पुष्ट करो ।

८७०. अश्मा भवतु नस्तनूः । २९.४९
हमारा शरीर पत्थर के तुल्य पुष्ट हो ।

८७१. उत्तमेन तनूभिस्तनूर्जिन्व । १५.७
उत्तम शरीर से शरीर को पुष्ट करो ।

८७२. तन्तुना रायस्पोषेण रायस्पोषं जिन्व । १५.७
समन्वित योगक्षेम से योगक्षेम को पुष्ट करो ।

८७३. **धर्मणा धर्मं जिन्व । १५.६**
धर्म से धर्म को पुष्ट करो ।

८७४. **पृथिव्या पृथिवीं जिन्व । १५.६**
पृथिवी से पृथिवी को पुष्ट करो ।

८७५. **वयोधसाधीतेनाधीतं जिन्व । १५.७**
शक्तिप्रद अध्ययन से अध्ययन को पुष्ट करो ।

८७६. **वसुभ्यो वसून् जिन्व । १५.६**
वसुओं (८ पृथिवी आदि) से वसुओं को पुष्ट करो ।

८७७. **वृष्ट्या वृष्टिं जिन्व । १५.६**
वृष्टि से वृष्टि को पुष्ट करो ।

८७८. **संसर्पेण श्रुताय श्रुतं जिन्व । १५.७**
शास्त्रज्ञान के लिए शिक्षा-प्रचार से अध्ययन को पुष्ट करो ।

८७९. **सहस्रपोषं पुषेयम् । ४.२६**
मैं सहस्रों आय के साधनों से पुष्ट होऊँ ।

(ठ) निर्भयता

८८०. **अनमित्रं च मेऽभयं च मे । १८.६**
मैं शत्रुहीन और निर्भय होऊँ ।

८८१. **अभयं कृणुहि विश्वतो नः । ७.३७**
हे परमात्मन् ! मुझे सभी ओर से निर्भय करो ।

८८२. **ऊर्जं बिभ्रत एमसि । ३.४१**
हम लोग शक्ति धारण करते हुए आते हैं ।

८८३. **गृहा मा बिभीत मा वेपध्वम् । ३.४१**
हे परिवार के लोगों ! न डरो, न काँपो ।

८८४. **त्वमभि तिष्ठ पृतन्यतः । ११.२०**
तुम आक्रमणकारियों को रौंद दो ।

८८५. मा त्वा दभन् । ८.१
कोई तुम्हें दबा न सकें ।

८८६. मा भेर्मा रोक् । १६.४७
मत डरो, मत हिम्मत हारो ।

८८७. मा भेर्मा सं विक्थाः । १.२३, ६.३५
न डरो और न घबराओ ।

(ड) मेधा, सुमति

८८८. अग्ने ब्रह्म गृभ्णीष्व । १.१८
हे जीव! तुम ब्रह्म (ईश्वर, ज्ञान) का आश्रय लो ।

८८९. अप दुर्मतिं जहि । ११.४७
कुमति को नष्ट करो ।

८९०. अपामतिं दुर्मतिं बाधमानाः । १९.८४
अज्ञान और कुमति को नष्ट करो ।

८९१. आत्मानमङ्गैः समधात् सरस्वती । १९.९३
सरस्वती ने आपने आपको अंगों से समन्वित किया ।

८९२. आ वोऽर्वाची सुमतिर्ववृत्यात् । ८.४
हे आदित्यो! तुम्हारी सुमति हमारी ओर आवे ।

८९३. इयमुपरि मतिः । १३.५८
यह बुद्धि सर्वोत्कृष्ट है ।

८९४. केतपूः केतं नः पुनातु । ९.१
ज्ञान को पवित्र करने वाला देव हमारे ज्ञान को पवित्र करे ।

८९५. केतुं कृण्वन्नकेतवे । २९.३७
अज्ञानियों को ज्ञान दो ।

८९६. क्रतोर्भद्रस्य दक्षस्य साधोः । १५.४५
हे अग्नि! तुम शुभ, निपुण एवं सत्कर्मनिष्ठ ज्ञान के नियन्ता हो ।

८९७. **तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु । ३२.१४**
हे अग्नि! उस मेधा बुद्धि से मुझे मेधावी बनाओ ।

८९८. **तव देवि सन्दृशि। ४.२३**
हे देवी ! हम तुम्हारी कृपादृष्टि में रहें ।

८९९. **त्विषिं न हृदये मतिम् । २१.५३**
अश्विनी ने तेज के तुल्य हमारे हृदय में बुद्धि रखी ।

९००. **देवस्य सवितुर्मतिमासवं विश्वदेव्यम् । २२.१४**
हम सविता देव की सर्वदेवहितकर एवं प्रेरक बुद्धि को माँगते हैं ।

९०१. **दैवीं धियं मनामहे सुमृडीकामभिष्टये । ४.११**
हम सुखद दिव्य बुद्धि अभीष्टसिद्धि के लिए माँगते हैं ।

९०२. **धिया भगं मनामहे । २२.१४**
हम बुद्धि के द्वारा ऐश्वर्य की कामना करते हैं ।

९०३. **धियो यो नः प्रचोदयात् । ३.३५**
वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सत्कर्मों में प्रेरित करे।

९०४. **भूत्यै जागरणम्, अभूत्यै स्वपनम् । ३०.१७**
जागरूकता ऐश्वर्य के लिए है और आलस्य अकल्याण के लिए ।

९०५. **मतिश्च मे सुमतिश्च मे । १८.११**
मुझे बुद्धि और सुमति प्राप्त हों ।

९०६. **मेधां धाता ददातु मे । ३२.१५**
परमात्मा मुझे मेधा शक्ति दे ।

९०७. **मेधां मे वरुणो ददातु । ३२.१५**
वरुण मुझे मेधा शक्ति दे ।

९०८. **मेधामग्निः प्रजापतिः । ३२.१५**
अग्नि और प्रजापति मुझे मेधा शक्ति दें ।

९०९. **रक्षा णो ब्रह्मणस्पते । ३.३०**
हे ज्ञानियों के स्वामी! तुम हमारी रक्षा करो ।

११०. वर्चोधां यज्ञवाहसम् । ४.११
दिव्य बुद्धि ब्रह्मवर्चस् देती है और यज्ञकार्य पूर्ण करती है ।

१११. सनिं मेधामयासिषम् । ३२.१३
मुझे धनदात्री मेधाशक्ति प्राप्त हुई ।

११२. समख्ये देव्या धिया । ४.२३
दिव्य बुद्धि से मैंने देखा ।

११३. सहस्रधारां पयसा महीं गाम् । १७.७४
सुमति दूध की हजारों धारा वाली कामधेनु है ।

११४. सारस्वतं वीर्यम्, ऐन्द्रं बलम् । १९.८
तुम विद्या का बल और इन्द्र की शक्ति हो ।

११५. सुतीर्था नो असद् वशे । ४.११
श्रेष्ठ तीर्थ के तुल्य पवित्र सुमति हमारे वश में हो ।

११६. सुमतिं सत्यराधसम् । २२.११
सुमति उदार दात्री है ।

(ढ) पवित्रता, शुद्धि

११७. आदित्यास्त्वा धूपयन्तु । ११.६०
आदित्य तुम्हें शुद्ध करें ।

११८. इन्द्रस्त्वा धूपयतु । ११.६०
इन्द्र तुम्हें पवित्र करे ।

११९. चक्षुस्ते शुन्धामि । ६.१४
तुम्हारे नेत्रों को शुद्ध करता हूँ ।

१२०. चरित्रांस्ते शुन्धामि । ६.१४
तुम्हारे चरित्र को शुद्ध करता हूँ ।

१२१. जातवेदः पुनीहि मा । १९.३९
हे सर्वज्ञ अग्नि! मुझे पवित्र करो ।

१२२. **देवो देवेभ्यः पवस्व । ७.१**
हे देव! तुम देवों के लिए मुझे पवित्र करो ।

१२३. **दैव्याय कर्मणे शुन्धध्वं देवयज्यायै । १.१३**
देव-संबन्धी कर्मों एवं देवयज्ञ के लिए मुझे पवित्र करो ।

१२४. **पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देव दीद्यत् । १९.४०**
हे तेजोमय देव! पवित्र पराक्रम से मुझे पवित्र कीजिए ।

१२५. **पुनन्तु मनसा धियः । १९.३९**
देवगण मननशक्ति से मेरी बुद्धि को पवित्र करें ।

१२६. **पुनन्तु मा देवंजनाः । १९.३९**
देवगण मुझे पवित्र करें ।

१२७. **पुनन्तु विश्वा भूतानि । १९.३९**
सभी प्राणी मुझे पवित्र करें ।

१२८. **प्राणं ते शुन्धामि । ६.१४**
मैं तेरे प्राण को शुद्ध करता हूँ ।

१२९. **ब्रह्म तेन पुनातु मा । १९.४१**
हे अग्नि! तुम्हारा जो ज्ञान फैला है, उससे मुझे पवित्र करो ।

१३०. **मां पुनीहि विश्वतः । १९.४३**
मुझे चारों ओर से पवित्र करो ।

१३१. **यः पोता स पुनातु मा । १९.४२**
जो पवित्र करने वाला वायु है , वह मुझे पवित्र करे ।

१३२. **यद् वोऽशुद्धाः पराजघ्नुरिदं वस्तत् शुन्धामि । १.१३**
तुम्हें अशुद्ध लोगों ने जो अपवित्र किया है, उससे तुम्हें पवित्र करता हूँ ।

१३३. **वरुणस्त्वा धूपयतु । ११.६०**
वरुण तुम्हें अग्नि से संस्कृत करें ।

१३४. **वसवस्त्वा धूपयन्तु । ११.६०**
वसुगण तुम्हें अग्नि से संस्कृत करें ।

१३५. **वाचं ते शुन्धामि । ६.१४**
तुम्हारी वाणी को शुद्ध करता हूँ ।

१३६. **वाचस्पतये पवस्व । ७.१**
ज्ञान के देवता के लिए मुझे पवित्र करो ।

१३७. **श्रोत्रं ते शुन्धामि । ६.१४**
तुम्हारे कानों को पवित्र करता हूँ ।

(ण) उन्नति

१३८. **अत्यन्याँ अगाम् । ५.४२**
मैं औरों से आगे निकल जाऊँ ।

१३९. **उर्वन्तरिक्षमन्वेमि । १.७, ७.२**
मैं विशाल अन्तरिक्ष में जाता हूँ ।

१४०. **ऊर्ध्वचितः श्रयध्वम् । १२.४६**
उन्नत चेतना वाले होओ ।

१४१. **पृथिव्या अहमुदन्तरिक्षमारुहम् । १७.६७**
मैं पृथिवी से अन्तरिक्ष में चढ़ा ।

१४२. **प्रतिष्ठायै चरित्राय । १३.१९, १४.१२**
कीर्ति और शुद्ध चरित्र के लिए स्थित हो ।

१४३. **प्रेत्या एत्यै सं चाञ्च प्र च सारय । २७.४५**
प्रगति और उद्‌गति के लिए संकोच और विस्तार को अपनाओ।

१४४. **स्वर्ज्योतिरगामहम् । १७.६७**
मैंने दिव्य ज्योति प्राप्त की ।

(त) ज्योति, तेज

१४५. **अगन्म तमसस्पारमस्य । १२.७३**
हम इस अन्धकार के पार पहुँचे ।

१४६. इन्द्रस्य बाहुरसि दक्षिणः सहस्त्रभृष्टिः शततेजाः । १.२४
तुम इन्द्र के सैकड़ों तेज वाले और हजारों को भूनने या मारने वाले दाहिने हाथ हो ।

१४७. ज्योतिरापाम । १२.७३
हमने ज्योति प्राप्त की ।

१४८. ज्योतिर्मे यच्छ । १४.१७
हे परमात्मन् ! मुझे ज्योति दो ।

१४९. तेजो न चक्षुरक्ष्योः । २१.४८
ईश ने नेत्रों में तेज और दर्शनशक्ति रखी ।

१५०. निर्जगन्वान् तमसो ज्योतिषाऽऽगात् । १२.१३
हे अग्नि! तुम रात्रिरूपी अन्धकार से निकले हो और दिनरूपी प्रकाश के साथ आए हो ।

१५१. भ्राजं गच्छ । ४.१७
तुम तेजस्विता को प्राप्त हो ।

१५२. वर्चोदा असि वर्चो मे देहि । २.२६
हे ईश! तुम तेज देने वाले हो, मुझे ब्रह्मवर्चस् दो ।

१५३. वायुरसि तिग्मतेजाः । १.२४
तुम तीक्ष्ण तेज वाले वायु हो ।

१५४. विश्वं ज्योतिर्यच्छ । १४.१४
तुम सबको प्रकाश दो ।

१५५. सं ज्योतिषा ज्योतिः । २.९
ज्योति से ज्योति मिले ।

१५६. सं वर्चसा पयसा सं तनूभिरगन्महि । २.२४, ८.१६
हम तेज, दुग्धादि तथा स्वस्थ शरीर से युक्त हों ।

१५७. सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ।२७.१०
हमने उत्तम ज्योति सूर्य (ईश्वर) को प्राप्त किया ।

९५८. स्वर्ज्योतिः पृथिवीं भस्मनाऽऽपृण । ६.२१
तुम दिव्य ज्योति हो, पृथिवी को प्रकाश से भर दो ।

(थ) यश

९५९. अस्मे धेहि जातवेदो महिं श्रवः । १५.३५
हे सर्वज्ञ ईश! हमें महान् यश दो ।

९६०. अस्यै प्रतिष्ठायै अगन्म स्वः । २.२५
इस प्रतिष्ठा के लिए हम प्रकाश-मार्ग पर चलें ।

९६१. उग्रं शर्म महि श्रवः । २६.१६
हमें उत्कृष्ट सुख और महान् यश मिले ।

९६२. चक्षुर्दा असि चक्षुर्मे देहि । ४.३
तुम नेत्र-ज्योति देने वाले हो, नेत्र-ज्योति दो ।

९६३. देवेष्वक्रत श्रवः । ३५.१८
इन्होंने देवों में अपना यश फैलाया ।

९६४. प्रशस्तं धेहि यशसं बृहन्तम् । २०.७९
हमें उत्कृष्ट और महान् यश दो ।

९६५. महाँ असि रोचस्व । ३८.१७
तुम महान् हो, खूब चमको ।

९६६. यथा नः श्रेयसस्करत् । ३.५८
वह रुद्र हमारा कल्याण करे ।

९६७. यशः श्रीः श्रयतां मयि । ३९.४
मुझमें यश और श्री रहें ।

९६८. वर्चोदा असि वर्चो मे देहि । ४.३
हे ईश! तुम तेज देने वाले हो, मुझे तेज दो ।

९६९. वसीयश्च मे यशश्च मे । १८.८
मुझे उत्तम धन और यश मिले ।

१७०. **श्रवश्च मे श्रुतिश्च मे । १८.१**
मुझे यश और वेद-ज्ञान प्राप्त हो ।

१७१. **श्रवसा पृथिवीं संसीदस्व । ३८.१७**
यश से पृथिवी पर प्रतिष्ठित हो ।

१७२. **श्रोत्रं न कर्णयोर्यशः । २१.५१**
कानो में श्रवग-शक्ति और यश हो ।

१७३. **श्रोत्रं मे श्लोकय । १४.८**
मेरे कानों को उत्तम श्रवणशक्ति दो ।

(द) दान

१७४. **अदित्सन्तं दापयति प्रजानन् । ९.२४**
विद्वान् अदाता को दान देने के लिए प्रेरित करता है ।

१७५. **अस्मान् रायो मघवानः सचन्ताम् । २.१०**
धनवान् हमें धन दें ।

१७६. **इन्द्रं दानाय चोदय । ९.२७**
इन्द्र (धनवान्) को दान देने के लिए प्रेरित करो ।

१७७. **त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄन् पाहि । १३.५२**
हे नित्य-युवा अग्नि! तुम दानियों की रक्षा करो ।

१७८. **दधद् रत्नानि दाशुषे । ११.२५**
तुम दाता को रत्न देते हो ।

१७९. **प्र प्र दातारं तारिषे । ११.८३**
तुम दाता को पार लगाते हो ।

१८०. **मघवन् भूय इन्नु ते दानम् । ८.२**
हे इन्द्र! तुम्हारा दान महान् है ।

१८१. **वाजमुक्थ्यं दधासि दाशुषे कवे । १२.१०६**
हे क्रान्तदर्शी अग्नि! तुम दाता को प्रशंसनीय शक्ति देते हो ।

(ध) प्रार्थना

१८२. अग्ने त्वं नो अन्तम उत त्राता । ३.२५
हे अग्नि! तुम हमारे सबसे निकटस्थ मित्र और रक्षक हो ।

१८३. अग्नेः प्रियं पाथोऽपीतम् । २.१७
अग्नि के प्रिय पथ पर चलो ।

१८४. अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्म आपृण। ३.१७
हे अग्नि! हमारे शरीर में जो न्यूनता हो, उसे पूर्ण करो ।

१८५. अग्ने सूपायनो भव । ३.२४
हे अग्नि! हम सरलता से तुम्हारे पास पहुँच सकें ।

१८६. अच्छा नक्षि क्षुमत्तमं रयिं दाः । ३.२५
हे स्वच्छ अग्नि! तुम हमें प्राप्त हो और हमें तेजोमय धन दो ।

१८७. अयमिह प्रथमो धायि धातृभिः । ३.१५
विद्वानो ने ब्रह्मरूपी अग्नि को यहाँ स्थापित किया ।

१८८. अवो देवस्य सानसि । ११.६२
देवों का संरक्षण धन देने वाला है ।

१८९. आ तुभ्यमिन्द्रः प्यायताम् । ५.७
इन्द्र तुम्हें पुष्ट करे ।

१९०. आ त्वमिन्द्राय प्यायस्व । ५.७
तुम इन्द्र को पुष्ट करो ।

१९१. आप्याययास्मान् सखीन् सन्या मेधया । ५.७
हे ईश! तुम हम मित्रों को धन और बुद्धि से पुष्ट करो ।

१९२. आयुर्दा अग्नेऽस्यायुर्मे देहि । ३.१७
हे अग्नि! तुम आयु देने वाले हो, हमें दीर्घायु करो ।

१९३. आस्माकोऽसि । ४.२४
हे ईश्वर! तुम हमारे हो ।

९९४. इन्द्र ते वयम् । १०.२२
हे ईश्वर! हम तुम्हारे हैं ।

९९५. इषे त्वोर्जे त्वा । १.१
अन्न और बल के लिए हम तेरी उपासना करते हैं ।

९९६. उतेदानीं भगवन्तः स्याम । ३४.३७
हम अब ऐश्वर्यशाली हों ।

९९७. ऋध्यामा त ओहैः । १५.४४
हम तुम्हारी स्तुतियों से समृद्ध हों ।

९९८. चनोधा असि चनो मयि धेहि । ८.७
हे ईश! तुम कृपालु हो, मुझपर कृपादृष्टि रखो ।

९९९. तूनपा अग्नेऽसि तन्वं मे पाहि । ३.१७
हे अग्नि! तुम शरीर के रक्षक हो, मेरे शरीर की रक्षा करो ।

१०००. तेन वयं भगवन्तः स्याम । ३४.३८
हे ईश! तुम्हारी कृपा से हम ऐश्वर्यशाली हों ।

१००१. त्वा वयं मघवन् वन्दिषीमहि । ३.५२
हे मघवन्! हम तुम्हें प्रणाम करते हैं ।

१००२. पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् । १८.३६
दिशाएं हमारे लिए दुग्धादि से युक्त हों ।

१००३. प्राणं न वीर्यं नसि । २१.४९
हमारी नाक में प्राण और शक्ति हो ।

१००४. प्रातः सोममुत रुद्रं हुवेम । ३४.३४
हम प्रातः सोम और रुद्र देवों का आह्वान करें ।

१००५. प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम । ३४.३५
हम प्रातः विजयी एवं तेजस्वी ऐश्वर्यदेव का आह्वान करें ।

१००६. बलं न वाचमास्ये । २१.५०
हमारे मुँह में बलं और वाक्शक्ति हो ।

१००७. **बृहतीमिन्द्राय वाचं वद । ५.२२**
इन्द्र के लिए महान् स्तुतिवचन कहो ।

१००८. **भगेमां धियमुदवा ददन्नः । ३४.३६**
हे भगवन् ! तुम हमें धन देते हुए हमारी बुद्धि को उन्नत करो ।

१००९. **भद्रं च मे श्रेयश्च मे । १८.८**
मुझे कुशलता और श्रेय मिले ।

१०१०. **महि त्रीणामवोऽस्तु द्युक्षम् । ३.३१**
मित्र, वरुण और अर्यमा, इन तीनों देवों की दिव्य सुरक्षा हमें प्राप्त हो ।

१०११. **वयं देवानां सुमतौ स्याम । ३४.३७**
हम देवों की कृपादृष्टि में रहें ।

१०१२. **वर्चोदा अग्नेऽसि वर्चो मे देहि । ३.१७**
हे ईश! तुम तेज देने वाले हो, मुझे तेज दो ।

१०१३. **वसुमतीमग्ने ते छायामुपस्थेषम् । २.८**
हे अग्नि! मैं तेरी सुखद छाया में रहूँ ।

१०१४. **विश्वो देवस्य नेतुर्मर्तो बुरीत सख्यम् । ११.६७**
सभी मनुष्य प्रेरक परमात्मा की मित्रता चाहें ।

१०१५. **सं देवानां सुमतौ यज्ञियानाम् । ८.१५**
हम पूज्य देवों की कृपादृष्टि में रहें ।

१०१६. **सं वां मनांसि सं व्रता । १२.५८**
मैं तुम्हारे मन और कर्म समन्वित करता हूँ ।

१०१७. **सचस्वा नः स्वस्तये । ३.२४**
तुम कल्याण के लिए हमें प्राप्त हो ।

१०१८. **स नो बोधि श्रुधी हवम् । ३.२६**
हे अग्नि! तुम हमारी प्रार्थना सुनो और हमें ज्ञान दो ।

१०१९. **स नो भग पुर एता भवेह । ३४.३८**
हे भगवन्! तुम हमारे नेता बनो ।

१०२०. **समहमायुषा सं वर्चसा - - - ग्मिषीय** । ३.१९
मैं दीर्घायु और वर्चस् से युक्त होऊँ ।

१०२१. **समु चित्तान्याकरम्** । १२.५८
मैं तुम्हारे चित्त को समन्वित करता हूँ ।

१०२२. **सा विश्वायुः सा विश्वकर्मा सा विश्वधायाः** । १.४
वह ब्रह्मशक्ति संसार को आयु देती है, संसार की कर्त्री और संसार की धारक है ।

१०२३. **सुक्रतुः कृपा स्वः** । ४.२५
सोम शुभ विचारों वाला है । उसकी कृपा से सुख होता है ।

१०२४. **सुम्नं देवभक्तं यविष्ठ** । १२.२६
हे नित्य-युवा अग्नि ! तुम देवभक्त को सुख देते हो ।

१०२५. **सुम्नाय नूनमीमहे सखिभ्यः** । ३.२६
हम सुख के लिए मित्रों के साथ तुम्हारी प्रार्थना करते हैं ।

१०२६. **स्वस्ति ते देव सोम सुत्यामशीय** । ५.७
हे देव सोम ! हम सकुशल सोमरस प्राप्त करें ।

१०२७. **स्वस्ति मेऽस्मिन् पथि देवयाने भूयात्** । ५.३३
इस देवयान मार्ग पर मेरा कुशल हो ।

(न) व्रत, दीक्षा

१०२८. **अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि।** १.५
हे व्रतपति अग्नि ! मैं व्रत का पालन करूँगा ।

१०२९. **अग्ने व्रतपते व्रतम् अचारिषं तदशकम्** । २.२८
हे व्रतपति अग्नि ! मैने व्रत किया और उसे पूरा कर सका ।

१०३०. **अग्ने व्रतपाः** । ५.४०
हे अग्नि ! तुम व्रत के रक्षक हो ।

१०३१. **अनु मे दीक्षां दीक्षापतिरमंस्त** । ५.४०
दीक्षापति अग्नि ने मुझे दीक्षा की अनुमति दी।

१०३२. अनु मे दीक्षां दीक्षापतिर्मन्यताम् । ५.६
दीक्षापति अग्नि मुझे दीक्षा के लिए अनुमति दे।

१०३३. इन्धे त्वा दीक्षितो अहम् । २०.२४
मैं दीक्षित होकर तुझ अग्नि को प्रज्ज्वलित करता हूँ ।

१०३४. दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम् । १९.३०
दीक्षा से मनुष्य दक्षता प्राप्त करता है ।

१०३५. यथायथं नौ व्रतपते व्रतानि । ५.४०
हे व्रतपति अग्नि! हम दोनों अपने-अपने नियम का पालन करें ।

१०३६. व्रतं कृणुत । ४.११
तुम सब व्रत करो ।

१०३७. व्रतं च मे - - - तपश्च मे । १८.२३
मैं व्रत और तप करूँ ।

१०३८. व्रतं च श्रद्धां चोपैमि । २०.२४
मैं व्रत और श्रद्धा को अपनाता हूँ ।

१०३९. व्रतेन दीक्षामाप्नोति । १९.३०
व्रत से मनुष्य दीक्षा को प्राप्त करता है ।

(प) विविध

१०४०. इडाभिर्भक्षानाप्नोति । १९.२९
मनुष्य इडा (पृथिवी) से भक्ष्य वस्तुएं प्राप्त करता है ।

१०४१. ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे । १७.६६
हे ईश! हमारे मनुष्यों और पशुओं को बल दो ।

१०४२. ओं प्रतिष्ठ । २.१३
हे ओम्-रूप परमात्मन् ! तुम हमारे हृदय में प्रतिष्ठित होओ ।

१०४३. कविः कविमियक्षसि प्रयज्यो । ३३.५५
हे अध्वर्यु! तुम कवि हो और क्रान्तदर्शी वायु के लिए यज्ञ करना चाहते हो।

१०४४. कवे द्युमन्तं समिधीमहि । २.४
हे क्रान्तदर्शी अग्नि! तेजस्वी तुमको हम प्रदीप्त करते हैं ।

१०४५. तव प्रणीती - - - आ विवासन्ति कवयः सुयज्ञाः । ७.३५
हे इन्द्र! तेरी स्वीकृति से क्रान्तदर्शी यज्ञकर्ता तेरी सेवा करना चाहते हैं ।

१०४६. नमस्ते अस्तु । ३.६३
तुम्हें नमस्ते ।

१०४७. पुरो अग्निर्भवेह । १७.६६
हे अग्नि! तुम अग्रगामी होओ ।

१०४८. प्रणवैः शस्त्राणां रूपम् । १९.२५
ओंकार से ऋचाओं का रूप ज्ञात होता है ।

१०४९. प्राचीमनु प्रदिशं प्रेहि विद्वान् । १७.६६
हे विद्वान् अग्नि! तुम पूर्व दिशा की ओर चलो।

१०५०. ब्रह्मणे ब्राह्मणम् । ३०.५
ज्ञान-संबन्धी कर्मों के लिए ब्राह्मण को उत्पन्न किया।

१०५१. यशसे श्रियै शिखा । १९.९२
शिखा (चोटी) यश और श्री के लिए है ।

१०५२. विश्वा आशा दीद्यानो वि भाहि । १७.६६
हे अग्नि! सभी दिशाओं को प्रकाशित करते हुए चमको ।

१०५३. वेदोऽसि । २.२१
हे जीव! तुम वेदरूप हो ।

१०५४. सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा । ७.१४
वह प्राचीन संस्कृति विश्वव्यापी थी ।

१०५५. सुरा त्वमसि शुष्मिणी । १९.७
तुम बलदायक पेय हो ।

(३) नीति-शिक्षा

(क) नीति-शिक्षा

१०५६. अत्रा जहीमोऽशिवा ये असन् । ३५.१०
जो अशुभ व्यक्ति हैं, उन्हें हम यहाँ छोड़ते हैं ।

१०५७. अपेत वीत वि च सर्पत । १२.४५
हटो, जाओ और चारों ओर फैलो ।

१०५८. अयं वेनश्चोदयत् । ७.१६
यह प्रिय सोम प्रेरणा देता है ।

१०५९. अश्मन्वती रीयते सं रभध्वम् । ३५.१०
यह पत्थरों वाली संसाररूपी नदी बह रही है, इसे पार होने के लिए प्रयत्न करो।

१०६०. अस्मिन् बर्हिषि मादयध्वम् । २.१८
हे देवो! इस यज्ञ में आनन्दित होओ ।

१०६१. अस्मे वर्चांसि सन्तु वः । ९.२२
हमें तुम्हारा तेज प्राप्त हो ।

१०६२. आत्मानं मे पाहि । १४.१७
तुम मेरी आत्मा की रक्षा करो ।

१०६३. उत्क्राम महते सौभगाय । ११.२१
महान् सौभाग्य के लिए उठो और प्रयत्न करो ।

१०६४. उत्तिष्ठत प्रतरता सखायः । ३५.१०
हे मित्रो! उठो और संसाररूपी नदी पार कर जाओ ।

१०६५. उर्वन्तरिक्षमन्वेमि । १.७, १.११
मैं विशाल अन्तरिक्ष में जा रहा हूँ ।

१०६६. कर्म च मे शक्तिश्च मे । १८.१५
मुझे पुरुषार्थ और शक्ति प्राप्त हो ।

१०६७. **ज्योतिषा बाधते तमः । ३३.९२**
अग्नि अपने प्रकाश से अन्धकार को नष्ट करता है ।

१०६८. **तीव्रां तीव्रेण, अमृताम् अमृतेन । १९.१**
मैं तीव्र को तीव्र से और अमृत को अमृत से मिलाता हूँ ।

१०६९. **निरस्तः शण्डः । ७.१३**
मैंने नपुंसक या निकम्मे व्यक्ति को हटा दिया ।

१०७०. **निर्वरुणस्य पाशान्मुच्ये । ५.३९**
मैं वरुण के बन्धनों से मुक्त होऊँ ।

१०७१. **पूर्णं च मे पूर्णतरं च मे । १८.१०**
मुझे अधिक से अधिक प्राप्त हो ।

१०७२. **पृथिव्यामाशा दिश आ पृण । ११.६३**
तुम पृथिवी पर सभी दिशाओं को पूर्ण करो ।

१०७३. **मधुमतीं मधुमता सृजामि । १९.१**
मैं मधुर को मधुर से मिलाता हूँ ।

१०७४. **मा त्वा दभन् । ५.३९**
कोई तुम्हें दबा न सके ।

१०७५. **वरिमा च मे प्रथिमा च मे । १८.४**
मुझे गौरव और प्रसिद्धि प्राप्त हों ।

१०७६. **विभु च मे प्रभु च मे । १८.१०**
मुझे व्यापकता और प्रभुत्व प्राप्त हों ।

१०७७. **वि राजति विराजा ज्योतिषा सह । ३८.२७**
इन्द्र विराट् ज्योति के साथ प्रकाशित होता है ।

१०७८. **वृद्धं च मे वृद्धिश्च मे । १८.४**
मुझे धनादि की समृद्धि और ज्ञान आदि की वृद्धि प्राप्त हो ।

१०७९. **शिवान् वयमुत्तरेमाभि वाजान् । ३५.१०**
भद्र व्यक्तियों को साथ लेकर हम शक्ति प्राप्त करें ।

१०८०. संज्ञानमसि कामधरणम् । १२.४६
तुम कामनाओं के पूरक संज्ञान (सद्भाव) हो ।

१०८१. सं ज्योतिषा ज्योतिः । ३८.१६
ज्योति से ज्योति मिले ।

१०८२. संस्रवभागा स्थेषा बृहन्तः - - - देवाः । २.१८
देवों का भाग घृत है । वे यज्ञिय हव्य से महान् हैं ।

१०८३. सुवीर्यस्य पतयः स्याम । २०.५१
हम श्रेष्ठ पराक्रम के स्वामी हों ।

१०८४. स्वाद्वीं त्वा स्वादुना - - - सृजामि । १९.१
मैं स्वादिष्ट को स्वादिष्ट से मिलाता हूँ ।

(ख) निर्भयता

१०८५. अभयं नः पशुभ्यः । ३६.२२
हमारे पशुओं के लिए अभय हो ।

१०८६. यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु । ३६.२२
हे ईश ! जहाँ-जहाँ से हानि संभव है, वहाँ से हमें निर्भयता दो ।

१०८७. शं नः कुरु प्रजाभ्यः । ३६.२२
हे ईश ! हमारी प्रजाओं का कल्याण करो ।

(ग) मित्रता

१०८८. मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । ३६.१८
हम परस्पर मित्र की दृष्टि से देखें ।

१०८९. मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् । ३६.१८
सारे प्राणी मुझे मित्र की दृष्टि से देखें ।

१०९०. मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । ३६.१८
मैं सब प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखूँ ।

(घ) पुष्टि

१०९१. **अपः पिन्वौषधीर्जिन्व** । १४.८
जल और ओषधियों को पुष्ट करो ।

१०९२. **क्षत्रं दृंह** । ५.२७
क्षत्रशक्ति को दृढ़ करो ।

१०९३. **चक्षुस्त आ प्यायताम्** । ६.१५
तुम्हारे नेत्र पुष्ट हों ।

१०९४. **दृंहस्व पृथिव्याम्** । ५.२७
तुम पृथिवी पर दृढ़ बनो ।

१०९५. **प्राणं मे तर्पयत** । ६.३१
हे देवो! मेरे प्राणों को तृप्त करो ।

१०९६. **प्राणस्त आ प्यायताम्** । ६.१५
तुम्हारे प्राण पुष्ट हों ।

१०९७. **ब्रह्म दृंह** । ५.२७
ब्रह्मशक्ति को दृढ करो ।

१०९८. **मनस्त आ प्यायताम्** । ६.१५
तुम्हारा मन पुष्ट हो ।

१०९९. **मनो मे जिन्व** । १४.१७
हे ईश! मेरे मन को जीवनी शक्ति दो ।

११००. **मनो मे तर्पयत** । ६.३१
हे देवो! मेरे मन को तृप्त करो ।

११०१. **यदास्थितं तत् त आप्यायताम्** । ६.१५
जो तुम्हारा मनोरथ है, वह पूर्ण हो ।

११०२. **वाक् त आ प्यायताम्** । ६.१५
तुम्हारी वाणी पुष्ट हो ।

११०३. वाचं मे तर्पयत । ६.३१
हे देवो! मेरी वाणी को तृप्त करो ।

११०४. वाचं मे पिन्व । १४.१७
हे देवो! मेरी वाणी को पुष्ट करो ।

११०५. श्रोत्रं त आ प्यायताम् । ६.१५
तेरे कान पुष्ट हों ।

११०६. श्रोत्रं मे तर्पयत । ६.३१
हे देवो! मेरे कानों को तृप्त करो ।

११०७. सं ते मनो मनसा (गच्छताम्) । ६.१८
तेरा मन देवों के मन से मिला रहे ।

११०८. सं प्राणः प्राणेन गच्छताम् । ६.१८
तेरे प्राण देवों की प्राण-शक्ति से मिले रहें ।

११०९. सुपोषाः पोषैः । ८.५३
तुम पोषणों से संपुष्ट हो ।

१११०. सुप्रजाः प्रजाभिः स्याम । ८.५३
हम सन्तान प्राप्त कर सुसन्तान वाले हों ।

(ङ) पाप-पापी

११११. अपहतं रक्षः । १.९
हमने राक्षसों (पापियों) को नष्ट कर दिया ।

१११२. अपहता असुरा रक्षांसि वेदिषदः । २.२९
हमने यज्ञवेदी पर विद्यमान असुरों और राक्षसों को नष्ट कर दिया ।

१११३. अपाधमदभिशस्तीः । ३३.९५
इन्द्र ने दोषारोपों को दूर कर दिया ।

१११४. अपाररुं पृथिव्यै देवयजनाद् वध्यासम् । १.२६
पृथिवी के हित के लिए यज्ञभूमि से शत्रु को नष्ट करें ।

११११५. अररुषो धूर्तिः (मा) प्रणङ् मर्त्यस्य । ३.३०
कृपण की कुचेष्टा मनुष्यों को हानि न पहुँचावे ।

१११६. अररो दिवं मा पप्तः । १.२६
हे शत्रु ! तुम द्युलोक में न जा सको ।

१११७. अव देवैर्देवकृतमेनोऽयासिषम् । ३.४८
हमने देवों के प्रति किए पाप देवयज्ञादि से नष्ट किए ।

१११८. अवधूतं रक्षः । १.१४
हमने राक्षसों को भगा दिया ।

१११९. अवधूता अरातयः । १.१४
हमने शत्रुओं को भगा दिया ।

११२०. अव मर्त्यैर्मर्त्यकृतम् । ३.४८
हमने मनुष्यों के प्रति किए पाप मानवीय ढंग से नष्ट किए ।

११२१. असुरा - - - अग्निष्टान् लोकात् प्रणुदात्यस्मात् । २.३०
अग्नि असुरों को इस लोक से भगाता है ।

११२२. इदमहं रक्षोऽधमं तमो नयामि । ६.१६
मैं राक्षसों को घोर अन्धकार में डालता हूँ ।

११२३. इदमहं रक्षोऽभि तिष्ठामि । ६.१६
मैं राक्षसों को रौंदता हूँ ।

११२४. इदमहं रक्षोऽव बाधे । ६.१६
मैं राक्षसों को हराता हूँ ।

११२५. उरुष्या णो अघायतः समस्मात् । ३.२६
हे ईश ! सभी पापियों से हमारी रक्षा करो ।

११२६. दुःशंसो मर्त्यो रिपुः । २०.८२
दुर्भावना वाला व्यक्ति शत्रु है ।

११२७. द्विषतो वधोऽसि । १.२८
तुम शत्रु के नाशक हो ।

११२८. धूर्रसि धूर्व धूर्वन्तम् । १.८
हे ईश! तुम हिंसक हो । हानि पहुँचाने वाले को नष्ट करो ।

११२९. निरस्तं रक्षः । ६.१६
राक्षसों को हमने भगा दिया ।

११३०. निष्टप्तं रक्षः । १.७
हमने राक्षसों को तपा कर नष्ट कर दिया ।

११३१. निष्टप्ता अरातयः । १.७
हमने शत्रुओं को तपा कर नष्ट कर दिया ।

११३२. प्रत्यस्तं नमुचेः शिरः । १०.१४
हमने नमुचि (अदाता) को सिर काट कर फेंक दिया ।

११३३. प्रत्युष्टं रक्षः प्रत्युष्टा अरातयः । १.७
हमने राक्षसों और शत्रुओं को जला दिया ।

११३४. बधान देव सवितः - - - शतेन पाशैर्योऽस्मान् द्वेष्टि । १.२५
हे देव सविता! जो हमसे द्वेष करता है, उसे सैकड़ों पाशों से बाँधो ।

११३५. भ्रातृव्यस्य वधाय । १.१७
तुम शत्रु के नाश के लिए हो।

११३६. यदेनश्चकृमा वयमिदं तदवयजामहे । ३.४५
हमने जो पाप किया है, उसे यज्ञ से नष्ट करते हैं ।

११३७. यूयमिन्द्रमवृणीध्वं वृत्रतूर्ये । १.१३
तुमने वृत्र (पापी) के नाश के लिए इन्द्र को चुना ।

११३८. योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्व । १.८
जो हमें हानि पहुँचाता है, उसको नष्ट करो ।

(४) राजनीतिशास्त्र

(क) राजधर्म

११३९. अग्निं रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय । १३.१
अग्नि (राजा) को योग-क्षेम, प्रजा-संरक्षण और पराक्रम के लिए अभिषिक्त करते हैं ।

११४०. अग्नेः साम्राज्येनाभिषिञ्चामि । १८.३७
अग्नि के तुल्य साम्राज्य के लिए तुम्हारा अभिषेक करते हैं ।

११४१. अग्नेर्भ्राजसा, सूर्यस्य वर्चसा, इन्द्रस्येन्द्रियेण । १०.१७
राजा अग्नि के तेज, सूर्य की कान्ति और इन्द्र के पराक्रम से युक्त हो ।

११४२. अग्नेष्ट्वा तेजसा सादयामि । १३.१३
राजा को अग्नि के तेज से युक्त करता हूँ ।

११४३. अच्छिन्नपत्राः प्रजा अनुवीक्षस्व । १३.३०
प्रजा के किसी अंग को क्षति न पहुँचाते हुए उनकी देखभाल करो ।

११४४. अति निहो अति स्रिधोऽत्यचित्तिमत्यरातिमग्ने । २७.६
हे अग्नि (राजा) ! तुम घातकों, दुर्जनों, असावधानी और शत्रुओं से बचो ।

११४५. अथा न इन्द्र इद् विशोऽसपत्नाः समनसस्करत् । ७.२५
इन्द्र (राजा) हमारी प्रजा को शत्रुरहित और सांमनस्य वाला करे ।

११४६. अधस्पदं कृणुतां ये पृतन्यवः । १५.५१
आक्रमणकारियों को पैर के नीचे रौंद दो ।

११४७. अधिपतये स्वाहा । ९.२०
अधिपति के लिए यह आहुति है ।

११४८. अनाधृष्टाः सीदत सहौजसः । १०.४
अधृष्य होकर तेजस्विता के साथ रहो ।

११४९. अनाधृष्यो जातवेदा अनिष्टृतः । २७.७
अग्नि अधृष्य और अजेय है ।

११५०. **अनु त्वा दिव्या वृष्टिः सचताम्** । १३.३०
तुम्हें दिव्य वृष्टि प्राप्त हो ।

११५१. **अभयानि कृण्वन्** । ११.१५
तुम सबको निर्भय करो ।

११५२. **अमृतं सम्राट्** । २०.५
सम्राट् अमर होता है ।

११५३. **अयमग्निः सत्पतिश्चेकितानः** । १५.५१
यह अग्नि (राजा) सज्जनों का स्वामी और विद्वान् है ।

११५४. **अयमग्निर्वीरतमो व्योधाः** । १५.५२
यह अग्नि (राजा) श्रेष्ठ, वीर और शक्तिशाली है।

११५५. **अव्यथायै त्वा स्वधायै त्वा** । १०.२१
हम कष्ट-निवारण और अन्नादि के लिए तुझे चुनते हैं ।

११५६. **अस्मभ्यं सहवीरां रयिं दाः** । २७.६
हे ईश! हमें वीर पुत्रों से युक्त ऐश्वर्य दो ।

११५७. **अस्मे नृम्णानि धारय** । ३८.१४
हमें धन दो ।

११५८. **अस्मै विश एष वोऽमी राजा** । ९.४०, १०.१८
यह प्रजा है। यह तुम्हारा राजा है ।

११५९. **आत्मा क्षत्रमुरो मम** । २०.७
क्षात्र-धर्म मेरी आत्मा और हृदय है ।

११६०. **आविष्कृणुष्व दैव्यान्यग्ने** । १३.१३
हे अग्नि (राजा)! तुम अपने दिव्य गुणों को प्रकट करो ।

११६१. **इन्द्रं प्रक्रीडेन** । ३९.९
इन्द्र (धनवान्) को मनोरंजन से वश में करे ।

११६२. **इन्द्रश्च सम्राट् वरुणश्च राजा** । ८.३७
इन्द्र सम्राट् है और वरुण राजा है ।

११६३. इन्द्रस्य त्वौजसा सादयामि । १३.१४
इन्द्र के तेज से तुझे राजगद्दी पर बैठाता हूँ ।

११६४. इन्द्रस्य वज्रोऽसि । १०.२१, १०.२८
तुम इन्द्र के वज्र के तुल्य हो ।

११६५. इन्द्रस्य वार्त्रघ्नमसि । १०.८
तुम इन्द्र की शत्रुनाशक शक्ति हो ।

११६६. इन्द्राय त्वा वसुमते । ६.३२
तुझ धनवान् इन्द्र के लिए यह आहुति है ।

११६७. इन्द्रोऽसि विशौजाः । १०.२८
तुम इन्द्र हो । प्रजा पर तुम्हारा प्रभुत्व है ।

११६८. इमं देवा असपत्नं सुवध्वम् । ९.४०, १०.१८
हे देवो! तुम इस राजा को शत्रुरहित करो ।

११६९. इयं ते राड् । १८.२८
यह तुम्हारा राज्य है ।

११७०. इयं ते राड् यन्ताऽसि यमनः । ९.२२
यह तुम्हारा राज्य है । तुम नियन्ता और स्वयं संयमी हो ।

११७१. इषे नृपतिं तेज आनट् । ३३.११
अन्नादि की समृद्धि के लिए राजा में तेज व्याप्त हुआ।

११७२. इहैवाग्ने अधि धारया रयिम् । २७.४
हे अग्नि! तुम यहीं पर ऐश्वर्य रखो ।

११७३. ईशायै मन्युं राजानम् । २१.५७
देवों ने स्वामित्व के लिए राजा में क्रोध रखा ।

११७४. उग्रं लोहितेन । ३९.९
उग्र को उग्रता (दण्ड) से वश में करें ।

११७५. उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च धुनिश्च । ३९.७
राजा उग्र , भयंकर , गर्जन करने वाला और शत्रुओं को कंपाने वाला हो ।

११७६. उदग्ने तिष्ठ प्रत्या तनुष्व । १३.१२
हे अग्नि! (राजा)! तुम उठो और चारों ओर फैलो ।

११७७. उन्नयामि स्वाँ अहम् । ११.८२
मैं आत्मीय लोगों को उन्नत करता हूँ ।

११७८. ऊर्जे त्वा - - - प्रजानां त्वाऽऽधिपत्याय । १८.२८
तुझे पराक्रम और प्रजा के आधिपत्य के लिए प्रतिष्ठित करते हैं ।

११७९. ऊर्ध्वो भव प्रति विध्य । १३.१३
ऊपर उठो और शत्रुओं को बींध दो ।

११८०. ओजो न वीर्यं सहः । २८.५
तुममें ओज, पराक्रम और जीतने की शक्ति हो ।

११८१. कृष्यै त्वा क्षेमाय त्वा । ९.२२
कृषि की उन्नति और कल्याण के लिए तुझे चुनते हैं ।

११८२. क्षत्रमग्ने सुयममस्तु तुभ्यम् । २७.४
हे अग्नि (राजा) ! क्षात्रधर्म तेरे लिए रक्षाकारी हो ।

११८३. क्षत्रस्य योनिरसि, क्षत्रस्य नाभिरसि । १०.८, २०.१
तुम क्षात्र-धर्म के मूल और क्षात्र धर्म के केन्द्र हो ।

११८४. क्षत्रस्य योनिरसि । १०.२६
तुम क्षात्रधर्म के उद्‌गम स्थान हो ।

११८५. क्षत्राणां क्षत्रपतिरेधि । १०.१७
तुम क्षत्रियों के क्षत्रपति होओ ।

११८६. क्षत्राय राजन्यम् । ३०.५
क्षात्रधर्म (प्रजासंरक्षण) के लिए राजा को बनाया गया है ।

११८७. क्षत्रेणाग्ने स्वायुः सं रभस्व । २७.५
हे अग्नि (राजा)! तुम अपने जीवन को क्षात्रधर्म से प्रारम्भ करो ।

११८८. गणानां त्वा गणपतिं हवामहे । २३.१९
तुम गणों के गणपति हो । तुम्हें हम पुकारते हैं ।

११८९. **गणान् मे तर्पयत** । ६.३१
तुम मेरे गणों को तृप्त रखो ।

११९०. **गणा मे मा वि तृषन्** । ६.३१
मुझसे गण असन्तुष्ट न हों ।

११९१. **जङ्घाभ्यां पद्भ्यां धर्मोऽस्मि** । २०.९
मैं जंघा और पैरों के द्वारा धर्मरूप हूँ ।

११९२. **जनराडसि रक्षोहा** । ५.२४
तुम राक्षसों को मारने वाले जनप्रिय राजा हो ।

११९३. **जामिमजामिं प्र मृणीहि शत्रून्** । १३.१३
तुम अपने और पराए सभी शत्रुओं को नष्ट करो ।

११९४. **जिह्वा मे भद्रं वाङ् महः** । २०.६
मेरी जिह्वा में मधुरता हो और वाणी में तेज ।

११९५. **जेतारमपराजितम्** । २८.२
राजा विजेता और अजेय हो ।

११९६. **तवेव मे त्विषिर्भूयात्** । १०.५
तुम्हारी (राजा की) तरह मेरी भी कान्ति हो ।

११९७. **तस्मै विशः समनमन्त पूर्वीः** । ८.४६
उस इन्द्र को सभी उत्तम प्रजा ने प्रणाम किया ।

११९८. **तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभि षिञ्चामि** । २०.३
तेज और ब्रह्मवर्चस् के लिए मैं तेरा अभिषेक करता हूँ ।

११९९. **त्रातारमिन्द्रमकृणोरवध्यम्** । ८.४६
रक्षक इन्द्र को विश्वकर्मा ने अवध्य बनाया है ।

१२००. **त्रीन् समुद्रान् समसृपत्** । १३.३१
उसका राज्य तीन समुद्रों तक फैला।

१२०१. **त्वं राजाऽसि** । ७.३८
हे इन्द्र! तुम राजा हो ।

१२०२. त्वयाऽयं वृत्रं वधेत् । १०.८
तेरे सहयोग से यह यजमान शत्रु को मारे ।

१२०३. देवा देवैरवन्तु मा । २०.११
देवगण अन्य देवों के साथ मेरी रक्षा करें ।

१२०४. धर्माय सभाचरम् । ३०.६
धर्म (न्याय) के लिए सभा के सदस्यों को बनाया गया है ।

१२०५. धर्मासि सुधर्म । ३८.१४
तुम राष्ट्र के धारक हो और सच्चरित्र हो ।

१२०६. ध्रुवस्तिष्ठाविचाचलिः । १२.११
हे राजा! तुम स्थिर और निश्चल भाव से रहो ।

१२०७. ध्रुवोऽसि धरुणः । ९.२२
तुम स्थिर हो और धारक हो ।

१२०८. नाभिर्मे चित्तं विज्ञानम् । २०.९
विज्ञान मेरा चित्त और नाभि है ।

१२०९. नाराशंसेन तेजसा वेतु । २८.२
जन-हितकारी तेज से वह शत्रुओं पर आक्रमण करे ।

१२१०. नीचा तं धक्ष्यतसं न शुष्कम् । १३.१२
शत्रु को सूखे पेड़ की तरह जला दो ।

१२११. न्यमित्राँ ओषतात् तिग्महेते । १३.१२
हे तीक्ष्ण अस्त्रधारी राजा! तुम शत्रुओं को जला दो ।

१२१२. पथो देवयानान् कृणुध्वम् । १५.५३
तुम देवयान वाला मार्ग बनाओ ।

१२१३ पृष्टीर्मे राष्ट्रम् । २०.८
राष्ट्र मेरी पीठ है ।

१२१४. प्रजां दृंह । ५.२७
तुम प्रजा को सुदृढ़ करो ।

१२१५. प्रजां पुष्टिं वर्धयमानः । ९.२५
प्रजा को और पोषण को बढ़ाता हुआ राजा घूमता है ।

१२१६. प्रजां मे तर्पयत । ६.३१
हे देवो! मेरी प्रजा को तृप्त करो ।

१२१७. प्रजाः पाहि । ७.१७
हे राजन् ! तुम प्रजा की रक्षा करो ।

१२१८. प्रजास्त्वम् अनुप्राणिहि । ४.२५
हे राजन् ! तुम प्रजा में जीवनशक्ति भरो ।

१२१९. प्रजास्त्वाऽनुप्राणन्तु । ४.२५
हे राजन् ! प्रजा तुझे शक्ति दे ।

१२२०. प्रति क्षत्रे प्रति तिष्ठामि राष्ट्रे । २०.१०
मैं क्षात्रधर्म में और राष्ट्र में प्रतिष्ठित हूँ ।

१२२१. प्रति द्यावापृथिव्योः प्रति तिष्ठामि यज्ञे ।२०.१०
मैं द्यावापृथिवी और यज्ञ में प्रतिष्ठित हूँ ।

१२२२. प्रति स्पशो वि सृज तूर्णितमः । १३.११
हे शीघ्र कार्यकर्ता राजन् ! तुम दुष्टों के लिए अपने गुप्तचर भेजो ।

१२२३. प्रतूर्वन्नेहि - - अवक्रामन् अशस्तीः । ११.१५
हे राजन् । तुम शत्रुओं को कुचलते हुए शीघ्र आवो ।

१२२४. प्रत्यङ्गेषु प्रति तिष्ठाम्यात्मन् । २०.१०
मै राष्ट्र के प्रत्येक अंग में और स्वयं में प्रतिष्ठित हूँ ।

१२२५. प्रत्यौहतामश्विना मृत्युमस्मात् । २७.९
अश्विनी इसकी मृत्यु को दूर भगावें ।

१२२६. प्रमुञ्चन् मानुषीर्भियः । २७.७
राजा मनुष्यों के भय से मुक्त होकर रहे ।

१२२७. बलाय श्रियै यशसेऽभि षिञ्चामि । २०.३
मैं बल, श्री और यश के लिए तेरा अभिषेक करता हूँ ।

१२२८. बहुकार श्रेयस्कर भूयस्कर । १०.२८

हे राजन् । तुम बहुत, श्रेयस्कर और बार-बार करने वाले हो ।

१२२९. बाहू मे बलमिन्द्रियम् । २०.७

बल और शारीरिक शक्ति मेरे बाहु हैं ।

१२३०. बृहस्पते अभिशस्तेरमुञ्चः । २७.९

हे बृहस्पति! तुम मुझे निन्दा और लोकापवाद से बचाओ ।

१२३१. बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभि षिञ्चामि । ९.३०

मैं तुम्हें बृहस्पति के साम्राज्य से अभिषिक्त करता हूँ ।

१२३२. बृहस्पते सवितर्बोधयैनम् । २७.८

हे ज्ञान के प्रेरक बृहस्पति! इस राजा को प्रबुद्ध करो ।

१२३३. भवा पायुर्विशो अस्या अदब्धः । १३.११

हे राजन् ! तुम अक्षत रहते हुए इस प्रजा के रक्षक होओ ।

१२३४. भुवनस्य पतये स्वाहा । ९.२०

संसार के स्वामी के लिए यह आहुति है ।

१२३५. भुवो यज्ञस्य रजसश्च नेता । १३.१५

राजा संसार, यज्ञ और लोकों को नेता होता है ।

१२३६. मनो मन्युः स्वराड् भामः । २०.६

क्रोध मेरा मन है और उत्साह मेरा स्वराज्य है ।

१२३७. मरुतो बलेन । ३९.९

प्रजाजनों को बल से वश में करो ।

१२३८. महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय । ९.४०, १०.१८

महान् क्षात्रधर्म और महान् श्रेष्ठता के लिए देव तुझे प्रेरणा दें ।

१२३९. महते जानराज्याय । ९.४०, १०.१८

महान् जनराज्य के लिए देव तुझे प्रेरणा दें ।

१२४०. महि क्षत्रं क्षत्रियाय दधतीः । १०.४

अभिषेक का जल राजा में महान् क्षात्रधर्म स्थापित करता है ।

१२४१. महि क्षत्रं क्षत्रियाय वन्वानाः । १०.४
अभिषेक के जल राजा को महान् क्षात्रशक्ति देते हैं ।

१२४२. मा किष्टे व्यथिरा दधर्षीत् । १३.११
तुम्हारा शत्रु तुम्हें कभी दबा न सके ।

१२४३. मा त्वद् राष्ट्रमधिभ्रशत् । १२.११
तुम्हारा राष्ट्र कभी अवनत न हो ।

१२४४. मा त्वा नि क्रन् पूर्वचितो निकारिणः । २७.४
पूर्वपरिचित हानिकारक व्यक्ति तुझे हानि न पहुँचा सकें ।

१२४५. मा त्वा हिंसीत् । २०.१
कोई तुझे मार न सकें ।

१२४६. मा मा हिंसीः । २०.१
तुम मुझे मत मारो ।

१२४७. मित्रं मे सहः । २०.६
विजय (जीत) मेरा मित्र है ।

१२४८. मित्रं सौव्रत्येन । ३९.९
मित्र को सद्भाव से वश में करे ।

१२४९. मित्रेणाग्ने मित्रधेये यतस्व । २७.५
हे अग्नि (राजा)! तुम मित्र के साथ मित्रता का व्यवहार करो ।

१२५०. मृत्योः पाहि विद्योत् पाहि । २०.२
तुम हमें मृत्यु से बचाओ, विद्युत् से बचाओ।

१२५१. मोग्रं चेत्तारमधिराजमक्रन् । ३४.४६
देवगण मुझे तेजस्वी, ज्ञानवान् और महाराज बनावें ।

१२५२. यन्तासि यमनः । १८.२८
हे राजन् ! तुम नियन्ता और स्वयं संयमी हो ।

१२५३. यशो मुखम् । २०.५
यश मेरा मुख है ।

१२५४. रथीतमं रथीनाम् । १७.६१
मैं महारथियों में सर्वश्रेष्ठ महारथी हूँ ।

१२५५. रय्यै त्वा पोषाय त्वा । ९.२२
हम ऐश्वर्य और पोषण के लिए तुझे चाहते हैं ।

१२५६. राजन् विश्वास्त्वं प्रजा उपावरोह । ६.२६
हे राजन् ! तुम सारी प्रजा पर आधिपत्य रखो ।

१२५७. राजा मे प्राणः । २०.५
राजा मेरे प्राण के तुल्य है ।

१२५८. रुद्रं दौर्व्रत्येन । ३९.९
दुष्ट को कठोरता से वश में करे ।

१२५९. रुद्रोऽसि सुशेवः । १०.२८
हे राजन्! तुम रुद्ररूप हो और सुसेव्य हो ।

१२६०. रेडसि । ६.१८
हे राजन्! तुम हिंसक हो ।

१२६१. वरुणः ‥ साम्राज्याय सुक्रतुः । १०.२७
सत्कर्म करने वाला वरुण साम्राज्य के लिए प्रजा में प्रतिष्ठित हुआ ।

१२६२. वर्धयैनं महते सौभगाय । २७.८
हे बृहस्पति! इसको महान् सौभाग्य के लिए बढ़ाओ ।

१२६३. वाजानां सत्पतिं पतिम् । १७.६१
इन्द्र (राजा) बल का स्वामी और सज्जनों का पालक है ।

१२६४. विराडग्ने क्षत्रभृद् दीदिहीह । २७.७
हे विराट् अग्नि! तुम क्षत्रियों के पोषक होकर यहाँ चमको ।

१२६५. विराड् ज्योतिरधारयत् । १३.२४
सम्राट् तेजस्वी हुआ ।

१२६६. विशस्त्वा सर्वा वाञ्छन्तु । १२.११
सारी प्रजा तुझे चाहे ।

१२६७. विशि राजा प्रतिष्ठितः । २०.९
राजा प्रजा में प्रतिष्ठित होता है अर्थात् राजा का आधार प्रजा है ।

१२६८. विशो मेऽङ्गानि सर्वतः । २०.८
सभी ओर फैली हुई प्रजा ही मेरे अंग हैं ।

१२६९. विश्वं ज्योतिर्यच्छ । १३.२४
विश्व को ज्योति दो ।

१२७०. विश्व एनमनु मदन्तु देवाः । २७.८
सभी देवता इसको प्रोत्साहित करें ।

१२७१. विश्वास्त्वां प्रजा उपावरोहन्तु । ६.२६
सारी प्रजा तेरी ओर झुके ।

१२७२. विश्वा ह्यग्ने दुरिता सहस्व । २७.६
हे अग्नि (राजा)! तुम सारे पापों को जीतो ।

१२७३. वीर्यायान्नाद्यायाभि षिञ्चामि । २०.३
मैं पराक्रम और अन्न-समृद्धि के लिए तुम्हारा अभिषेक करता हूँ ।

१२७४. वैश्वानरज्योतिर्भूयासम् । २०.३३
मैं सर्वजन-हितकारी ज्योति होऊँ ।

१२७५. शवो यज्ञेषु विप्रराज्ये । ३३.८३
विप्रराज्य में यज्ञादि पर बल होता है ।

१२७६. शिरो मे श्रीः । २०.५
ऐश्वर्य ही मेरा शिर है ।

१२७७. शिवं प्रजाभ्यः । ११.२८
प्रजा का कल्याण हो ।

१२७८. शिवेभिरद्य परि पाहि नो वृधे । २७.७
तुम वृद्धि के लिए शुभ होकर हमारी रक्षा करो ।

१२७९. संशितं चित् संतरां शिशाधि । २७.८
तुम तीक्ष्ण को और अधिक तीक्ष्ण करो ।

१२८०. **सजातानां मध्यमस्था एधि राज्ञाम् । २७.५**
समान राजाओं में तुम मध्यस्थ राजा बनो ।

१२८१. **सत्रराडसि-अभिमातिहा । ५.२४**
तुम सदा तेजोमय और शत्रुनाशक हो ।

१२८२. **सनेमि राजा परि याति विद्वान् । ९.२५**
विद्वान् राजा चिरकाल तक राज्य में भ्रमण करता है ।

१२८३. **समरीर्विदाम् । ६.३६**
प्रजाजन राजा के कार्यों को जानें ।

१२८४. **सम्राडसि स्वराडसि । १३.३५**
तुम सम्राट् हो, स्वयं शासक हो ।

१२८५. **सम्राडेको वि राजति । १२.११७**
सम्राट् अकेला ही चमकता है ।

१२८६. **सर्वतस्त्वा दिश आ धावन्तु । ६.३६**
सभी दिशाओं से लोग तुम्हारे पास आवें ।

१२८७. **सर्वराडसि-अभित्रहा । ५.२४**
तुम सबके राजा हो और शत्रुनाशक हो ।

१२८८. **सवीर्यो वज्रहस्तः पुरन्दरो वेतु । २८.३**
पराक्रमी वज्रहस्त इन्द्र यहाँ आवे ।

१२८९. **साध्यान् प्रमुदा । ३९.९**
साध्यों को प्रमोद से वश में करो ।

१२९०. **साम्राज्याय सुक्रतुः । २०.२**
सत्कर्म करने वाला साम्राज्य प्राप्त करता है ।

१२९१. **सासहूवाँश्च-अभियुग्वा च विक्षिपः । ३९.७**
तुम शत्रुविजयी, आक्रमणकारी और शत्रुओं के नाशक हो ।

१२९२. **सुप्रजाः प्रजाभिः स्याम् । ७.२९**
मैं प्रजाओं के द्वारा उत्तम प्रजा वाला होऊँ ।

१२९३. **सुश्लोक सुमङ्गल सत्यराजन्** । २०.४
हे राजन् ! तुम यशस्वी, मंगलमय और सच्चे राजा हो ।

१२९४. **सोमं राजानमोषधीष्वप्सु** । ९.२३
ओषधियों और जल में सोम को राजा बनाया ।

१२९५. **सोमस्य त्वा द्युम्नेनाभि षिञ्चामि** । १०.१७
मैं सोम राजा के तेज से तुम्हारा अभिषेक करता हूँ ।

१२९६. **सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां राजा** । ९.४०, १०.१८
सोम हम ब्राह्मणों का राजा है ।

१२९७. **स्वराडसि सपत्नहा** । ५.२४
तुम स्वयं राजा हो और शत्रुओं के नाशक हो ।

१२९८. **स्वराड् ज्योतिरधारयत्** । १३.२४
स्वयं तेजोमय राजा ज्योति धारण करता है ।

१२९९. **हस्तौ मे कर्म वीर्यम्** । २०.७
कर्मठता और पुरुषार्थ मेरे दो हाथ हैं ।

(ख) राष्ट्र

१३००. **ओजस्वती स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त** । १०.३
तुम ओजस्वी और राष्ट्रदाता हो, मुझे राष्ट्र दो ।

१३०१. **जनभृत स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त** । १०.४
तुम जनता के पालक और राष्ट्रदाता हो, मुझे राष्ट्र दो ।

१३०२. **राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि** । १०.२
तुम राष्ट्रदाता हो, मुझे राष्ट्र दो ।

१३०३. **विश्वभृत स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त** । १०.४
तुम संसार के पालक और राष्ट्रदाता हो, मुझे राष्ट्र दो ।

१३०४. **वृषसेनोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि** । १०.२
तुम बलिष्ठ सेना वाले और राष्ट्रदाता हो, मुझे राष्ट्र दो ।

१३०५. **शविष्ठा स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त।** १०.४
तुम अत्यन्त बलवान् और राष्ट्रदाता हो, मुझे राष्ट्र दो ।

१३०६. **सूर्यत्वच स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त ।** १०.४
तुम सूर्यवत् तेजस्वी और राष्ट्रदाता हो, मुझे राष्ट्र दो ।

१३०७. **सूर्यवर्चस स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त ।** १०.४
तुम सूर्यवत् तेजस्वी और राष्ट्रदाता हो, मुझे राष्ट्र दो ।

१३०८. **स्वराज स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त ।** १०.४
तुम स्वयं तेजोमय और राष्ट्रदाता हो, इसको राष्ट्र दो ।

(ग) वीर, योद्धा

१३०९. **अनिशिताऽसि सपत्नक्षित् ।** १.२९
तुम अथक परिश्रमी और शत्रुनाशक स्त्री हो ।

१३१०. **अनिशितोऽसि सपत्नक्षित् ।** १.२९
तुम अथक परिश्रमी और शत्रुनाशक वीर हो ।

१३११. **अवक्रामन्तः प्रपदैरमित्रान् ।** २९.४४
वीर अपने पैरों से शत्रुओं को कुचल देते हैं ।

१३१२. **क्षिणन्ति शत्रून् अनपव्ययन्तः ।** २९.४४
वीर स्वयं नष्ट न होते हुए शत्रुओं को नष्ट करते हैं ।

१३१३. **चित्रसेना इषुबला अमृध्राः ।** २९.४६
ये वीर विचित्र सेनावाले, इषुधारी और उग्र स्वभाव के हैं ।

१३१४. **पितरो वयोधाः - - - शक्तीवन्तो गभीराः ।** २९.४६
पितृगण बलवान् , शक्तिशाली और गंभीर स्वभाव के हैं ।

१३१५. **युधो नर इषुहस्तेन वृष्णा ।** १७.३४
हे योद्धा लोगो! तुम बाणधारी बलवान् इन्द्र के साथ शत्रुओं को जीतो ।

१३१६. **रक्षोहाऽमित्राँ अपबाधमानः ।** १७.६६
बृहस्पति राक्षसों का हन्ता और शत्रुओं का नाशक है ।

१३१७. विश्रयन्तां सुवीरा वीरं प्रथमाना महोभिः । २०.४०
तेज से विख्यात वीरगण वीर इन्द्र का आश्रय लें ।

१३१८. वीरतां पाहि । ७.१२
वीरता की रक्षा करो ।

१३१९. शुक्रस्याधिष्ठानमसि । ७.१३
तुम शक्ति के आश्रय हो ।

१३२०. श्येनो भूत्वा परा पत । ४.३४
श्येन (बाज) के तुल्य शत्रुपर आक्रमण करो ।

१३२१. सतोवीरा उरवो व्रातसाहाः । २९.४६
ये सर्वथा वीर, विशाल और शत्रुसेना के विजेता हैं ।

१३२२. सुवीरा वीरैः । ८.५३
हम वीर सन्तानों से सुवीर हों ।

१३२३. सुवीरो वीरैः सुपोषः पोषैः । ७.२९
मैं वीरसन्तानों से सुवीर और पोषणों से सुपुष्ट होऊँ ।

(घ) सेनापति

१३२४. अदयो वीरः शतमन्युरिन्द्रः । १७.३९
इन्द्र सैकड़ों प्रकार से क्रोध करने वाला, निर्दय वीर है ।

१३२५. अदितिः शर्म यच्छतु । १७.४८
अदिति युद्धों में सुरक्षा प्रदान करे ।

१३२६. अषाढं युत्सु पृतनासु पप्रिम् । ३४.२०
सोम युद्धों में अजेय है और शत्रु-सेनाओं से रक्षा करता है ।

१३२७. अस्माँ उ देवा अवता हवेषु । १७.४३
देवगण युद्धों में हमारी रक्षा करें ।

१३२८. अस्माकं या इषवस्ता जयन्तु । १७.४३
हमारे बाण सदा विजयी हों ।

१३२९. **अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु । १७.४३**
हमारे वीर सर्वोत्कृष्ट सिद्ध हों ।

१३३०. **अस्माकं सेना अवतु प्र युत्सु । १७.३९**
इन्द्र युद्धों में हमारी सेना की रक्षा करे ।

१३३१. **इन्द्रं सखायो अनु सं रभध्वम् । १७.३८**
हे मित्रो ! युद्ध में इन्द्र के साथ रहकर पुरुषार्थ करो ।

१३३२. **इन्द्रो वः शर्म यच्छतु । १७.४६**
इन्द्र तुम्हारा कल्याण करे ।

१३३३. **उग्रधन्वा प्रतिहिताभिरस्ता । १७.३५**
इन्द्र उग्र धनुर्धर और शत्रुओं पर बाणों से प्रहार करने वाला है ।

१३३४. **उग्रा वः सन्तु बाहवोऽनाधृष्या यथाऽसथ । १७.४६**
तुम्हारी भुजाएं भयंकर हों, जिससे तुम अजेय रहो ।

१३३५. **उद्धर्षय मघवन् आयुधानि । १७.४२**
हे इन्द्र ! अपने शस्त्रास्त्रों को तीक्ष्ण करो ।

१३३६. **उद् रथानां जयतां यन्तु घोषाः । १७.४२**
विजयी रथों की उच्च ध्वनि उठे ।

१३३७. **उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु । १७.४९**
वरुण तुम्हारे कवच को अति सुदृढ़ करे ।

१३३८. **गच्छामित्रान् प्र पद्यस्व । १७.४५**
हे बाण ! तुम शत्रुओं पर जाकर पड़ो ।

१३३९. **गोत्रभिदं गोविदं वज्रबाहुम् । १७.३८**
इन्द्र मेघनाशक, वाग्वित् (विद्वान्) और वज्रधारी है ।

१३४०. **घोषो देवानां जयतामुदस्थात् । १७.४१**
विजयी देवों की जयध्वनि उठी ।

१३४१. **जयन्तं त्वाऽनु देवा मदन्तु । १७.४९**
तुझ विजयी को देवगण प्रोत्साहित करें ।

१३४२. जयन्तमज्म प्रमृणन्तमोजसा । १७.३८
इन्द्र युद्ध में विजयी है और अपने तेज से शत्रुओं को नष्ट करता है ।

१३४३. जैत्रमिन्द्र रथमा तिष्ठ गोवित् । १७.३७
हे इन्द्र! तुम विजयी रथ पर बैठो ।

१३४४. तदिन्द्रेण जयत तत्सहध्वम् । १७.३४
इन्द्र के साथ शत्रुओं को जीतो और उन्हें नष्ट करो ।

१३४५. दुश्च्यवनः पृतनाषाडयुध्यः । १७.३९
इन्द्र अजेय, सेना-विजयी और अधृष्य है ।

१३४६. देवसेनानां - - जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम् । १७.४०
विजयी देवसेना के आगे मरुद्गण चलें ।

१३४७. प्रभञ्जन् सेनाः प्रमृणो युधा जयन् । १७.३६
इन्द्र सेनाओं को छिन्नभिन्न करता है और हिंसकों को युद्ध में जीतता है ।

१३४८. प्रेता जयता नरः । १७.४६
हे सैनिको! आगे बढ़ो और जीतो ।

१३४९. बलविज्ञाय स्थविरः प्रवीरः । १७.३७
इन्द्र श्रेष्ठ वीर है, शत्रु-बल का ज्ञाता है और सर्वमान्य है ।

१३५०. बृहस्पते परि दीया रथेन । १७.३६
हे बृहस्पति! तुम अपने रथ से इधर-उधर घूमो ।

१३५१. मर्माणि ते वर्मणा छादयामि । १७.४९
मैं तुम्हारे मर्मस्थलों को कवच से ढकता हूँ ।

१३५२. महामनसां भुवनच्यवानाम् । १७.४१
देवगण महामनस्वी और लोकों को हिला डालने वाले हैं ।

१३५३. माऽमीषां कं चनोच्छिषः । १७.४५
इन शत्रुओं में से किसी को भी न छोड़ो ।

१३५४. युत्कारेण दुश्च्यवनेन धृष्णुना । १७.३४
इन्द्र आक्रामक, अधृष्य और साहसी है ।

१३५५. विश्वाहा शर्म यच्छतु ! १७.४८
इन्द्र हमें सदा सुख दे ।

१३५६. संक्रन्दनेनानिमिषेण जिष्णुना । १७.३४
इन्द्र गरजने वाला, एकाग्रचित्त और विजयी है।

१३५७. संस्रष्टा स युध इन्द्रो गणेन । १७.३५
वह इन्द्र शत्रुगण से युद्ध करने वालों को ही साथ रखता है ।

१३५८. स इषुहस्तैः स निषङ्गिभिर्वशी । १७.३५
वह वशी इन्द्र इषुधारी और तूणीरधारी वीरों को साथ रखता है ।

१३५९. सहस्वान् वाजी सहमान उग्रः । १७.३७
वह इन्द्र बलवान्, शक्तिशाली, विजेता और उग्र है ।

१३६०. सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति । ३४.२१
सोम देवता कर्मठ और वीर पुत्र वरदान रूप में देता है ।

(ङ) विजय

१३६१. अस्माकमिन्द्र रथिनो जयन्तु । २९.५७
हे इन्द्र! हमारे महारथी विजयी हों ।

१३६२. इन्द्र वाजं जय । ९.११
हे इन्द्र! तुम युद्ध में जीतो ।

१३६३. जयन्तं त्वामनु मदेम सोम । ३४.२०
हे सोम! तेरी विजय पर हम प्रसन्न हों ।

१३६४. त्वया वयं संघातं संघातं जेष्म । १.१६
तेरे साथ रहकर हम प्रत्येक युद्ध में जीतें ।

१३६५. बृहस्पते वाजं जय । ९.११
हे बृहस्पति! तुम युद्ध में जीतो।

१३६६. वाजजिच्च भव समने च पारयिष्णुः । ९.९
तुम धन जीतने वाले और युद्ध में पार लगाने वाले होओ ।

(च) ब्रह्म, क्षत्र, संसद्

१३६७. अग्निश्च पृथिवी च - - सप्त संसदः । २६.१
सात संसद् (अधिष्ठान, या ८ वसु) हैं- अग्नि, पृथिवी आदि। (अग्नि पृथिवी, वायु, अन्तरिक्ष. द्युलोक, आदित्य, जल, वरुण)

१३६८. अष्टमी भूतसाधनी । २६.१
इनमें आठवीं संसद् पृथिवी है। यह प्राणियों को जन्म देती है ।

१३६९. अस्मै ब्रह्मणेऽस्मै क्षत्राय । १८.४४
इस ब्रह्म और क्षत्रशक्ति के लिए सुख दो ।

१३७०. इदं मे ब्रह्म च क्षत्रं चोभे श्रियमश्नुताम् । ३२.१६
मेरी ये दोनों ब्रह्म और क्षत्रशक्तियाँ ऐश्वर्यशाली हों ।

१३७१. क्षत्रस्य त्वा परस्पाय ब्रह्मणस्तन्वं पाहि । ३८.१९
क्षत्रशक्ति की रक्षा के लिए ब्रह्मशक्ति के स्वरूप की रक्षा करो ।

१३७२. ब्रह्म क्षत्रं पवते । १९.५
ब्रह्मशक्ति क्षत्रशक्ति को पवित्र करती है ।

१३७३. ब्रह्मणे पिन्वस्य, क्षत्राय पिन्वस्व । ३८.१४
ब्रह्म और क्षत्र शक्ति को पुष्ट करो ।

१३७४. ब्रह्म दृंह, क्षत्रं दृंह । ६.३
ब्राह्मण और क्षत्रिय दोनो वर्णो को पुष्ट करो ।

१३७५. ब्रह्म धारय, क्षत्रं धारय, विशं धारय । ३८.१४
ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य तीनों वर्णो की सुरक्षा करो ।

१३७६. यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सह । २०.२५
जहाँ ब्राह्मण और क्षत्रिय मिलकर चलते हैं । वह स्थान पवित्र होता है ।

१३७७. राजानः समिताविव । १२.८०
राजा लोग जिस प्रकार समिति में जाते हैं, उसी प्रकार सभा में जाओ ।

१३७८. विशस्त्वा धर्मणा वयमनु क्रामाम सुविताय नव्यसे । ३८.१९
हम प्रजाजन धर्मानुकूल नवीन प्रगति के लिए तेरे पीछे चलते हैं ।

१३७९. संज्ञानमस्तु मेऽमुना । २६.१
मेरा प्रजाजनों से सामंजस्य हो ।

१३८०. स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु । १८.३९
सूर्य हमारे ब्राह्मणों और क्षत्रियों की रक्षा करे ।

१३८१. सादन्यं विदथ्यं सभेयं पितृश्रवणम् । ३४.२१
पुत्र पिता का आज्ञापालक हो तथा सदन विदथ और सभा में बैठने के योग्य हो ।

(छ) शस्त्रास्त्र, युद्ध

१३८२. अति दिद्यून् पाहि । १०.१७
शत्रुओं के बाण आदि से मुझे बचाओ ।

१३८३. अन्यांस्ते अस्मत् तपन्तु हेतयः । १७.७, ११
तुम्हारे अस्त्र हमें छोड़कर अन्य को तपावें ।

१३८४. अप प्रोथ दुन्दुभे दुच्छुना इतः । २९.५६
हे दुन्दुभि! तुम विपत्ति या अनिष्ट को यहाँ से भगाओ ।

१३८५. अवक्रामन्तः प्रपदैरमित्रान् । २९.४४
वे पैरों से शत्रुओं को कुचल देते हैं ।

१३८६. आ क्रन्दय बलमोजो न आधाः । २९.५६
हे दुन्दुभि! तुम शब्द करो और हमें बल तथा ओज दो ।

१३८७. आयुधं निधाय - - पिनाकं बिभ्रदा गहि । १६.५१
हे रुद्र! तुम आयुध रखकर पिनाक धनुष लेकर आओ।

१३८८. आर्त्नी इमे विष्फुरन्ती अमित्रान् । २९.४१
धनुष के ये दोनों छोर फड़कते हुए शत्रुओं को नष्ट करें।

१३८९. आशुः शिशानो वृषभो न भीमः । १७.३३
इन्द्र शीघ्रगामी, अपने वज्र को तीक्ष्ण करने वाला तथा सांड की तरह भयंकर है ।

१३९०. **इन्द्रस्य मुष्टिरसि वीडयस्व । २९.५६**
हे दुन्दुभि ! तुम इन्द्र की मुट्ठी हो , हमें दृढ़ करो ।

१३९१. **इषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमः । १६.४६**
बाण और धनुष बनाने वालों को नमस्ते ।

१३९२. **इषुधिः - - पृष्ठे निनद्धो जयति प्रसूतः । २९.४२**
पीठ पर बँधा हुआ तूणीर बाण छूटने पर विजयी बनाता है ।

१३९३. **घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् । १७.३३**
इन्द्र घोर योद्धा और सेनाओं को क्षुब्ध करने वाला है ।

१३९४. **ज्या इयं समने पारयन्ती । २९.४०**
यह प्रत्यंचा (डोरी) युद्ध में विजय दिलाती है ।

१३९५. **धनुः शत्रोरप कामं कृणोति । २९.३९**
धनुष शत्रु के मनोरथ नष्ट करता है ।

१३९६. **धन्वना गा धन्वनाऽऽजिं जयेम । २९.३९**
हम धनुष से युद्ध और गायों को जीतें ।

१३९७. **धन्वना सर्वाः प्रदिशो जयेम । २९.३९**
हम धनुष से सारी दिशाओं को जीतें ।

१३९८. **पिनाकं बिभ्रदा गहि । १६.५१**
हे रुद्र ! तुम पिनाक धनुष लेकर आवो ।

१३९९. **भगवः पराचीना मुखा कृधि । १६.५३**
हे भगवन् ! तुम अस्त्रों के मुँह दूसरी ओर कर दो ।

१४००. **मनः पश्चादनु यच्छन्ति रश्मयः । २९.४३**
लगाम मन के अनुसार चलती है ।

१४०१. **यत्रायुधं निहितमस्य वर्म। २९.४५**
रथ में अस्त्र और कवच रखे हैं ।

१४०२. **वज्रहस्ता रश्मीन् देव यमसे स्वश्वान् । १०.२२**
हे वज्रहस्त देव इन्द्र ! तुम लगाम से घोड़ों को नियन्त्रित करते हो ।

१४०३. वाजे वाजेऽवत वाजिनो नः । २१.११
हे अश्वो! तुम प्रत्येक युद्ध में हमारी रक्षा करो ।

१४०४. विसृज विष्वगुल्काः । १३.१०
हे अग्नि! चारों ओर उल्कापात करो ।

१४०५. शं नो भवन्तु वाजिनो हवेषु । २१.१८
युद्धों में घोड़े हमारे लिए शुभ हों ।

१४०६. शतं सेना अजयत् साकमिन्द्रः । १७.३३
इन्द्र ने सैकड़ों सेनाओं को एक साथ जीता ।

१४०७. संक्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः । १७.३३
इन्द्र अद्वितीय वीर, गरजने वाला और सदा सावधान है ।

१४०८. स त्वा वर्मणो महिमा पिपर्तु । २९.३८
कवच की महिमा तेरी रक्षा करे ।

(ज) सुरक्षा

१४०९. अदितिः शर्म यच्छतु । २९.४९
अदिति हमारा कल्याण करे ।

१४१०. अनाविद्धया तन्वा जय त्वम् । २९.३८
तुम अक्षत शरीर से विजयी हो ।

१४११. अन्तरिक्षं दृंह, अन्तरिक्षं मा हिंसीः । १४.१२
अन्तरिक्ष को दृढ करो। अन्तरिक्ष को हानि न पहुँचाओ ।

१४१२. अन्तरिक्षं पृण । ५.२७
अन्तरिक्ष को पुष्ट करो ।

१४१३. अभी षु णः सखीनामविता जरितॄणाम् । २७.४१, ३६.६
हे इन्द्र! तुम हम उपासक मित्रों के रक्षक हो ।

१४१४. अवा नो देव्या धिया । ११.४१
तुम दिव्य बुद्धि से हमारी रक्षा करो ।

१४१५. **अश्वाजनि - - अश्वान् समत्सु चोदय** । २९.५०

हे चाबुक! तुम युद्धों में घोड़ों को हाँको।

१४१६. **इन्द्रज्येष्ठा अस्माँ अवन्तु देवाः** । ३३.५०

इन्द्र-प्रमुख देवगण हमारी रक्षा करें ।

१४१७. **उद्दिवं स्तभान** । ५.२७

तुम द्युलोक को स्थिर रखो ।

१४१८. **ऊर्ध्व ऊ षु ण ऊतये तिष्ठ** । ११.४२

हे अग्नि! तुम हमारी रक्षा के लिए सदा उद्यत रहो ।

१४१९. **ऋजीते परि वृङ्धि नः** । २९.४९

हे ऋजुगामी बाण! हमें क्षति न पहुँचाओ ।

१४२०. **चक्षुर्म उर्व्या वि भाहि** । १४.८

मेरे नेत्रों को विशाल दृष्टि से प्रकाशित करो ।

१४२१. **तत्रास्मभ्यमिषवः शर्म यंसन्** । २९.४८

वहाँ युद्ध में बाण हमें क्षति न पहुँचावें ।

१४२२. **तोकाय तनयाय मृड** । १६.५०

हे रुद्र! तुम पुत्रों और पौत्रों को सुख दो ।

१४२३. **त्राध्वं कर्तादवपदो यजत्राः** । ३३.५१

हे पूज्य देवो! मुझे गड्ढे में गिरने से बचाओ ।

१४२४. **त्राध्वं नो देवा निजुरो वृकस्य** । ३३.५१

हे देवगण! हमें भूखे भेड़िए से बचाइए ।

१४२५. **द्विपादव चतुष्पात् पाहि** । १४.८

तुम मनुष्यों और पशुओं की रक्षा करो।

१४२६. **परि त्वेषस्य हेतिर्वृणक्तु** । १६.५०

क्रुद्ध पापी को दुर्भावना मुझे हानि न पहुँचाए।

१४२७. **परि नो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु** । १६.५०

रुद्र के शस्त्र मुझे हानि न पहुँचाएँ ।

१४२८. **पुमान् पुमांसं परि पातु विश्वतः । २९.५१**
पुरुष पुरुष की सब ओर से रक्षा करे।

१४२९. **प्राणं मे पाहि, अपानं मे पाहि, व्यानं मे पाहि । १४.८**
तुम मेरे प्राण, अपान और व्यान वायुओं की रक्षा करो।

१४३०. **मा त्वा परिपन्थिनो विदन् । ४.३४**
तुझे लुटेरे ने मिलें ।

१४३१. **मा त्वा परिपरिणो विदन् । ४.३४**
तुझे चोर-डाकू न मिलें।

१४३२. **मा त्वा वृका अघायवो विदन् । ४.३४**
तुझे पापी भेड़िए (उचक्के) न मिलें।

१४३३. **यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । २०.५४, २७.२८**
तुम सभी देवता कल्याण के द्वारा मेरी रक्षा करो।

१४३४. **रक्षा माकिर्नो अघशंस ईशत । २९.४७, ३३.६९**
हे सविता! हमारी रक्षा करो। कोई पापी हमें न दबा सके।

१४३५. **विश्वे नो देवा अवसा गमन्तु । १८.३१, ३३.५२**
सभी देवता हमारी रक्षा के लिए आवें।

१४३६. **शतं भवास्यूतिभिः । २७.४१, ३६.६**
हे इन्द्र! तुम हमारी रक्षा के लिए सैकड़ों रूप में आते हो।

१४३७. **शर्म च स्थो वर्म च स्थः । ११.३०**
तुम दोनों हमारे लिए सुखकर और रक्षक हो।

१४३८. **शिवेभिरद्य परि पाहि नो गयम् । ३३.६९, ८४**
तुम शुभ संरक्षण से आज हमारे घर की रक्षा करो।

१४३९. **शिवो नः सुमना भव । १६.५१**
हे द्र! तुम हमारे लिए शुभ और कृपालु होओ ।

१४४०. **सोमं राजानमवसेऽग्निमन्वारभामहे । ९.२६**
हम राजा सोम और अग्नि को रक्षा के लिए बुलाते हैं ।

(झ) शत्रुनाशन, रक्षोनाशन

१४४१. अग्ने-जातान् प्रणुदा नः सपत्नान् । १५.१
हे अग्नि! तुम हमारे सभी विद्यमान शत्रुओं को नष्ट करो।

१४४२. अग्ने सहस्व पृतना अभिमातीः । ९.३७
हे अग्नि! तुम सभी अभिमानी सेनाओं को जीतो।

१४४३. अपमृष्टो मर्कः । ७.१७
तुमने धूर्त शत्रु को बाहर निकाल दिया।

१४४४. अपसेधन् रक्षसो यातुधानान् । ३४.२६
सूर्य राक्षसों और यातुधानों को हटाता हुआ उदय होता है ।

१४४५. अपहतं रक्षः । १.१६
तुमने राक्षसों को नष्ट कर दिया।

१४४६. अयं मृधः पुर एतु प्रभिन्दन् । ५.३७
यह अग्नि शत्रुओं को नष्ट करती हुई आगे बढ़े।

१४४७. अयं शत्रून् जयतु जर्हृषाणः । ५.३७, ७.४४
यह अग्नि हँसते-हँसते शत्रुओं को जीते।

१४४८. अव स्थिरा तनुहि भूरि शर्धताम् । १५.४०
तुम अत्यन्त अभिमानियों की स्थिर वस्तुओं को भी नीचे गिरा दो।

१४४९. इदमहं तं वलगमुत्किरामि । ५.२३
यह मैं शत्रुओं द्वारा किए अभिचार कर्म को उखाड़ फेंकता हूँ।

१४५०. इदमहं रक्षसां ग्रीवा अपि कृन्तामि । ५.२२, २६
यह मैं राक्षसों की गर्दन काटता हूँ ।

१४५१. उपस्तिरस्तु सोऽस्माकं यो अस्माँ अभिदासति । १२.१०१
जो हमें हानि पहुँचाता है, वह हमारे अधीनस्थ होकर रहे।

१४५२ क्षिणोमि ब्रह्मणाऽमित्रान् । ११.८२
मैं ज्ञानशक्ति से शत्रुओं को नष्ट करता हूँ ।

१४५३. जम्भैस्तस्कराँ उत । ११.७८
हे अग्नि! दाढ़ से चोरों को खा जाओ ।

१४५४. जहि शत्रून् अप मृधो नुदस्व । ७.३७
तुम शत्रुओं को मारो और हिंसकों को दूर भगाओ ।

१४५५. तमसे तस्करम् । ३०.५
तुमने तमोगुणी कार्य के लिए चोर को बनाया ।

१४५६. तिग्मजम्भ रक्षसो दह प्रति । १५.३७
हे तीक्ष्ण दाढ़ वाले अग्नि! तुम राक्षसों को जला दो।

१४५७. दंष्ट्राभ्यां मलिम्लून् । ११.७८
हे अग्नि! दाढ़ से डाकुओं को खा जाओ ।

१४५८. दुष्टरस्तरन् अरातीः । ९.३७
हे अग्नि! तुम अजेय हो। शत्रुओं को तिरस्कृत करते हो।

१४५९. दूराद् दवीयो अप सेध शत्रून् । २९.५५
शत्रुओं को दूर से दूर भगाओ ।

१४६०. धृष्टिरसि । १.१७
हे अग्नि! तुम धर्षक (साहसी) हो।

१४६१. निन्दाद् यो अस्मान् धिप्साच्च सर्वं तं भस्मसा कुरु । ११.८०
हे अग्नि! जो हमारी निन्दा करे और हमें दबाना चाहे, उसे भस्म कर दो।

१४६२. नीचा यच्छ पृतन्यतः । ८.४४
आक्रमणकारियों को नीचा दिखाओ।

१४६३. मुह्यन्त्वन्ये अभितः सपत्नाः । १७.२२
हमारे अन्य शत्रु किंकर्तव्यविमूढ हो जाएँ ।

१४६४. यवोऽसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीः । ५.२६
तुम यव (जौ) हो, हमारे द्वेषियों और शत्रुओं को दूर हटावो।

१४६५. याः सेना अभीत्वरीः - - तांस्ते - - दधाम्यास्ये । ११.७७
हे अग्नि! जो आक्रामक सेनाएँ हैं, उन्हें तुम्हारे मुँह में रखता हूँ।

१४६६. **ये कक्षेष्वघायवः तांस्ते दधामि जम्भयोः । ११.७९**
हे अग्नि! जो पापी जंगल आदि में रहते हैं, उन्हें तुम्हारी दाढ़ में रखता हूँ।

१४६७. **ये नः सपत्ना अप ते भवन्त । ३४.४६**
जो हमारे शत्रु हैं, वे दूर हों।

१४६८. **ये स्तेना ये च तस्कराः, तांस्ते ·· दधाम्यास्ये । ११.७७**
हे अग्नि! जो चोर और डाकू हैं, उन्हें तुम्हारे मुँह में रखता हूँ।

१४६९. **ये - - स्तेनासस्तस्करा वने, तांस्ते - - दधामि जम्भयोः । ११.७९**
हे अग्नि! वन में जो चोर-डाकू रहते हैं, उन्हें तम्हारी दाढ़ में रखता हूँ।

१४७०. **यो अस्माँ अभिदासति, अधरं गमया तमः । ८.४४**
जो हमें हानि पहँचाता है, उसे घोर अंधकार में डालो।

१४७१. **यो नः पृतन्याद् अप तं-तमिद् हतम् । ८.५३**
जो हमपर आक्रमण करे, उनको मारो।

१४७२. **रक्षोऽवधिष्म । ९.३८**
हमने राक्षस को मार दिया।

१४७३. **वज्रेण तं-तमिद् हतम् । ८.५३**
वज्र से उस-उसको मारो।

१४७४. **वाजी - - सर्वा मृधो वि धूनुते। ११.१८**
बलवान् सारे शत्रुओं को कँपा देता है।

१४७५. **विध्य रक्षसस्तपिष्ठैः । १३.९**
राक्षसों को खूब तपाकर मार डालो।

१४७६. **वि न इन्द्र मृधो जहि । ८.४४**
हे इन्द्र! हमारे शत्रुओं को मार डालो।

१४७७. **शत्रूयतामभि तिष्ठा महांसि । ३३.१२**
शत्रुता करने वालों का तेज नष्ट कर दो।

१४७८. **सहसा जातान् प्र णुदा नः सपत्नान् ।** १५.२
हमारे विद्यमान शत्रुओं को अपने बल से नष्ट कर दो।

१४७९. **हतं रक्षः ।** ९.३८
मैंने राक्षस को मार दिया।

१४८०. **हनुभ्यां स्तेनान् - - तांस्त्वं खाद सुखादितान् ।** ११.७८
हे अग्नि! तुम हनु (ठोड़ी) से नष्टप्राय चोरों को खा जाओ।

१४८१. **हन्तु पाप्मानं योऽस्मान् द्वेष्टि ।** २६.१०
जो हमसे द्वेष करता है, उस पापी को मार डालो।

(५) अर्थशास्त्रीय

(क) ऐश्वर्य

१४८२. **अथा नो वर्धया रयिम् ।** ३.३४, १२.५२, १५.५६
हमारे ऐश्वर्य को बढ़ाओ।

१४८३. **अथा शास्ते दाशुषे वार्याणि ।** २९.२४
दानी यजमान को श्रेष्ठ धन दो।

१४८४. **अस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ।** २६.३
हमको विचित्र धन दो।

१४८५. **अस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त ।** १७.९८
हमें शुभ धन दो।

१४८६. **अस्मे धत्त वसवो वसूनि ।** ८.१८
वसुगण हमें धन दें।

१४८७. **इहैव रातयः सन्तु ।** ३८.१३
ऐश्वर्य यहीं रहे।

१४८८. **उभा हि हस्ता वसुना पृणस्व ।** ५.१९
हमारे दोनों हाथ धन से भर दो।

१४८९. **उष्य राय एषो यजस्व ।** ७.४
धन की रक्षा करो और अन्नादि का दान करो।

१४९०. **ऋद्धं च म ऋद्धिश्च मे।** १८.११
मुझे पूर्ण सफलता और समृद्धि प्राप्त हो।

१४९१. **एधोऽस्येधिषीमहि।** २०.२३
तुम बढ़ाने वाले हो, हम निरन्तर बढ़ें।

१४९२. **तुथो वो विश्ववेदा वि भजतु।** ७.४५
सर्वशक्तिमान् सर्वज्ञ देव तुम्हें धन दे।

१४९३. **त्वष्टा सुदत्रो विदधातु रायः।** २.२४
उदार त्वष्टा तुम्हें धन दे।

१४९४. **त्वे रायो मे रायः।** ४.२२
तुम्हें धन मिले, मुझे भी धन मिले।

१४९५. **दधद् रत्ना दाशुषे वार्याणि।** ३४.२४
सविता देव दाता को श्रेष्ठ रत्न देता है।

१४९६. **दधद् रयिं मयि पोषम्।** ८.३८
मुझे पुष्टिकारक धन दो।

१४९७. **दधासि सानसिं रयिम्।** १२.११०
तुम विजयशील ऐश्वर्य देते हो।

१४९८. **देवा धत्त रयिमस्मे सुवीरम्।** १२.२९
देव हमें वीर पुत्रों से युक्त धन दें।

१४९९. **देवेषु रत्नमभजन्त धीराः।** १९.५२
विद्वानों ने देवों को रत्न बाँटे।

१५००. **द्युमत्तमं रयिं दाः।** १५.४८, २५.४७
हमें तेजोमय धन दो।

१५०१. **नि नो रयिं सुभोजसं युवस्व।** २७.२७
हे वायु! तुम हमें उपभोग के योग्य ऐश्वर्य दो।

१५०२. **बृहस्पतिष्ट्वा सुम्ने रम्णातु।** ४.२१
बृहस्पति तुम्हें सुख में रखे।

१५०३. **बृहस्पते धारया वसूनि** । ६.८
हे बृहस्पति! तुम हमें धन दो।

१५०४. **मयि देवा दधतु श्रियमुत्तमाम्** । ३२.१६
देवगण मुझे उत्तम श्री दें।

१५०५. **मा वयं रायस्पोषेण वियौष्म** । ४.२२
हम योग-क्षेम से वियुक्त न हों।

१५०६. **यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु** । १०.२०
हे प्रजापति! जिस कामना से हम हवन करते हैं, वह हमें मिले।

१५०७. **यथा नो व्यवसाययात्** । ३.५८
वह रुद्र हमें सत्कर्मों में दृढ़ निश्चय से युक्त करे।

१५०८. **रयिश्च मे रायश्च मे** । १८.१०
मुझे सुवर्णादि धन और रत्नादि-धन मिले।

१५०९. **रातिं सवितुरीमहे** । २२.१२
हम सूर्य से ऐश्वर्य चाहते हैं।

१५१०. **रायस्पोषं वि ष्यतु नाभिमस्मे** । २७.२०
त्वष्टा समाज के केन्द्र रूप हमें योग-क्षेम दे।

१५११. **रायस्पोषमस्मासु दीधरत्** । ८.५१
वरुण हमें रायस्पोष (योगक्षेम) दे।

१५१२. **रायस्पोषाय बृहते हवामहे** । ११.७६
हम महान् योगक्षेम के लिए अग्नि का आह्वान करते हैं।

१५१३. **रायस्पोषेण समिषा मदेम** । ४.१
हम योगक्षेम और अन्नादि से प्रसन्न रहें।

१५१४. **राया वयं ससवांसो मदेम** । ७.१०
हम धन से संपन्न होकर आनन्दित हों।

१५१५. **रेवती रमध्वम्** । ६.८
धनयुक्त होकर आनन्दित रहो।

१५१६. **वयं स्याम पतयो रयीणाम्** । १०.२०, १९.४४, २३.६५
हम धन के स्वामी हों।

१५१७. **वर्धिषीमहि च वयमा च प्यासिषीमहिं** । २.१४, ३८.२१
हम बढ़ें और फूलें-फलें।

१५१८. **वसोर्दाता वस्वदात्** । ४.१६
सविता देव धनदाता है। उसने हमें धन दिया।

१५१९. **विभून् कामान् व्यश्नवै** । २०.२३
मैं बड़े मनोरथों को प्राप्त करूँ ।

१५२०. **विश्वो राय इषुध्यति** । ४.८
सभी धन के लिए प्रार्थना करते हैं।

१५२१. **स ते पयांसि समु यन्तु वाजाः** । १२.११३
हे सोम! तुम्हारा रस और तुम्हारी शक्ति हमें प्राप्त हो ।

१५२२. **स नो रयिं सर्ववीरं नि यच्छतु** । ९.२४
सोम हमें पूर्ण वीरता-युक्त ऐश्वर्य दे ।

१५२३. **स नो वसून्या भर** । १५.३०
हे अग्नि! तुम हमें ऐश्वर्य दो।

१५२४. **सम्पदसि सम्पदे त्वा** । १५.८
हे अग्नि! तुम संपत्तिरूप हो, संपत्ति के लिए तुम्हें पुकारते हैं।

१५२५. **सहस्रदा असि सहस्राय त्वा** । १३.४०
हे अग्नि! तुम सहस्रों धन देने वाले हो । सहस्रों धन के लिए तुम्हें अपनाते हैं।

१५२६. **सुवीर्यस्य रायस्पोषस्य ददितारः स्याम** । ७.१४
हम पराक्रमयुक्त योगक्षेम के दाता हों।

(ख) धन का उपयोग

१५२७. **अस्मे नृम्णमुत क्रतुः** । ९.२२
हमें धन और कर्मठता प्राप्त हो।

१५२८. **द्युम्नं चित्रश्रवस्तमम् ।** १९.६२
धन अत्यन्त तेजस्वी हो ।

१५२९. **द्युम्नं वृणीत पुष्यते ।** ४.८, ११.६७
संपोषण के लिए धन चाहो।

१५३०. **यो रेवान् यो अमीवहा वसुवित् पुष्टिवर्धनः ।** ३.२९
पुत्र धनी, रोगनाशक, पोषणकर्ता और धन के सारासार का ज्ञाता हो।

१५३१. **स नः सिषक्तु यस्तुरः ।** ३.२९
क्षिप्रकारी पुत्र हमारी सेवा करे।

(ग) धन-बल

१५३२. **इषमूर्जमहमित आदम् ।** १२.१०५
मैंने धन और बल इससे प्राप्त किया।

१५३३. **ओजो द्रविणम् ।** १५.३
तेजस्विता धन है।

१५३४. **जगच्च मे धनं च मे ।** १८.५
मुझे भौतिक सुख और धन मिले।

१५३५. **द्युम्नं वृणीत पुष्यसे ।** २२.२१
पोषण के लिए धन चाहो।

१५३६. **वर्चो द्रविणम् ।** १५.३
वर्चस्विता धन है।

१५३७. **विश्वमस्तु द्रविणं वाजो अस्मे ।** १८.३१, ३३.५२
हमें सभी प्रकार का धन और बल प्राप्त हो।

१५३८. **विश्वो राय इषुध्यति ।** २२.२१
सभी धन के लिए प्रार्थना करते हैं।

(घ) वाणिज्य

१५३९. **अमृतम् अमृतेन (क्रीणामि) ।** ४.२६
मैं अमृत को अमृत से खरीदता हूँ ।

१५४०. **क्रयस्य रूपं सोमस्य लाजाः । १९.१३**
खील सोमक्रय के रूप में हैं।

१५४१. **चन्द्रं चन्द्रेण (क्रीणामि) । ४.२६**
सुवर्ण को सुवर्णसे खरीदता हूँ।

१५४२. **तुलायै वाणिजम् । ३०.१७**
तराजू के काम के लिए वणिक्-पुत्र को बनाया।

१५४३. **देहि मे ददामि ते । ३.५०**
तुम मुझे दो और मैं तुम्हें दूँ।

१५४४. **नि मे धेहि नि ते दधे । ३.५०**
तुम मेरे लिए दो और मैं तुम्हारे लिए दूँ।

१५४५. **निहारं च हरासि मे निहारं नि हराणि ते । ३.५०**
तुम मुझे वस्तु देते हो और मैं तुम्हें मूल्य देता हूँ।

१५४६. **प्रजापतेर्वर्णः परमेण पशुना क्रीयसे । ४.२६**
हे सोम! तुम प्रजापति-रूप हो, तुम्हें पशु देकर खरीदते हैं।

१५४७. **विष्णुस्त्वामिन्द्रियेण पातु, विष्णुं त्वं पाहि । ७.२०**
विष्णु तुम्हें शक्ति देकर रक्षा करे। तुम यज्ञादि से विष्णु की रक्षा करो।

१५४८. **शुक्रं त्वा शुक्रेण क्रीणामि । ४.२६**
हे सोम! तुम तेजोमय हो, तुम्हें सुवर्ण से खरीदता हूँ।

१५४९. **सोमक्रयणास्तान् रक्षध्वम् । ४.२७**
सोम को खरीदने के लिए रखे गए सुवर्ण आदि की तुम रक्षा करो।

१५५०. **सोमस्य रूपं क्रीतस्य परिस्रुत् । १९.१५**
खरीदे हुए सोम का रूप है दुग्धादि से उसका मिश्रण।

(ङ) अन्नादि

१५५१. **घृतं घृतपावानः पिबत । ६.१९**
घी पीने वाले तुम घी पीओ।

१५५२. **घृतेन द्यावापृथिवी प्रोर्णुवाथाम् । ६.१६**
द्यावापृथिवी घी से भर जाएँ।

१५५३. **वसां वसापावानः पिबत । ६.१९**
पौष्टिक पेय पीने वाले पौष्टिक पेय पीओ।

(६) समाजशास्त्रीय

(क) पृथिवी

१५५४. **अदित्यै रास्नासि । ३८.१**
तुम पृथिवी की मेखला हो।

१५५५. **अप नः शोशुचदघम् । ३५.२१**
पृथिवी हमारे पापों को जलाकर नष्ट कर दे।

१५५६. **इड एहि, अदित एहि, सरस्वत्येहि । ३८.२**
हे पृथिवी! तुम आवो । तुम इडा, अदिति और सरस्वती हो।

१५५७. **यच्छा नः शर्म सप्रथाः । ३५.२१, ३६.१३**
हे पृथिवी! तुम हमें विस्तृत सुख दो।

१५५८. **स्योना पृथिवि नो भव । ३५.२१, ३६.१३**
हे पृथिवी! तुम हमारे लिए सुखद होओ ।

(ख) ब्राह्मण आदि

१५५९. **अस्य मध्वः पिबत मादयध्वम् । २१.११**
हम इस मधु का पान करें और प्रसन्न रहें।

१५६०. **उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते । ३४.५६**
हे ब्रह्मणस्पति! उठो, जागरूक हो।

१५६१. **उप नः सूनवो गिरः शृण्वन्त्वमृतस्य ये । ३३.७७**
हे अमृतपुत्रो! हमारी बात सुनो।

१५६२. **तपसे शूद्रम् । ३०.५**
शारीरिक श्रम के लिए शूद्र को बनाया।

१५६३. **पावकवर्णाः शुचयो विपश्चितः ।** ३३.८१
विद्वान् अग्नितुल्य तेजस्वी और पवित्र हों।

१५६४. **प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः ।** ३३.८९, ३७.७
श्रेष्ठ विद्वान् यहाँ आवें।

१५६५. **बृहद् वदेम विदथे सुवीराः ।** ३४.५८
हम शास्त्रार्थों में खूब बोलें।

१५६६. **ब्रह्मन् त्वं ब्रह्मासि ।** १०.२८
हे ब्रह्मन्! तुम ज्ञानवान् हो।

१५६७. **ब्रह्माणस्ते यशसः सन्तु मान्ये ।** २७.२
ज्ञानी विद्वान् यशस्वी हों, अन्य नहीं।

१५६८. **ब्राह्मणमद्य विदेयम् - - ऋषिमार्षेयम् ।** ७.४६
मैं आज ऋषितुल्य, आर्ष पद्धति वाले, ब्राह्मण को पाऊँ ।

१५६९. **मरुद्भ्यो वैश्यम् ।** ३०.५
व्यापार के कार्य के लिए वैश्य को बनाया।

१५७०. **विप्रा अमृता ऋतज्ञाः ।** ९.१८, २१.११
विप्र सत्यव्रती और अमर होते हैं।

१५७१. **विप्रो बभूव सप्रथाः ।** ३८.१७
विप्र यशस्वी हुआ।

१५७२. **शुक्रं दुदुह्रे अह्रयः ।** ३.१६
यशस्वी कवियों ने तेज दुहा (पाया)।

१५७३. **शूद्रार्यावसृज्येताम् ।** १४.३०
वैश्य और शूद्रों को उत्पन्न किया।

१५७४. **सुमृडीका भवन्तु नः ।** ३३.७७
वे हमारे लिए अति सुखकर होवें।

(ग) गृहस्थ

१५७५. **अग्निर्गृहपतिः । १०.९**
अग्नि गृह-स्वामी है।

१५७६. **अग्ने हव्यं रक्ष ! १.११**
हे अग्नि! हमारे हव्य की रक्षा करो

१५७७. **अत्र रमेथां वर्ष्मन् पृथिव्याः । ५.१७**
पृथिवी के इस उत्कृष्ट भाग में तुम दोनों-रमो।

१५७८. **अनु त्वा माता मन्यतामनु पिता । ४.२०**
तुम्हें इस कार्य के लिए माता-पिता अनुमति दें।

१५७९. **अनु त्वा माता पितरो मदन्तु । ६.२०**
तुम्हें माता-पिता स्वीकृति दें।

१५८०. **अम्ब निष्पर । ६.३६**
हे माता! तुम हमें बचाओ ।

१५८१. **अस्थूरि णौ गार्हपत्यानि सन्तु शतं हिमाः । २.२७**
हमारा गृहस्थजीवन सौ वर्ष तक अविच्छिन्न रहे।

१५८२. **आयुर्मा निर्वादिष्टम् । ५.१७**
तुम दोनों हमारी आयु को क्षीण मत करो।

१५८३. **आशीर्दा दम्पती वाममश्नुतः ! ८.५**
दूसरों की इच्छा पूरी करने वाले दम्पती ऐश्वर्य पाते हैं।

१५८४. **इषमूर्जमभि संवसानौ । १२.५७**
तुम दोनों अन्न-बल प्राप्त करो।

१५८५. **इषे राये रमस्व । १३.३५**
अन्न और धन के लिए आनन्दित रहो।

१५८६. **इष्टकां दृंहतं युवम् । १४.११**
तुम दोनों इष्ट क्रिया को दृढ़ करो।

१५८७. **ऊर्ध्वं यज्ञं नयतम्** । ५.१७
तुम दोनों यज्ञ को ऊपर ले जाओ।

१५८८. **एता उ वः सुभगा विश्वरूपाः** । २९.५
ये देवियाँ सौभाग्यशाली और नानारूपों वाली हैं।

१५८९. **कामो दाता कामः प्रतिग्रहीता कामैतत्ते** । ७.४८
काम ही दाता और लेने वाला है। यह सब कुछ काम ही है।

१५९०. **क्रीडी च शाकी चोज्जेषी** । १७.८५
क्रीडाशील, शक्तिशाली और विजयी होओ।

१५९१. **क्षेमाय वः शान्त्यै प्रपद्ये** । ३.४३
मैं सुख और शान्ति के लिए तुम्हारे पास आता हूँ।

१५९२. **गृहानैमि मनसा मोदमानः** । ३.४१
मैं प्रसन्नचित्त अपने घर आता हूँ।

१५९३. **दृंहन्तां दुर्याः पृथिव्याम्** । १.११
पृथिवी पर अपने भवन दृढ़ बनाओ।

१५९४. **द्वारो देवीः सुप्रायणा भवन्तु** । २९.५
सुन्दर द्वार सरलता से प्रवेश-योग्य हों।

१५९५. **ध्रुवं योनिमा सीद साधुया** । १४.१
अपने स्थिर घर में ठीक ढंग से रहो ।

१५९६. **पत्नीवतो ग्रहाँ ऋध्यासम्** । ८.९
सपत्नीकों के घरों को मैं समृद्ध करूँ ।

१५९७. **प्रजां मा निर्वादिष्टम्** । ५.१७
तुम दोनों हमारी सन्तान को मत क्षीण करो।

१५९८. **प्राची प्रेतम्** । ५.१७
तुम दोनों आगे बढ़ो।

१५९९. **बृहदुक्षाय नमः** । ८.८
जगत् के उत्पादक परमात्मा को नमस्ते।

१६००. **मा जिह्वरतम्** । ५.१७
तुम दोनों कुटिलता मत अपनाओ।

१६०१. **येषु सौमनसो बहुः** । ३.४२
जिन परिवार वालों में बहुत सौमनस्य है, उनके घर जाता हूँ।

१६०२. **रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय** । ३.६३
मैं योगक्षेम, सुसन्तान और पराक्रम के लिए तुम्हें बुलाता हूँ।

१६०३. **वसु च मे वसतिश्च मे** । १८.१५
मुझे धन और निवास-स्थान प्राप्त हो।

१६०४. **शिवं शग्मं शंयोः शंयोः** । ३.४३
मुझे सुख, शान्ति और योगक्षेम प्राप्त हो।

१६०५. **सं जास्पत्यं सुयममा कृणुष्व** । ३३.१२
हे अग्नि! तुम पति-पत्नी को संयमी और प्रेमबद्ध करो।

१६०६. **संप्रियौ रोचिष्णू सुमनस्यमानौ** । १२.५७
दम्पती प्रेमयुक्त, तेजोमय और सौमनस्य-युक्त हों।

१६०७. **सं वसाथां स्वर्विदा** । ११.३१
तुम दोनों सुखद मार्ग पर चलते हुए यहाँ रहो ।

१६०८. **समितं सं कल्पेथाम्** । १२.५७
तुम दोनों मिलकर रहो। तुम्हारे विचार समान हों।

१६०९. **सविता - - अग्निर्गृहपतीनाम्** । ९.३९
अग्नि गृहस्वामियों का प्रेरक है।

१६१०. **सहसे द्युम्न ऊर्जे अपत्याय** । १३.३५
शक्ति, धन, बल और सन्तान के लिए आनन्द से रहो।

१६११. **सान्तपनश्च गृहमेधी च** । १७.८५
तुम तपस्वी एवं गृहस्थ धर्म वाले होओ।

१६१२. **सुगा वो देवाः सदना अकर्म** । ८.१८
देवों ने तुम्हारे भवनों को सुगम्य बनाया है।

१६१३. **सुगृहपतिस्त्वयाऽग्नेऽहं गृहपतिना भूयासम्** । २.२७
हे अग्नि! तुम गृहपति की कृपा से मैं योग्य गृहस्वामी बनूँ।

१६१४. **सुमनाः सुमेधाः** । ३.४१
मैं सुन्दर मन वाला और मेधावी होऊँ।

१६१५. **सुशर्माऽसि सुप्रतिष्ठानः** । ८.८
तुम सुन्दर निवास वाले और विशाल साधन-संपन्न हो।

१६१६. **स्वतवांश्च प्रघासी च** । १७.८५
तुम स्वावलम्बी और सुन्दर भोजन खाने वाले हो।

१६१७. **हविर्धानं दृंहस्व** । १.९
तुम अपने भण्डार को दृढ़ करो।

(घ) नारी

१६१८. **अग्ने पत्नीरिहा वह देवानां - - सोमपीतये** । २६.२०
हे अग्नि! तुम सोमपान के लिए देवपत्नियों को यहाँ ले आओ ।

१६१९. **अदित्यै रास्नासि** । ११.५९
तुम पृथिवी के लिए मेखला-रूप हो ।

१६२०. **अरिष्टाऽहं सह पत्या भूयासम्** । ३७.२०
मै पति के साथ अक्षत रहूँ ।

१६२१. **अव्यथमाना पृथिवीं दृंह** । १३.१६
खेद-रहित होकर पृथिवी को दृढ़ करो ।

१६२२. **अषाढाऽसि सहमाना** । १३.२६
तुम अजेय और विजायिनी हो ।

१६२३. **आयुर्मे दाः** । ३७.१२
तुम मुझे दीर्घायु दो ।

१६२४. **आयुषे त्वा वर्चसे त्वा** । १४.२१
दीर्घायु और तेजस्विता के लिए मैं तुम्हें अपनाता हूँ ।

१६२५. इमा ब्रह्म पीपिहि सौभगाय । १४.२
सौभाग्य के लिए इन मंत्रों का अभ्यास करो ।

१६२६. इषे त्वोर्जे त्वा । १४.२२
अन्न और बल के लिए मैं तुझे अपनाता हूँ ।

१६२७. उत्थाय बृहती भव । ११.६४
हे नारी! तुम उन्नति करके महान् होओ ।

१६२८. उदु तिष्ठ ध्रुवा त्वम् । ११.६४
तुम निश्चल विचारों से उन्नत होओ।

१६२९. ओजो मे दाः । ३७.१२
तुम मुझे ओज दो ।

१६३०. कुलायिनी घृतवती पुरन्धिः । १४.२
तुम गृहवाली, घृतादि से युक्त और कुटुम्बिनी होओ ।

१६३१. कृष्यै त्वा क्षेमाय त्वा । १४.२१
तुम्हें कृषि और कल्याण के लिए हम रखते हैं ।

१६३२. घृतवतीह सीद प्रजावत् । १४.४
तुम घृतादि से संपन्न और प्रजायुक्त होकर यहाँ रहो ।

१६३३. तया देवतयाऽङ्गिरस्वद् ध्रुवा सीद । १३.१९
तुम उस देवता के द्वारा तेजस्वी एवं निश्चल भाव से रहो ।

१६३४. तिस्रो देवीर्बर्हिरेदं सदन्तु । २७.१९
तीन (इडा, सरस्वती, भारती) देवियाँ इस यज्ञ में बैठें ।

१६३५. तिस्रो देवीर्हिरण्ययीः । २८.३१
तीनों देवियाँ सुवर्णालंकारों से युक्त हैं ।

१६३६. त्वमुदिहि यज्ञे अस्मिन् । ११.६९
तुम इस यज्ञ में आवो ।

१६३७. धर्त्र्यसि धरणी । १४.२१
हे नारी, तुम परिवार की धारक और मर्यादाओं की पालक हो ।

१६३८. ध्रुवाऽसि धरित्री । १४.२२
तुम निश्चल रहते हुए परिवार की धारक हो ।

१६३९. ध्रुवाऽसि धरुणा । १३.१६, १४.२१
तुम निश्चल हो और परिवार का आश्रय हो ।

१६४०. पत्नीशालं गार्हपत्यः । १९.१८
यज्ञ से पत्नी-शाला और गृहस्थ-सुख मिलता है ।

१६४१. पत्नी सुकृतं बिभर्ति । १९.९४
पत्नी सत्कर्मों का पालन करती है ।

१६४२. प्रजां देवि दिदिड्ढि नः । ३४.१०
हे देवी ! हमें सुसन्तान दो ।

१६४३. प्रजां मे दाः । ३७.१२
हे देवी ! मुझे सुसन्तान दो ।

१६४४. मूर्धाऽसि राड् । १४.२१
तुम मूर्धन्य और तेजोमय हो ।

१६४५. यज्ञं नो देवीरमृतेषु धत्त । २९.८
देवियाँ हमारे यज्ञ को देवों तक पहुँचावें।

१६४६. यन्त्री राड् यन्त्र्यसि यमनी । १४.२२
तुम स्वयं संयमी, तेजोमय और परिवार की नियन्ता हो ।

१६४७. रय्यै त्वा पोषाय त्वा । १४.२२
ऐश्वर्य और पुष्टि के लिए हम तुझे लाते हैं ।

१६४८. रायस्पोषं मे दाः । ३७.१२
तुम हमें योग-क्षेम दो ।

१६४९. रुद्रासि चन्द्रासि । ४.२१
तुम कठोर और चन्द्रवत् सोम्य हो ।

१६५०. वस्व्यसि, अदितिरसि, आदित्यासि । ४.२१
तुम धनवती, सती-साध्वी और सूर्यवत् तेजोमयी हो ।

१६५१. **विश्वाभ्यो मा नाष्ट्राभ्यस्पाहि । ३७.१२**
तुम मुझे सभी संकटों से बचाओ ।

१६५२. **वृषाणं यन्तु जनयः सुपत्नीः । २०.४०**
सुन्दर पत्नियाँ अपने बलिष्ठ पति के पास जाती हैं ।

१६५३. **सरस्वतीडा - - भारती विश्वतूर्तिः । २०.४३**
सरस्वती, इडा और भारती सर्व-विजयिनी हैं ।

१६५४. **सहस्रवीर्यासि सा मा जिन्व । १३.२६**
नारी सहस्रों पराक्रम वाली है, वह मुझे सजीव करे ।

१६५५. **सहस्वारातीः सहस्व पृतनायतः । १३.२६**
शत्रुओं को जीतो और आक्रामकों को हराओ।

१६५६. **सिंही असि सपत्नसाही । ५.१०**
तुम शेरनी के तुल्य हो और शत्रु-विजयिनी हो ।

१६५७. **सिंही असि ब्रह्मवनिः क्षत्रवनिः । ५.१२**
तुम शेरनी के तुल्य हो । ज्ञान और क्षात्रबल देनेवाली हो ।

१६५८. **सिंही असि सुप्रजावनी रायस्पोषवनिः । ५.१२**
तुम शेरनी के तुल्य हो । सुसन्तान और योगक्षेम देनेवाली हो।

१६५९. **स्योने सीद सदने पृथिव्याः । १४.२**
तुम पृथिवी पर सुखद गृह में रहो ।

(ङ) पुत्र

१६६०. **नर्य प्रजां मे पाहि । ३.३७**
हे वीर पुत्र! तुम मेरी प्रजा की रक्षा करो ।

१६६१. **पुमान् पुत्रो जायते विन्दते वसु । ८.५**
योग्य पुत्र उत्पन्न होता है और वह धन कमाता है ।

१६६२. **रक्षा तोकमुत त्मना । १३.५२**
तुम स्वयं बच्चों की रक्षा करो ।

१६६३. **विश्वाहाऽरप एधते गृहे । ८.५**
पुत्र पापरहित होकर सदा फूलता-फलता है ।

१६६४. **विश्वेन्नरः स्वपत्यानि चक्रुः । २७.२३**
यजमानों ने अपने सभी पुत्रों को योग्य बनाया।

१६६५. **वीरं नर्यं पङ्क्तिराधसम् । ३७.७**
पुत्र वीर, जनहितकारी और पाँच गुने धन वाला हो ।

१६६६. **सुप्रजाः प्रजाभिः स्याम् । ३.३७**
मैं सन्तानों से योग्य सन्तान वाला होउँ।

१६६७. **सुवीरो वीरान् प्रजनयन् परीहि । ७.१३**
सुवीर तुम वीरपुत्रों को जन्म देते हुए यहाँ आवो ।

१६६८. **स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावा । १२.५१**
हमारा औरस पुत्र सुसन्तान युक्त हो ।

(च) कृषि

१६६९. **अस्मान् सीते पयसाऽभ्या ववृत्स्व । १२.७०**
हे सीता (हल की फाल)! तुम दुग्धादि से युक्त होकर हमें प्राप्त हो ।

१६७०. **कामं कामदुघे धुक्ष्व । १२.७२**
हे कामनाओं की पूरक सीता! हमारी कामनाएँ पूर्ण करो ।

१६७१. **कृते योनौ वपतेह बीजम् । १२.६८**
इस जुती हुई भूमि में बीज बोओ।

१६७२. **कृषिश्च मे वृष्टिश्च मे । १८.९**
मुझे कृषिजन्य अन्न और सुवृष्टि प्राप्त हो ।

१६७३. **कृष्टपच्याश्च मेऽकृष्टपच्याश्च मे । १८.१४**
मुझे जुते खेत में पका अन्न और स्वयं उत्पन्न अन्न प्राप्त हो ।

१६७४. **पुष्ट्यै गोपालम् । ३०.११**
गाय आदि के पोषण के लिए ग्वाले को बनाया।

१६७५. युनक्त सीरा वि युगा तनुध्वम् । १२.६८
हे कृषको! तुम हल जोतो और जूआ बाँधो ।

१६७६. वीरुधश्च म ओषधयश्च मे । १८.१४
मुझे वनस्पतियाँ और ओषधियाँ प्राप्त हों ।

१६७७. शुनं सु फाला वि कृषन्तु भूमिम् । १२.६९
हल के फाल सरलता से भूमि खोदें ।

१६७८. सं वपामि समाप ओषधीभिः । १.२१
मैं बोता हूँ और ओषधियों को जल देता हूँ ।

१६७९. समुद्रोऽसि नभस्वानार्द्रदानुः - - वाहि । १८.४५
हे वायु! तुम जल से आर्द्र, जलयुक्त और जलदाता हो, बहो।

१६८०. सीरा युञ्जन्ति कवयः । १२.६७
विद्वान् लोग हल जोतते हैं ।

१६८१. सुपिप्पला ओषधीः कर्तनास्मै । १२.६९
इसके लिए सुन्दर फलवाली ओषधियां काटकर लावें ।

१६८२. सुसस्याः कृषीस्कृधि । ४.१०
कृषि को उत्कृष्ट अन्न से युक्त करो ।

१६८३. स्वसिच इयानाः । १०.१९
नदियाँ स्वयं सिंचाई करती हुई जाती हैं।

(छ) अन्न

१६८४. अथर्य पितुं मे पाहि । ३.३७
हे गतिशील दक्षिणाग्नि! हमारे अन्न की रक्षा करो ।

१६८५. अथो अन्नस्य कीलाल उपहूतो गृहेषु नः । ३.४३
अन्नों का रस (पेय) हमारे घरों में हो ।

१६८६. अन्नं च मेऽक्षुच्च मे । १८.१०
मुझे अन्न और क्षुधा-निवृत्ति मिले।

१६८७. **अन्नपतेऽन्नस्य नो देहि, अनमीवस्य शुष्मिणः ।** ११.८३
हे अन्नपति ! हमें रोगनाशक और बलप्रद अन्न दो ।

१६८८. **अहमिषमूर्जं समग्रभम् ।** ९.४
मैंने अन्न और बल प्राप्त किया।

१६८९. **आमिक्षा वाजिनं मधु ।** १९.२१
मुझे आमिक्षा (छैना) और मधुर वाजिन (छैना से बचा शेष दुग्धभाग) प्राप्त हो ।

१६९०. **इदं पयोऽमृतं मधु ।** १९.७२
यह दूध अमृततुल्य और मधुर है।

१६९१. **इन्द्राय सुत्राम्णे सुरासोमान् ।** २१.५९
रक्षक इन्द्र के लिए मादक सोमरस दें ।

१६९२. **इषं स्तोतृभ्य आ भर ।** १५.४१, ४२
स्तुतिकर्ताओं को अन्न दो ।

१६९३. **इषे पिन्वस्वोर्जे पिन्वस्व ।** ३८.१४
अन्न और बल के लिए पुष्ट होओ ।

१६९४. **इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ।** १०.३२, १९.६, २३.३८
यहाँ पर इन्हें भोज्य वस्तुएं दो ।

१६९५. **उपो ते अन्धो मद्यमयामि ।** ७.७
हे वायु ! तुम्हारे पास मादक अन्न (सोमरस) पहुँचाता हूँ।

१६९६. **जक्षिवांसः पपिवांसश्च विश्वे ।** ८.१९
सभी देव खा-पी कर प्रसन्न होते हैं ।

१६९७. **जज्ञे मधु सारघम् ।** १९.९१
छोटी मक्खियों से मधु उत्पन्न हुआ ।

१६९८. **तां न इषमूर्जं धत्त मरुतः ।** १७.१
हे मरुत् देवो ! हमें अन्न और बल दो ।

१६९९. धानाः करम्भः सक्तवः परीवापः पयो दधि। १९.२१
हमें खील, दूध मिला सत्तू; सत्तू, भुने दाने, दूध और दही प्राप्त हों ।

१७००. पक्ष्माणि गोधूमैः । १९.८९
आँख के पलकों को गेहूँ (आटा) से साफ करो ।

१७०१. पिबा सुतस्यान्धसो मदाय । ३३.७०
आनन्द के लिए सद्यः निकाला सोमरस पीओ ।

१७०२. मधुमतीर्न इषस्कृधि । ७.२
हमारे अन्नों को मधुर बनाओ ।

१७०३. मध्वः पिबत मादयध्वम् । ९.१८
शहद का पान करो और आनन्दित रहो ।

१७०४. यदत्ति, यत् पिबति, तस्मै स्वाहा । २२.८
जो कुछ खाता-पीता है, उसके लिए यह आहुति है ।

१७०५. वाचस्पतिर्वाजं नः स्वदतु । ९.१
बृहस्पति हमारे अन्न को स्वादिष्ट करे ।

१७०६. विद्यामेषं बृजनं जीरदानुम् । ३४.४८
हम जीवनदायक अन्न और बल प्राप्त करें ।

१७०७. व्रीहयश्च मे यवाश्च मे। १८.१२
मेरे पास चावल और जौ हो ।

१७०८. सग्धिश्च मे सपीतिश्च मे । १८.९
हमारे यहाँ सहभोज और सहपान हो ।

१७०९. सोम्यं मधु पिबन्तु मदन्तु । २१.४२
वे सोमरस-युक्त मधु का पान करें और आनन्दित हों ।

१७१०. स्वधा अवस्तात् प्रयतिः परस्तात् । ३३.७४
अन्न (या प्रवृत्ति) नीचे था और प्रयत्न ऊपर था ।

(ज) शिल्प

१७११. ऊर्णासूत्रेण कवयो वयन्ति । १९.८०
विद्वान् लोग ऊन के धागे से बुनाई करते हैं।

१७१२. ऋक्सामयोः शिल्पे स्थः । ४.९
तुम दोनों ऋग्वेद और सामवेद के शिल्प (हस्तशिल्प) हो ।

१७१३. तन्तुं ततं पेशसा संवयन्ती । २०.४१
उषा और रात्रि फैले हुए रंगीन धागे से बुनाई करती हैं ।

१७१४. नमो - - वास्तुपाय । १६.३९
वास्तु-कला के रक्षकों को नमस्कार ।

१७१५. यन्त्रमशीय । ४.१८
यन्त्र (नियमन का साधन) प्राप्त करें ।

१७१६. वासो अग्ने विश्वरूपं सं व्ययस्व । ११.४०
हे अग्नि! तुम नाना प्रकार के वस्त्र पहनो ।

१७१७. सीसेन तन्त्रं मनसा मनीषिणः । १९.८०
विद्वान् लोग ध्यान से सीसा से तन्त्र (तार, अंगद आदि) बनाते हैं ।

(७) राष्ट्रीय, विश्व - कल्याण

(क) देशभक्ति

१७१८. अग्निष्ट्वाऽभि पातु मह्या स्वस्त्या । १३.१९
अग्नि महान् कल्याण के द्वारा तुम्हारी रक्षा करे ।

१७१९. अम्ब धृष्णु वीरयस्व सु । ११.६८
हे माता (नारी) ! तुम अजेय होकर वीरता का काम करो ।

१७२०. आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम् । २२.२२
हे परमात्मन् ! ब्राह्मण ब्रह्मवर्चस्वी उत्पन्न हों ।

१७२१. आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽति व्याधी महारथो जायताम् । २२.२२
हमारे राष्ट्र में क्षत्रिय शूर, बाणविद्या में निपुण, शत्रुनाशक और महारथी हों ।

१७२२. उप मां द्यौष्पिता ह्वयताम् । २.११
पिता के तुल्य द्युलोक मुझे बुलावे ।

१७२३. उप मां पृथिवी माता ह्वयताम् । २.१०
माता के तुल्य पृथिवी मुझे बुलावे ।

१७२४. उपहूता पृथिवी माता । २.१०
मैंने पृथिवी - माता को बुलाया ।

१७२५. उपहूतो द्यौष्पिता । २.११
मैंने पितृ-तुल्य द्युलोक को बुलाया ।

१७२६. एता ते अघ्न्ये नामानि । ८.४३
हे हन्या (अवध्य गाय)! तुम्हारे ये नाम हैं ।

१७२७. जिष्णू रथेष्ठाः । २२.२२
महारथी विजयी हों ।

१७२८. तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः । २५.१७
पृथिवी माता है और द्युलोक पिता है ।

१७२९. तस्यां नो देवः सविता धर्म साविषत् । ९.५
सविता देव पृथिवी पर हमारा निवास सुखद करे ।

१७३०. दृंहस्व देवि पृथिवि स्वस्तये । ११.६९
हे देवी पृथिवी ! तुम कल्याण के लिए दृढ़ हो ।

१७३१. नमो मात्रे पृथिव्यै । ९.२२
पृथिवी माता को नमस्कार ।

१७३२. निकामे-निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु । २२.२२
हमारी प्रार्थनाओं पर मेघ जलवृष्टि करें ।

१७३३. **पृथिवि मातर्मा मा हिंसीः । १०.२३**
हे पृथिवी माता ! तुम हमें कष्ट न दो ।

१७३४. **पृथिवीं दृंह, पृथिवीं मा हिंसीः । १३.१८**
पृथिवी को पुष्ट रखो । पृथिवी को हानि न पहुँचाओ ।

१७३५. **पृथिव्यसि धारया मयि प्रजां रायस्पोषम् । ११.५८**
तुम पृथिवी हो । मुझे सन्तान और योगक्षेम दो ।

१७३६. **पुनर्मा विशताद् रयिः । ८.४२**
मुझे पुनः धन मिले ।

१७३७. **पुरन्धिर्योषा । २२.२२**
नारी कुटुम्ब की पालक हो ।

१७३८. **फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम् । २२.२२**
ओषधियाँ फलवती होकर पकें ।

१७३९. **भूरसि भूमिरसि अदितिरसि विश्वधायाः । १३.१८**
हे पृथिवी ! तुम सुखदात्री, अनिर्वचनीय और विश्व की पालक हो ।

१७४०. **मातरं महीमदितिं नाम वचसा करामहे । ९.५, १८.३०**
अनिर्वचनीय पृथिवी माता की हम स्तुति करते हैं ।

१७४१. **मो अहं त्वाम् । १०.२३**
हे पृथिवी माता ! मैं तुझे हानि न पहुँचाऊँ ।

१७४२. **यदन्तरिक्षं तदु मे पिताऽभूत् । ८.९**
यह अन्तरिक्ष हमारे पिता के तुल्य है ।

१७४३. **योगक्षेमो नः कल्पताम् । २२.२२**
हमें योगक्षेम (धनलाभ और धन-सुरक्षा) प्राप्त हो ।

१७४४. **वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः । ९.२३**
हम राष्ट्र में अग्रण्य होकर जागरूक रहें ।

१७४५. **वयं स्याम सुमतौ पृथिव्याः । ११.२१**
हम पृथिवी की कृपादृष्टि में रहें ।

१७४६. विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री । १३.१८
पृथिवी सारे संसार की पालक है ।

१७४७. व्यचस्वतीं प्रथस्वतीं प्रथस्व पृथिव्यसि । १३.१७
व्यापक और विस्तृत पृथिवी को और विस्तृत करो ।

१७४८. सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम् । २२.२२
इस यजमान का पुत्र सभ्य और वीर हो ।

(ख) विश्व - कल्याण .

१७४९. गन्धर्वस्त्वा विश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्ट्यै । २.३
सर्वव्यापक परमात्मा तुम्हें विश्व के कल्याण के लिए रखे ।

१७५०. चित्रामहं वृणे सुमतिं विश्वजन्याम् । १७.७४
मैं विश्वकल्याणकारिणी , तेजोमयी सुमति चाहता हूँ ।

१७५१. दिवं दृहं , दिवं मा हिंसीः । १५.६४
द्युलोक को दृढ़ करो । द्युलोक को हानि न पहुँचाओ ।

१७५२. ध्रुवेण धर्मणा विश्वस्यारिष्ट्यै । २.३
मित्र - वरुण तुम्हें स्थिर धर्म के द्वारा विश्वकल्याण के लिए रखे ।

१७५३. प्रजापतेः प्रजा अभूम । ९.२१
हम प्रजापति (परमात्मा) की सन्तान हैं ।

१७५४. ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च । २६.२
वेदों का ज्ञान ब्राह्मण , क्षत्रिय , वैश्य , शूद्र , अपने और पराए सबके लिए है ।

१७५५. यथा नः सर्वमिज्जगद् अयक्ष्मं सुमना असत् । १६.४
यह सारा संसार नीरोग और सौमनस्य - युक्त हो ।

१७५६. यथा नः सर्व इज्जनोऽनमीवः - - सुमना असत् ।३३.८६
संसार के सभी लोग नीरोग और प्रसन्नचित्त हों ।

१७५७. यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे । १६.४८
सभी मनुष्य और पशुओं का कल्याण हो ।

१७५८. यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः । २६.२
इस कल्याणी वेदवाणी का सभी लोगों के लिए उपदेश देता हूँ ।

१७५९. लोकं पृण, छिद्रं पृण । १२.५४, १५.५९
संसार को पुष्ट करो । न्यूनताओं को पूर्ण करो ।

१७६०. विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन् अनातुरम् । १६.४८
इस ग्राम में सभी हृष्ट - पुष्ट और नीरोग हों ।

१७६१. शिवाः कृत्वा दिशः सर्वाः स्वं योनिमिहाऽसदः । १२.५९
सभी दिशाओं को सुखमय बनाकर अपने स्थान पर बैठो ।

(८) दार्शनिक

(क) ईश्वर, ब्रह्म

१७६२. अग्निः पूषण्वान् - - अमर्त्यः । २१.१५
अग्नि (ईश्वर) संसार का पोषक और अमर है ।

१७६३. अग्ने त्वं नो अन्तम उत त्राता । १५.४८
हे अग्नि (ईश्वर) ! तुम हमारे अतिनिकट मित्र और रक्षक हो ।

१७६४. अग्ने नय सुपथा राये । ४०.१६
हे अग्नि (परमात्मा) ! तुम हमें ऐश्वर्य के लिए सन्मार्ग पर ले चलो ।

१७६५. अच्युतक्षिदसि दिवं दृंह । ५.१३
तुम अक्षर में निवास करने वाले हो । द्युलोक को दृढ़ करो ।

१७६६. अजस्य नाभावध्येकमर्पितम् । १७.३०
अजन्मा परमात्मा में यह सृष्टि निहित है ।

१७६७. अजोऽस्येकपात् । ५.३३
वह परमात्मा अजन्मा है । उसके एक पैर में सारा संसार है ।

१७६८. अजो ह्यग्नेरजनिष्ट शोकात् । १३.५१
अग्नि (ब्रह्म) के तेज से अज (अनादि, प्रकृति) प्रकट हुआ ।

१७६९. अतिथिर्दुरोणसत् । १०.२४
वह ईश्वर अतिथि के तुल्य है और शरीररूपी घर में रहता है ।

१७७०. अधि नो ब्रूहि सुमनस्यमानः । १५.२
हे परमात्मन् ! हमें प्रसन्नचित्त होकर उपदेश दें ।

१७७१. अधि नो ब्रूहि सुमना अहेडन् । १५.१
हे परमात्मन् ! हमें प्रसन्नमन और प्रेमभाव से उपदेश दें ।

१७७२. अध्वपते प्र मा तिर । ५.३३
हे संसारमार्ग के स्वामी ! मुझे पार लगाओ ।

१७७३. अनु देवा ममिरे वीर्यं ते । २९.१९
हे ईश्वर ! देवों ने तुम्हारी शक्ति का अनुमान लगाया है ।

१७७४. अनु व्रातासस्तव सख्यमीयुः । २९.१९
मानवसमूह ने तेरी मित्रता प्राप्त की ।

१७७५. अनेजदेकं मनसो जवीयः । ४०.४
वह ईश्वर अचल, एक और मन से अधिक तीव्रगति वाला है ।

१७७६. अन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषि । १७.९९
वह परमात्मा समुद्र के अन्दर, हृदय में और समस्त जीवन में व्याप्त है ।

१७७७. अपश्यं गोपामनिपद्यमानम् । ३७.१७
मैंने रक्षक और अविनाशी परमात्मा का दर्शन किया ।

१७७८. अमृतमसि । १.३१, ४.१८
हे ब्रह्म ! तुम अमृतरूप हो ।

१७७९. अस्य प्राणादपानती । ३.७
इस ईश्वर की शक्ति प्राण और अपान शक्ति देती है ।

१७८०. आत्मनात्मानमभि सं विवेश । ३२.११
जीव आत्मा के रूप में परमात्मा में प्रवेश करता है ।

१७८१. आदित्यवर्णं तमसः परस्तात् । ३१.१८
वह ईश्वर सूर्य के तुल्य रूपवाला और अंधकार से परे है ।

१७८२. आनन्दाय त्वा महसे त्वा । १९.८
आनन्द और तेज के लिए हम तुम्हें अपनाते हैं ।

१७८३. **आ वरीवर्ति भुवनेष्वन्तः । ३७.१७**
वह सारे संसार में व्याप्त है ।

१७८४. **आसुरी माया स्वधया कृताऽसि । ११.६९**
ज्ञान से आसुरी माया (शक्तिशाली बुद्धि) बनी है ।

१७८५. **इच्छन्ति त्वा सोम्यासः सखायः । ३४.१८**
सोम्य गुणों वाले मित्र परमात्मा को चाहते हैं ।

१७८६. **इन्द्र त्वदा कश्चन हि प्रकेतः । ३४.१८**
हे इन्द्र (परमात्मन्) ! तुझसे अधिक ज्ञानवान् और कोई नहीं है ।

१७८७. **ईशा वास्यमिदं सर्वम् । ४०.१**
यह सारा संसार ईश्वर से व्याप्त है ।

१७८८. **उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनाम् ।**
धिया विप्रो अजायत । २६.१५
पर्वतों की गुफाओं में और नदियों के संगम पर चिन्तन से विप्र (विद्वान्, ज्ञानी) होता है ।

१७८९. **उपावीरसि । ६.७**
तुम समीप रहकर रक्षा करने वाले हो ।

१७९०. **उरु यन्तासि । ५.३५**
तुम महान् नियन्ता हो ।

१७९१. **उशिगसि कविरङ्घारिरसि । ५.३२**
तुम कमनीय हो, क्रान्तदर्शी हो और पापनाशक हो ।

१७९२. **ऊरू तदस्य यद् वैश्यः । ३१.११**
वैश्य उस परमात्मा के जंघा के तुल्य हैं ।

१७९३. **ऊर्जा गृह्णाम्यक्षितम् । ३८.२६**
उस अक्षय ब्रह्म को मैं शक्ति से पकड़ता हूँ ।

१७९४. ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत् । १०.२४
वह ब्रह्म सत्य से उत्पन्न होता है, पर्वतों पर समाधि से उत्पन्न होता है। सत्यरूप है और महान् है ।

१७९५. ऋतधामासि स्वर्ज्योतिः । ५.३२
उस ब्रह्म का सत्य ही स्थान है । वह आनन्दरूप और ज्योतिरूप है ।

१७९६. ऋतस्य तन्तुं विततं विचृत्य । ३२.१२
ऋत के आधार रूप तन्तु ब्रह्म को जानकर हम उसको प्राप्त करते हैं ।

१७९७. एक इदु राजा जगतो बभूव । २५.११
वह परमात्मा एकमात्र संसार का राजा है ।

१७९८. एतावानस्य महिमाऽतो ज्यायांश्च पूरूषः । ३१.३
यह संसार उसकी महिमा है । वह परमात्मा इससे भी महान् है ।

१७९९. एधोऽस्येधिषीमहि । ३८.२५
तुम वृद्धिकर्ता हो । हम निरन्तर बढ़ें ।

१८००. ओ खं ब्रह्म । ४०.१७
वह ब्रह्म प्रणवरूप है और आकाशवत् है ।

१८०१. ओजोऽस्योजो मयि धेहि । १९.९
हे ईश्वर ! तुम ओजरूप हो, मुझे ओज दो ।

१८०२. कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूः । ४०.८
वह ईश्वर क्रान्तदर्शी, विद्वान्, सर्वव्यापक और स्वयंभू है ।

१८०३. चतुस्त्रिंशत् तन्तवो ये वितत्निरे । ८.६१
संसार में ३४ तन्तु (तत्त्व) फैले हुए हैं ।

१८०४. चन्द्रमसि । ४.१८
हे ईश्वर ! तुम चन्द्रमा के तुल्य आह्लादक हो ।

१८०५. चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत । ३१.१२
परमात्मा की मनः शक्ति से चन्द्रमा उत्पन्न हुआ और नेत्र - शक्ति से सूर्य।

१८०६. चन्द्रमास्ते महिमा । २३.४
चन्द्रमा तुम्हारी महिमा है ।

१८०७. चित्पतिर्मा पुनातु । ४.४
चेतना का स्वामी परमात्मा मुझे पवित्र करे ।

१८०८. ज्योक् ते सन्दृशि जीव्यासम् । ३६.१९
चिरकाल तक तुम्हारी कृपादृष्टि में जीवित रहूँ ।

१८०९. ज्योतिरसि विश्वरूपम् । ५.३५
तुम सभी रूपों वाली ज्योति हो ।

१८१०. ततान वाजमर्वत्सु पय उस्रियासु । ४.३१
तुमने घोड़ो में शक्ति और गायों में दूध दिया है ।

१८११. ततो विराडजायत । ३१.५
परम पुरुष से विराट् उत्पन्न हुआ ।

१८१२. तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः । ४०.७
एकत्व का ज्ञान होने पर मोह और शोक कहाँ ?

१८१३. तदपश्यत् तदभवत् तदासीत् । ३२.१२
आत्मदर्शन से साधक तद्रूप और आत्मरूप हो जाता है ।

१८१४. तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः । ४०.५
वह ईश्वर सबके अन्दर है और सबके बाहर है ।

१८१५. तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वन्तिके । ४०.५
वह गतिशील है, गतिहीन है, दूर है और समीप है ।

१८१६. तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म । ३२.१
वह वीर्यरूप है, वह ब्रह्म है ।

१८१७. तदेवाग्निस्तदादित्यः । ३२.१
वह ब्रह्म ही अग्नि है, वही सूर्य है ।

१८१८. तद् धावतोऽन्यानत्येति तिष्ठत् । ४०.४
वह एक स्थान पर रहता हुआ, दौड़ने वाले से आगे निकल जाता है ।

१८१९. तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः । ३२.१
वह ब्रह्म ही वायु है, वही चन्द्रमा है ।

१८२०. तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिम् । २५.१८
वह ब्रह्म अधिपति है, जंगम और स्थावर का स्वामी है ।

१८२१. तमेव विदित्वाऽति मृत्युमेति । ३१.१८
उस परमात्मा को जानकर ही मनुष्य मृत्यु पर विजय पाता है ।

१८२२. तव स्याम शर्मन् । १५.१
हम परमात्मा की सुरक्षा में रहें ।

१८२३. तस्माद् यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे । ३१.७
उस सर्वत्यागी ईश्वर से ऋग्वेद और सामवेद उत्पन्न हुए ।

१८२४. तस्मिन्नपो मातरिश्वा दधाति । ४०.४
अग्नि (जीवात्मा) उस परमात्मा में अपने कर्मों को रखता है ।

१८२५. तस्मिन् ह तस्थुर्भुवनानि विश्वा । ३१.१९
उस परमात्मा में ही सारे लोक रहते हैं ।

१८२६. ता आपः स प्रजापतिः । ३२.१
वह ब्रह्म ही जल और प्रजापति है ।

१८२७. तान्यन्तः पुरुषे अर्पितानि । २३.५२
पंचभूत और पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ आदि ईश्वर में स्थापित हैं ।

१८२८. तितिक्षन्ते अभिशस्तिं जनानाम् । ३४.१८
तत्त्वज्ञ व्यक्ति दुर्जनों के दुर्वचनों को सहन करते हैं ।

१८२९. तेजोऽसि । १.३१
हे ईश! तुम तेज - स्वरूप हो ।

१८३०. तेजोऽसि तेजो मयि धेहि । १९.९
हे ईश! तुम तेज रूप हो, मुझे तेज दो ।

१८३१. तेन देवा देवतामग्रमायन् । १३.५१
उस परमात्मा के कारण अन्य देव श्रेष्ठ देवत्व को प्राप्त हुए ।

१८३२. **तेषामिष्टानि समिषा मदन्ति । १७.२६**
ईशभक्तों के अभीष्ट अन्नादि से देव संपुष्ट होते हैं ।

१८३३. **त्रिपादस्यामृतं दिवि । ३१.३**
उस परमात्मा का तीन - चौथाई अंश द्युलोक में है ।

१८३४. **त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः । ३१.४**
वह परमात्मा तीन - चौथाई अंश से ऊपर उठा ।

१८३५. **त्रीणि ज्योतींषि सचते स षोडशी । ३२.५**
वह षोडशकलायुक्त ईश्वर तीन प्रकाशों (सूर्य, चन्द्र, अग्नि) को करता है ।

१८३६. **त्रीणि पदानि निहिता गुहाऽस्य । ३२.९**
उस परमात्मा का तीन - चौथाई अंश हृदयरूपी गुफा में है ।

१८३७. **त्वष्टारमिह यक्षि विद्वान् । २९.३४**
हे विद्वान् ! तुम उस सृष्टिनिर्माता के लिए यज्ञ करो ।

१८३८. **त्वष्टा वीरं देवकामं जजान । २९.९**
वह त्वष्टा देवभक्त पुत्र को जन्म देता है ।

१८३९. **त्वष्टेदं विश्वं भुवनं जजान । २९.९**
त्वष्टा ने यह सारा संसार बनाया है ।

१८४०. **त्वामिद्धि हवामहे सातौ वाजस्य कारवः । २७.३७**
हम स्तुतिकर्ता शक्ति की प्राप्ति के लिए तुम्हें ही पुकारते हैं ।

१८४१. **द्यावाभूमी जनयन् देव एकः । १७.१९**
वह अकेला ईश्वर द्युलोक और पृथिवी को उत्पन्न करता है ।

१८४२. **द्यौस्ते पृष्ठं, पृथिवी सधस्थम्, आत्माऽन्तरिक्षं, समुद्रो योनिः । ११.२०**
द्युलोक उसकी पीठ है, पृथिवी सहस्थान है, अन्तरिक्ष आत्मा है और समुद्र जन्मस्थान है ।

१८४३. **धर्ता देवो देवानाम्, अमर्त्यस्तपोजाः । ३७.१६**
वह ईश्वर अमर, तपोमय और देवों का धर्ता है ।

१८४४. धामं ते विश्वं भुवनमधि श्रितम् । १७.९९
सारा संसार तुम्हारा धाम (घर) है ।

१८४५. धाम नामासि । १.३१
सर्वाधार तुम्हारा नाम है ।

१८४६. धामानि वेद भुवनानि विश्वा । १७.२७
वह ईश्वर सारे स्थानों और लोकों को जानता है ।

१८४७. ध्रुवक्षिदसि अन्तरिक्षं दृंह । ५.१३
तुम निश्चल स्थान में रहने वाले हो, अन्तरिक्ष को दृढ़ करो ।

१८४८. ध्रुवोऽसि पृथिवीं दृंह । ५.१३
तुम निश्चल हो, पृथिवी को दृढ़ करो ।

१८४९. न तं विदाथ य इमा जजान । १७.३१
जिसने ये सारे जीव बनाए हैं, इसे तुम नहीं जानते हो ।

१८५०. न तस्य प्रतिमा अस्ति । ३२.३
उस परमेश्वर की प्रतिमा (मूर्ति) नहीं है ।

१८५१. न ते दूरे परमा चिद् रजांसि । ३४.१९
सुदूरस्थ स्थान भी तुमसे दूर नहीं है ।

१८५२. न त्वदन्यो मघवन् अस्ति मर्डिता । ६.३७
हे ऐश्वर्ययुक्त ईश ! तुम्हारे अतिरिक्त और कोई दयालु नहीं हैं ।

१८५३. न त्वावाँ अन्यो दिव्यो न पार्थिवः । २७.३६
हे ईश ! तेरे जैसा और कोई दिव्य या पार्थिव वस्तु नहीं है ।

१८५४. नमस्ते अस्तु मा मा हिंसीः । ३७.२०
हे ईश ! तुम्हें नमस्ते । तुम हमें हानि न पहुँचाओ ।

१८५५. नमस्ते भगवन्नस्तु यतः स्वः समीहसे । ३६.२१
हे भगवन् ! आपको नमस्ते । तुम जो भी सुख चाहते हो, वह हमें दो ।

१८५६. नमो रुचाय ब्राह्मये । ३१.२०
ब्रह्म - तेज के लिए नमस्कार ।

१८५७. नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय । ३१.१८
ब्रह्मज्ञान के अतिरिक्त मोक्ष का और कोई मार्ग नहीं है ।

१८५८. नृषद् वरसद् ऋतसद् । १०.२४
वह ब्रह्म पवित्र मनुष्यों में, श्रेष्ठ पुरूषों में और सत्यनिष्ठों में रहता है ।

१८५९. नैनद् देवा आप्नुवन् पूर्वमर्शत् । ४०.४
पहले से विद्यमान उस ईश्वर को ज्ञानेन्द्रियाँ नहीं प्राप्त कर पाती हैं ।

१८६०. पञ्चस्वन्तः पुरुष आ विवेश । २३.५२
वह ईश्वर पंच महाभूतों में प्रविष्ट है ।

१८६१. पद्भ्यां शूद्रो अजायत । ३१.११
उस ईश्वर के पैर के तुल्य शूद्र हैं ।

१८६२. परमेष्ठ्यभिधीतः प्रजापतिर्वाचि व्याहृतायाम् । ८.५४
'भूर्भुवः स्वः' महाव्याहृति से परमेष्ठी प्रजापति का बोध होता है ।

१८६३. परिवीरसि । ६.६
हे ईश ! तुम चारों ओर व्याप्त हो ।

१८६४. परीत्य भूतानि परीत्य लोकान् । ३२.११
वह ईश्वर सारे पंच भूतों और लोकों में व्याप्त है ।

१८६५. परीत्य सर्वाः प्रदिशो दिशश्च । ३२.११
वह ईश्वर सारी दिशाओं और उपदिशाओं में व्याप्त है ।

१८६६. पश्चात् कवयो यन्ति रेभाः । २९.२३
उसके पीछे स्तुतिकर्ता कवि चलते हैं ।

१८६७. पादोऽस्य विश्वा भूतानि । ३१.३
सारा संसार उसका एक - चौथाई अंश है ।

१८६८. पाहि चतसृभिर्वसो । २७.४३
हे आश्रयदाता ईश्वर ! तुम चार वेदरूपी शक्तियों से हमारी रक्षा करो ।

१८६९. पाहि नो अग्न एकया । २७.४३
हे अग्नि ! तुम एक वेदरूपी शक्ति से हमारी रक्षा करो ।

१८७०. पिता नोऽसि पिता नो बोधि । ३७.२०
हे ईश्वर ! तुम पिता हो । हे पिता! तुम हमारी सुध लो ।

१८७१. पुत्रान् पशून् मयि धेहि । ३७.२०
हे ईश्वर ! तुम मुझे पुत्र और पशु दो ।

१८७२. पुरुष एवेदं सर्वं यद् भूतं यच्च भाव्यम् । ३१.२
भूत, वर्तमान और भविष्य, सब कुछ परमात्मा ही है ।

१८७३. पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे । २५.१८
हे पुष्टिकर्ता देव ! हमारे ऐश्वर्य की वृद्धि के लिए होओ ।

१८७४. प्रजापतिर्वृषाऽसि । ८.१०
तुम सुखों के वर्षक प्रजापति हो ।

१८७५. प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तरजायमानः । ३१.१९
वह अजन्मा प्रजापति विभिन्न गर्भों में विचरण करता है ।

१८७६. देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि । १.३१
तुम देवों के प्रिय, अधृष्य और देवों को प्राप्य हो ।

१८७७. प्रियं मित्रं न शंसिषम् । २७.४२
हे ईश्वर! मैंने प्रिय मित्र की तरह तुम्हारी स्तुति की है ।

१८७८. बलमसि बलं मयि धेहि । १९.९
हे ईश्वर ! तुम बलरूप हो । मुझे बल दो ।

१८७९. ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्तात् । १३.३
ब्रह्म सर्वप्रथम प्रकट हुआ ।

१८८०. ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः । ३१.११
ब्राह्मण ईश्वर के मुख - तुल्य हैं और क्षत्रिय बाहु - तुल्य ।

१८८१. भद्रो मेऽसि । ४.३४
हे ईश्वर ! तुम मेरे लिए शुभ हो ।

१८८२. भवा नो अर्वाङ् । १५.४६
हे ईश्वर ! तुम हमारी ओर आवो ।

१८८३. **भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम । ५.३६**
हे ईश ! हम तुम्हें बहुत नमस्कार करते हैं ।

१८८४. **मन्युरसि मन्युं मयि धेहि । १९.९**
हे ईश ! तुम उत्साहरूप हो । हमें उत्साह दो ।

१८८५. **मयि गृहणाम्यक्षितम् । ३८.२६**
मैं अक्षय ईश को अपने अन्दर रखता हूँ ।

१८८६. **महीं साहस्रीम् असुरस्य मायाम् । १३.४४**
महाशक्ति युक्त वरुण की माया (बुद्धि) महान् और सहस्रों उपकार करने वाली है ।

१८८७. **मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः । ३७.२**
सविता देव की यह महान् स्तुति है ।

१८८८. **महो देवो मर्त्यां आ विवेश । १७.९१**
वह महादेव ईश्वर मनुष्यों में प्रविष्ट है ।

१८८९. **मा मा सन्ताप्तम् । ५.३३**
तुम दोनों मुझे दुःख न दो ।

१८९०. **यः पार्थिवानि विममे स एतशः । ११.६**
उस तेजोमय ईश ने पार्थिव लोकों को बनाया है ।

१८९१. **य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषम् । २५.१३**
वह आत्मिक शक्ति और बल देने वाला है । सब उसकी आज्ञा मानते हैं ।

१८९२. **या आबभूव भुवनानि विश्वा । ३२.५**
वह सारे लोकों में व्याप्त है ।

१८९३. **य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः । २३.३, २५.११**
वह ईश मनुष्य और पशुओं का स्वामी है ।

१८९४. **यत्राधि सूर उदितो विभाति । ३२.७**
जिसमें सूर्य उदय होकर प्रकाशित होता है ।

१८९५. यत्रा सप्त ऋषीन् पर एकमाहुः । १७.२६
उसमें सप्त ऋषि (५ ज्ञानेन्द्रियाँ, मन, बुद्धि) एकरूप हो जाते हैं ।

१८९६. यद् युष्माकमन्तरं बभूव । १७.३१
जो तुम्हारे अन्दर रहता है ।

१८९७. यन्तासि धर्ता । २२.३
वह नियन्ता और धर्ता है ।

१८९८. यस्तानि वेद स पितुः पिताऽसत् । ३२.९
जो ब्रह्म के तीन पैरों (परा आदि) को जानता है, वह पिता का पिता हो जाता है (अर्थात् महाविद्वान् हो जाता है) ।

१८९९. यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्, तस्य देवा असन् वशे । ३१.२१
जो ब्राह्मण ब्रह्म को जान लेता है, देवता उसके वश में हो जाते हैं ।

१९००. यस्मिन् लोका अधिश्रिताः । २०.३२
उसमें सारे लोक आश्रित हैं ।

१९०१. यस्मिन् विश्वानि भुवनानि तस्थुः । १७.३०
उसमें सारे भुवन अधिष्ठित हैं ।

१९०२. यस्य च्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः । २५.१३
उसकी कृपा अमृत है और अकृपा मृत्यु है ।

१९०३. यस्येमे हिमवन्तो महित्वा । २५.१२
उसकी महिमा से ये हिम वाले पर्वत रुके हैं ।

१९०४. याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधात् शाश्वतीभ्यः समाभ्यः । ४०.८
उसने सारी प्रजा को यथायोग्य धन दिया ।

१९०५. युयोध्यस्मद् जुहुराणमेनः । ४०.१०
हे ईश! तुम हमारे कुटिल पापों को दूर करो ।

१९०६. येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा । ३२.६
उसने उग्र द्युलोक और पृथिवी को दृढ़ किया है ।

११०७. येन स्वः स्तभितं येन नाकः । ३२.६
उसने स्वर्ग और द्युलोक को स्थिर किया ।

११०८. यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः । ३२.६
वह अन्तरिक्ष में लोकों को रोक कर रखने वाला है ।

११०९. यो देवानां नामधा एक एव । १७.२७
वह देवों के विविध नाम रखने वाला एक ही देव है ।

१११०. यो देवेष्वधि देव एक आसीत् । २७.२६
वह देवों में एकमात्र बड़ा देव है ।

११११. यो नः पिता जनिता यो विधाता । १७.२७
वह हमारा पिता, जनक और कर्ता है ।

१११२. यो भूतानामधिपतिः । २०.३२
वह पंचभूतों का स्वामी है ।

१११३. योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहम् । ४०.१७
जो सूर्य में पुरुष (ब्रह्म) है, वह मुझमें भी है ।

१११४. रजांसि देवः सविता महित्वना । ११.६
सविता देव ने अपनी महिमा से लोकों को रोका है ।

१११५. वाक्पतिर्मा पुनातु । ४.४
वाणी का स्वामी वह ईश्वर हमें पवित्र करे ।

१११६. वाचस्पतिं विश्वकर्माणमूतये - - हुवेम । १७.२३
विश्वकर्मा वाचस्पति (ईश्वर) को रक्षा के लिए हम पुकारते हैं ।

१११७. विचितस्त्वा वि चिन्वन्तु । ४.२४
विवेकी पुरुष तुझे ग्रहण करें ।

१११८. विद्मा तमुत्सं यत आजगन्थ । १२.१९
हम उस स्रोत को जानते हैं, जहाँ से तुम उत्पन्न हुए हो ।

१११९. विद्मा ते नाम परमं गुहा यत् । १२.१९
तुम्हारी गुफा (बुद्धि) में स्थित परम नाम (ओम्) को हम जानते हैं ।

१९२०. **विभूरसि** । ५.३१
तुम सर्वव्यापक हो ।

१९२१. **विश्वतश्चक्षुरसि विश्वतोमुखः** । १७.१९
तुम्हारे नेत्र और मुख सब ओर हैं ।

१९२२. **विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्** । १७.१९
तुम्हारे बाहु और पैर सब ओर हैं ।

१९२३. **विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्** । ५.३६
तुम हमारे सारे कर्मों को जानते हो ।

१९२४. **विश्वो देवस्य नेतुर्मर्तो वुरीत सख्यम्** । ४.८, २२.२१
उस नियन्ता देव से सभी मनुष्य मित्रता चाहते हैं ।

१९२५. **वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि** । १९.९
हे ईश! तुम शक्तिरूप हो, मुझे शक्ति दो ।

१९२६. **वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्** । ३१.१८
मैं उस परम पुरुष को जानता हूँ ।

१९२७. **वेनस्तत् पश्यन्निहितं गुहा सत्** । ३२.८
बुद्धिरूपी गुफा में स्थित उस ब्रह्म को विद्वान् ही देख पाते हैं ।

१९२८. **वैश्वदेवमसि** । ४.१८
तुम सर्वदेवमय हो ।

१९२९. **शं च नस्कृधि** । ३४.८
तुम हमारा कल्याण करो ।

१९३०. **शतं भवास्यूतये** । २७.४१
तुम हमारी रक्षा के लिए सैकड़ों रूप में हो जाते हो ।

१९३१. **शर्मासि शर्म मे यच्छ** । ४.९
तुम कल्याणरूप हो, मुझे कल्याण दो ।

१९३२. **शिक्षा सखिभ्यः** । १७.२१
तुम अपने मित्रों को ज्ञान दो ।

१९३३. शिवो भवा वरूथ्यः । १५.४८
तुम रक्षक हो। हमारे लिए शुभ होओ ।

१९३४. शुक्रमसि । १.३१, ४.१८
तुम शुक्र (शक्ति, बल) -रूप हो ।

१९३५. शुक्रस्ते ग्रहूयः । ४.२४
शुक्र (तेज, वीर्य) तुम्हारे ग्रहण का साधन है ।

१९३६. श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यौ । ३१.२२
श्री (ऐश्वर्य) और लक्ष्मी (कान्ति) तुम्हारी दो पत्नियाँ हैं ।

१९३७. षोडशी शर्म यच्छतु । २६.१०
षोडश कलायुक्त ईश्वर सुख दे ।

१९३८. स एव जातः स जनिष्यमाणः । ३२.४
वही संसाररूप में उत्पन्न हुआ है, वही उत्पन्न होगा ।

१९३९. स ओतः प्रोतश्च विभूः प्रजासु । ३२.८
वह व्यापक प्रभु सारी प्रजाओं में ओत-प्रोत है ।

१९४०. सखीनामविता जरितॄणाम् । २७.४१
वह स्तुति करने वाले मित्रों (उपासकों) का रक्षक है ।

१९४१. स चेत्ता देवता पदम् । २२.१०
वह ईश्वर सर्वज्ञ है, देवता और ज्ञानियों का गन्तव्य स्थान है ।

१९४२. सतश्च योनिमसतश्च वि वः । १३.३
वह ईश्वर सत् (मूर्त) वस्तुओं का कारण और अमूर्त (वायु आदि) का प्रकाशक है ।

१९४३. सत्यः सो अस्य महिमा गृणे । ३३.८३
उस ईश की यह महिमा सत्य है । उसकी मैं स्तुति करता हूँ ।

१९४४. स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमाम् । १३.४, २३.१, २५.१०
वह ईश इस पृथिवी और द्युलोक को धारण करता है ।

१९४५. स नो बन्धुर्जनिता स विधाता । ३२.१०
वह ईश हमारा बन्धु, जनक और विधाता है ।

१९४६. स पर्यगात् शुक्रमकायमव्रणम् । ४०.८
वह ईश सर्वव्यापक, शक्तिरूप, अशरीरी और अक्षत है ।

१९४७. समुद्रोऽसि विश्वव्यचाः । ५.३३
वह ईश ज्ञान का समुद्र है और सर्वव्यापक है ।

१९४८. सम्राडसि कृशानुः । ५.३२
वह ईश सम्राट् है और अग्नि रूप है ।

१९४९. सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न वि चिकित्सति । ४०.६
ज्ञानी सारे प्राणियों में परमात्मा को देखता है, अतः उसे सन्देह नहीं रहता।

१९५०. सर्वे निमेषा जज्ञिरे विद्युतः पुषादधि । ३२.२
उस तेजोमय पुरुष से सारे काल के भेद क्षण आदि उत्पन्न हुए।

१९५१. सहस्रशीर्षा पुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् । ३१.१
उस परम पुरुष के असंख्य सिर, आँख और पैर हैं ।

१९५२. सहोऽसि सहो मयि धेहि । १९.९
हे ईश! तुम शक्तिरूप हो, मुझे शक्ति दो ।

१९५३. सुम्नाय नूनमीमहे सखिभ्यः । १५.४८
हम मित्रों के साथ सुख के लिए तुम्हारी प्रार्थना करते हैं ।

१९५४. सूर्यस्ते महिमा । २३.२
सूर्य तुम्हारी महिमा है ।

१९५५. स्वयंभूरसि श्रेष्ठः । २.२६
तुम स्वयंभू हो और सर्वश्रेष्ठ हो ।

१९५६. हंसः शुचिषद् । १०.२४, १२.१४
तुम सत्य-असत्य के विवेकी हंस हो। पवित्र आत्माओं में रहते हो ।

१९५७. हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् । ४०.१७
सुनहरी आवरण से सत्य का मुँह ढका हुआ है ।

१९५८. हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे । १३.४
वह ज्योतिर्मय ईश सबसे पहले प्रकट हुआ ।

१९५९. हिरण्ययो वेतसो मध्य आसाम् । १७.९३
इन वाणियों के मध्य में एक ज्योतिर्मय बेंत (अग्नि) है ।

१९६०. हृत्सु क्रतुं वरुणः (अदधात्) । ४.३१
वरुण ने हृदयों में संकल्पशक्ति रखी ।

(ख) जीव

१९६१. असुतृप उक्थशासश्चरन्ति । १७.३१
पेटपूजक व्यक्ति तत्त्वज्ञान के बिना केवल मंत्रपाठ करते हैं ।

१९६२. आशुर्भव । ११.४४
शीघ्र कर्म करने वाला होओ ।

१९६३. इन्द्रस्य युज्यः सखा । १०.३१
जीवात्मा परमात्मा का योग्य मित्र है ।

१९६४. इन्द्रो वीर्यमकृणोत् । २.८
इन्द्र (जीव) ने पराक्रम किया ।

१९६५. उदु तिष्ठ स्वध्वर । ११.४१
हे सुन्दर यज्ञ करने वाले जीव! तुम निरन्तर उठो ।

१९६६. ऐन्द्रमसि वैश्वदेवमसि । ५.३०
हे जीव! तुम इन्द्र और सारे देवों की शक्ति वाले हो ।

१९६७. ओं क्रतो स्मर । ४०.१५
हे कर्मठ जीव! तुम ओम् का स्मरण करो ।

१९६८. कृतं स्मर । ४०.१५
हे जीव! तुम अपने किए कर्मों को स्मरण करो ।

१९६९. क्लिबे स्मर । ४०.१५
हे जीव! अपनी त्रुटियों को स्मरण कर ।

१९७०. तव चित्तं वात इव ध्रजीमान् । २९.२२

हे जीव! तुम्हारा चित्त वायु की तरह तीव्र गतिवाला है ।

१९७१. तव शरीरं पतयिष्णु अर्वन् । २९.२२

हे जीव! तुम्हारा शरीर नश्वर है ।

१९७२. देवद्रीचा मनसा दीध्यानः । २९.२३

हे जीव! तुम देवाभिमुख मन से ध्यान करो ।

१९७३. नीहारेण प्रावृता जल्प्याः । १७.३१

अज्ञान से घिरे व्यक्ति गप्पी होते हैं ।

१९७४. पृथुर्भव । ११.४४

हे जीव! तुम अपना विस्तार करो ।

१९७५. भस्मान्तं शरीरम् । ४०.१५

यह शरीर भस्मान्त है ।

१९७६. शिवो भव प्रजाभ्यो मानुषीभ्यः । ११.४५

हे जीव! तुम मानवी प्रजा के लिए सुखकर होओ ।

१९७७. शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्राः । ११.५.

हे समस्त अमृत-पुत्रो! मेरी बात सुनो ।

१९७८. शोचस्व देववीतमः । ११.३७

हे देवभक्तों में श्रेष्ठ जीव! तुम सदा चमको ।

१९७९. सं सीदस्व महाँ असि । ११.३७

तुम महान् हो, सुख से बैठो ।

१९८०. स त्वमग्निं वैश्वानरं गच्छ । २२.३

तुम लोकहितकारी अग्नि के पास जाओ ।

१९८१. सरस्वत्यश्विभ्यामीयते रथः । २१.५५

यह शरीररूपी रथ बुद्धि और प्राणापान के द्वारा ढोया जाता है ।

१९८२. सुजातो ज्योतिषा सह । ११.४०

ज्योति के साथ तुम्हारा सुन्दर जन्म हुआ है ।

१९८३. स्थिरो भव वीड्वङ्ग । ११.४४
हे पुष्ट अंगों वाले जीव! तुम स्थिर रहो ।

(ग) प्रकृति, सृष्टि

१९८४. अपां गर्भं व्यदधात् पुरुत्रा । १७.३२
बादलों ने जलीय गर्भ को पृथिवी पर अनेक स्थानों पर रखा ।

१९८५. अश्वत्थे वो निषदनम् । ३५.४
अश्वत्थ (नश्वर संसार) में तुम्हारा निवास है ।

१९८६. उत वा दिवस्परि । १३.४५
यह सृष्टि द्युलोक से हुई हैं ।

१९८७. कं स्विद् गर्भं प्रथमं दध्र आपः । १७.२९
जल ने पहले किस गर्भ को धारण किया ?

१९८८. तमिद् गर्भं प्रथमं दध्र आपः । १७.३०
जल ने पहले उस गर्भ को धारण किया अर्थात् जल से सृष्टि हुई ।

१९८९. पर्णे वो वसतिष्कृता । ३५.४
पत्ते पर (क्षणिक संसार में) तुम्हारा निवास है ।

१९९०. यत्र देवाः समगच्छन्त विश्वे । १७.३०
इस जगत् (सृष्टि) में सारे देव (तत्त्व) एकत्र हैं ।

१९९१. येन प्रजा विश्वकर्मा जजान । १३.४५
विश्वकर्मा ने प्रजाओं (सृष्टि) को उत्पन्न किया ।

१९९२. यो अग्निरग्नेरध्यजायत । १३.४५
यह भौतिक अग्नि दिव्य अग्नि (परमात्मा) से उत्पन्न हुई है ।

(घ) अध्यात्म

१९९३. अगन्म ज्योतिरमृता अभूम । ८.५२
हमने ज्योति प्राप्त की और अमर हो गए ।

१९९४. अगन्म स्वः सं ज्योतिषाऽभूम । २.२५
हमने प्रकाश पाया और हम प्रकाशयुक्त हो गए ।

१९९५. अन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः । १७.९४
हम अन्दर वर्तमान हृदय और मन से पवित्र हुए ।

१९९६. अविदाम देवान् स्वर्ज्योतिः । ८.५२
हमने देवों और दिव्य ज्योति को प्राप्त किया ।

१९९७. आत्मानं मे तर्पयत । ६.३१
हे ईश ! मेरी आत्मा को तृप्त करो ।

१९९८. आ मा सोमो अमृतत्वेन गम्यात् । ९.१९
सोम देवता मुझे अमरत्व के साथ प्राप्त हो ।

१९९९. इदमपां संगमे सूर्यस्य - - विप्रा मतिभी रिहन्ति । ७.१६
विद्वान् जल और सूर्य के संगम स्थल पर चिन्तन द्वारा आत्मतत्त्व पाते हैं।

२०००. एता अर्षन्ति हृद्यात् समुद्रात् । १७.९३
ये (वाणियाँ) हृदयरूपी समुद्र से (संकल्परूप में) बाहर आती हैं ।

२००१. गवि देवासो घृतमन्वविन्दन् ।१७.९२
देवों ने गायों (ज्ञानेन्द्रियों) में धी (सार, आत्मतत्त्व) पाया ।

२००२. त्वामग्ने अङ्गिरसो गुहा हितमन्वविन्दन् । १५.२८
हे अग्नि ! विद्वानों ने बुद्धिरूपी गुफा में विद्यमान तुमको पाया ।

२००३. त्वामाहुः सहसस्पुत्रमङ्गिरः । १५.२८
हे अंगिरा अग्नि ! तुमको बल का पुत्र कहा गया है ।

२००४. दिवं पृथिव्या अध्यारुहाम । ८.५२
हम पृथिवी (भौतिकता) से द्युलोक (अध्यात्म) की ओर चढ़े ।

२००५. पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः । ३४.११
पाँच नदियाँ (ज्ञानेन्द्रियाँ) अपने स्रोतों के सहित सरस्वती (बुद्धि) में मिलती हैं ।

२००६. बृहद् ज्योतिः करिष्यतः । ११.३
तुम दोनों हमारे लिए महान् प्रकाश करोगे ।

२००७. **महो देवस्य सवितुः परिष्टुतिः । ११.४**
सविता देव की बड़ी महिमा है ।

२००८. **युक्तेन मनसा वयम् । ११.२**
योगयुक्त मन से हम अध्यात्म की ओर बढ़ते हैं ।

२००९. **युञ्जते मन उत युञ्जते धियः । ११.४, ३७.२**
विद्वान् मन और बुद्धि को मिलाकर योग करते हैं ।

२०१०. **युञ्जानः प्रथमं मनस्तत्त्वाय सविता धियः । ११.१**
सविता तत्त्वज्ञान के लिए मन और बुद्धि को संयुक्त करता है ।

२०११. **येन ऋषयस्तपसा सत्रमायन् । १५.४९**
ऋषिगण तपस्या से आत्मज्ञान को प्राप्त हुए ।

२०१२. **विद्ययाऽमृतमश्नुते । ४०.१४**
विद्या से अमरत्व प्राप्त होता है ।

२०१३. **संभूत्याऽमृतमश्नुते । ४०.११**
संभूति (अध्यात्म) से अमरत्व प्राप्त होता है ।

२०१४. **स जायसे मथ्यमानः सहो महत् । १५.२८**
वह अग्नि (आत्मतत्त्व) मन्थन करने पर महान् शक्ति हो जाता है ।

२०१५. **सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत् सरित् । ३४.११**
सरस्वती (बुद्धि) उस क्षेत्र में पाँच नदी (ज्ञानेन्द्रियाँ) के रूप में बही ।

२०१६. **सीद होतः स्व उ लोके चिकित्वान् । ११.३५**
हे होता ! तुम विद्वान् होकर अपने स्थान पर रहो ।

२०१७. **सोऽमृतत्वमशीय । ७.४७**
मैं अमरत्व प्राप्त करूँ ।

२०१८. **स्वर्देवा अगन्म, अमृता अभूम । ९.२१**
देवता स्वर्ग गए और अमर हो गए ।

(ङ) पुनर्जन्म, कर्म, दुःख

२०१९. अयस्मयं वि चृता बन्धमेतम् । १२.६३
इस लोहे के बन्धन (कर्मबन्धन) को काटो ।

२०२०. असुन्वन्तमयजमानमिच्छ । १२.६२
हे विपत्ति ! तुम अ-यज्ञकर्ता और अपुरुषार्थी के पास जाओ ।

२०२१. अहं य एवास्मि सोऽस्मि । २.२८
मैं जिस रूप में हूँ, उसी रूप में विद्यमान हूँ ।

२०२२. उत्तमे नाके अधि रोहयैनम् । १२.६३
इस यजमान को उत्तम मोक्ष स्थान में रखो ।

२०२३. कविक्रतुमर्चामि । ४.२५
मैं महापुरुषार्थी की पूजा करता हूँ ।

२०२४. नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु । १२.६२
हे विपत्तिरूपी देवी ! तुम्हें नमस्कार है ।

२०२५. पुनः प्राणः पुनरात्मा म आगन् । ४.१५
मुझे प्राण और जीवन पुनः प्राप्त हों ।

२०२६. पुनर्मनः पुनरायुर्म आगन् । ४.१५
मुझे मन और आयु (जीवनी शक्ति) पुनः प्राप्त हों ।

२०२७. पुनश्चक्षुः पुनः श्रोत्रं म आगन् । ४.१५
मुझे देखने और सुनने की शक्ति पुनः प्राप्त हों ।

(९) आयुर्वेद

(क) तेज, वर्चस्

२०२८. अजस्त्रं धर्ममीमहे । २६.६
हम सदा तेज चाहते हैं ।

२०२९. अश्विना तेजसा चक्षुः । २०.८०
अश्विनी ने तेज के साथ नेत्रशक्ति दी ।

२०३०. अस्मे वर्चः सुवीर्यम् । ८.३८
देव हमें तेज और पराक्रम दें ।

२०३१. आत्मने मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व । ७.२८
हे तेज-दाता ! मुझे आत्म-शक्तिरूपी तेज के लिए पवित्र करो ।

२०३२. आयुषे मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व । ७.२८
हे तेज-दाता ! मुझे दीर्घायुरूपी तेज के लिए पवित्र करो ।

२०३३. उदानाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व । ७.२७
हे तेज-दाता ! मुझे उदान वायुरूपी तेज के लिए पवित्र करो ।

२०३४. ऋचे त्वा रुचे त्वा । १३.३९
ऋचाओं के ज्ञानार्थ और कान्ति के लिए हम तुम्हें अपनाते हैं ।

२०३५. ओजसे मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व । ७.२८
हे तेजदाता ! मुझे ओजरूपी तेज के लिए पवित्र करो ।

२०३६. ओजिष्ठोऽहं मनुष्येषु भूयासम् । ८.३९
मैं मनुष्यों में सबसे अधिक ओजस्वी होऊँ ।

२०३७. ओजो न जूतिः । २१.५६
हमें ओज और वेग (शक्ति, तीव्रता) प्राप्त हों ।

२०३८. क्रतूदक्षाभ्यां मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व । ७.२७
हे तेजदाता ! मुझे कर्मठता और योग्यतारूपी तेज के लिए पवित्र करो ।

२०३९. तं मा सं सृज वर्चसा प्रजया च धनेन । २०.२२
हे ईश! मुझे तेज, सन्तान और धन से युक्त कीजिए ।

२०४०. तेज इन्द्रियं (पवते) । १९.५
तेजस्विता इन्द्रियों को पवित्र करती है ।

२०४१. तेजसे त्वा वीर्याय त्वा बलाय त्वा । १९.६
तेज, पराक्रम और बल के लिए तुम्हें अपनाते हैं ।

२०४२. तेजोऽसि तेजसे त्वा ।१५.८
हे ईश ! तुम तेजरूप हो, तेज के लिए तुम्हें अपनाते हैं ।

२०४३. तेजोऽसि तेजो मयि धेहि । २०.२३, ३८.२५
हे ईश ! तुम तेजरूप हो, मुझे तेज दो ।

२०४४. तेजोऽसि शुक्रममृतम् । २२.१
हे ईश! तुम तेज, वीर्य और अमृतरूप हो ।

२०४५. पयसो रेत आभृतम् । ३८. २८
दूध से शक्ति प्राप्त की ।

२०४६. प्राणाय मे वर्चोदा पर्चसे पवस्व ।७.२७
हे तेजदाता ! प्राणरूपी तेज के लिए मुझे पवित्र करो ।

२०४७. भासे त्वा ज्योतिषे त्वा । १३.३९
हे ईश ! तुम्हें तेज और कान्ति के लिए हम अपनाते हैं ।

२०४८. भ्राजिष्ठोऽहं मनुष्येषु भूयासम् । ८.४०
मैं मनुष्यों में सबसे अधिक कान्तियुक्त होऊँ ।

२०४९. मयि धेहि रुचा रुचम् । १८.४८
मुझे तेज के द्वारा कान्तियुक्त करो ।

२०५०. या वो देवाः सूर्ये रुचः । १८.४७
हे देवो ! तुम्हारी सूर्य में जो कान्ति है, उससे मुझे युक्त करो ।

२०५१. रुचं नो धत्त बृहस्पते । १३.२३, १८.४७
हे बृहस्पति ! हमें तेज दो ।

२०५२. रुचं नो धेहि ब्राह्मणेषु ।१८.४८
हे ईश ! हमारे ब्राह्मणों में तेज दो ।

२०५३. रुचं राजसु नस्कृधि । १८.४८
हे ईश ! हमारे राजाओं में तेज दो ।

२०५४. रुचं विश्येषु शूद्रेषु । १८.४८
हे ईश ! हमारे वैश्यों और शूद्रों में तेज दो ।

२०५५. रुचे जनाय नस्कृधि । १३.२२, १८.४६
हे ईश ! हमें तेजस्विता और लोक - प्रसिद्धि से युक्त करो ।

२०५६. **वर्चस्वानहं मनुष्येषु भूयासम् । ८.३८**
मैं मनुष्यों में सबसे अधिक वर्चस्वी होऊँ ।

२०५७. **वर्चोऽसि वर्चो मयि धेहि । १०.२५**
हे ईश ! तुम वर्चस् - रूप हो, मुझे वर्चस्विता दो ।

२०५८. **विराजति - - ब्रह्मणा तेजसा सह । ३८.२७**
ज्ञान और तेज से मनुष्य यशस्वी होता है ।

२०५९. **विश्वं ज्योतिर्यच्छ । १५.५८**
तुम संसार को ज्योति दो ।

२०६०. **विश्वा आ भाहि प्रदिशश्चतस्रः । २७.१**
तुम चारों दिशाओं को प्रकाशित करो ।

२०६१. **विश्वाभ्यो मे प्रजाभ्यो वर्चोदसौ वर्चसे पवेथाम् । ७.२८**
हे तेज-दाता ! तुम दोनों सारी प्रजा के तेजस्वितार्थ मुझे पवित्र करो ।

२०६२. **व्यानाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व । ७.२७**
हे तेजदाता ! व्यानवायुरूपी तेज के लिए मुझे पवित्र करो ।

२०६३. **सं दिव्येन दीदिहि रोचनेन । २७.१**
तुम दिव्य तेजस्विता से चमको ।

२०६४. **संशितं क्षत्रं जिष्णु । ११.८१**
विजयी क्षत्रशक्ति अधिक तीक्ष्ण हो ।

२०६५. **संशितं मे ब्रह्म । ११.८१**
हमारी ब्रह्मशक्ति तीक्ष्ण हो ।

२०६६. **संशितं वीर्यं बलम् । ११.८१**
हमारा पराक्रम और बल तीक्ष्ण हो ।

२०६७. **सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् । २०.२१**
हमने उत्तम ज्योतिरूप सूर्य (ईश्वर) को प्राप्त किया ।

(ख) भिषज्

२०६८. पवित्राय भिषजम् । ३०.१०
पवित्रता (नीरोगता) के लिए वैद्य है ।

२०६९. प्रथमो दैव्यो भिषक् । १६.५
रुद्र पहला दिव्य वैद्य हुआ ।

२०७०. भेषजं भिषजाऽश्विना । १९.१२
वैद्य अश्विनीकुमारों ने चिकित्सा की ।

२०७१. वरुणं भिषजां पतिम् । २१.४०
वरुण वैद्यों का स्वामी है ।

२०७२. वरुणः सुक्षत्रो भेषजं करत् । २१.२२
क्षात्रगुणयुक्त वरुण चिकित्सा करे ।

२०७३. वरुणो भिषज्यन् । १९.८०
वरुण ने चिकित्सा की ।

२०७४. वाचा सरस्वती भिषक् । १९.१२
सरस्वती वाणी (मंत्रविद्या) से चिकित्सा करती है ।

२०७५. विप्रः स उच्यते भिषग् रक्षोहाऽमीवचातनः । १२.८०
कृमिनाशक एवं रोगनाशक विद्वान् वैद्य होता है ।

(ग) शरीरांग

२०७६. उदानो अङ्गे अङ्गे निधीतः । ६.२०
उदान वायु प्रत्येग अंग में व्याप्त है ।

२०७७. पयसा शुक्रममृतम् । १९.८४
दूध से वीर्य और ओज बनता है ।

२०७८. प्राणो अङ्गे अङ्गे नि दीध्यत् । ६.२०
प्राण प्रत्येक अंग में विद्यमान है ।

२०७९. मूत्रात् जनयन्त रेतः । १९.८४
देवों ने वीर्य बनाया और मूत्र से मूत्र बनाया ।

(घ) चिकित्सा

२०८०. **अग्निर्भेषजम्** । २१.४०
अग्नि ओषधि (चिकित्सा) है ।

२०८१. **तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजम्** । २५.१७
वायु हमारे लिए सुखद और ओषधिरूप रहे ।

२०८२. **मनसोऽसि विलायकः** । २०.३४
तुम मानसिक रोगों के निवारक हो ।

२०८३. **वनस्पतिं प्रियं पाथो न भेषजम्** । २१.४०
ओषधियाँ और सुपथ्य भोजन चिकित्सा हैं ।

२०८४. **वाचो मे विश्वभेषजः** । २०.३४
मेरी वाणी (गले के रोगों) की पूर्ण चिकित्सा करने वाले हो ।

२०८५. **सं ते वायुर्मातरिश्वा दधातु,**

उत्तानाया हृदयं यद् विकस्तम् । ११.३९
ऊपर मुँह किए हुए तुम्हारा हृदय जो फट गया है, उसको मातरिश्वा वायु ठीक करे ।

(ङ) दीर्घायुष्य

२०८६. **अदीनाः स्याम शरदः शतम्** । ३६.२४
हम सौ वर्ष तक अदीन होकर रहें ।

२०८७. **असुं धर्मं स्वरातिष्ठतानु** । ८.१९
प्राणशक्ति, तेज और सुख का आश्रय लो ।

२०८८. **आयुरसि आयुर्मयि धेहि** । १०.२५
तुम आयुरूप हो, मुझे आयु दो ।

२०८९. **आयुर्दृंह** । ५.२७
तुम मेरी आयु को पुष्ट करो ।

२०९०. **आयुष्पा आयुर्मे पाहि । २२.१**
तुम आयु-रक्षक हो , मेरी आयु की रक्षा करो ।

२०९१. **उदायुषा स्वायुषोदस्थाम् । ४.२८**
मैं उत्तम और श्रेष्ठ जीवन के कारण ऊँचा उठा ।

२०९२. **जीवातुश्च मे दीर्घायुत्वं च मे ।१८.६**
मुझे जीवनी शक्ति और दीर्घायु मिले ।

२०९३. **जीवेम शरदः शतम् ।३६.२४**
हम सौ वर्ष तक जीवित रहें ।

२०९४. **तया नो मृड जीवसे । १३.४९**
हे रुद्र ! अपने शुभ शरीर से हमें जीवन देने के लिए सुखी बनाओ ।

२०९५. **दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धाम् । १.२०**
मैंने दीर्घायुष्य के लिए दीर्घकाल तक नियम - पालन किया ।

२०९६. **देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे । २५.१५**
देवता जीवनशक्ति के लिए हमारी आयु बढ़ावें ।

२०९७. **पश्येम शरदः शतम् । ३६.२४**
हम सौ वर्ष तक देखें ।

२०९८. **प्राण आयूंषि तारिषः । ३४.८**
तुम हमारी आयु बढ़ाओ ।

२०९९. **प्र ण आयूंषि तारिषत् । २३.३२**
तुमने हमारी आयु बढ़ाई ।

२१००. **प्र ब्रवाम शरदः शतम् । ३६.२४**
हममें सौ वर्ष तक बोलने की शक्ति रहे ।

२१०१. **भूयश्च शरदः शतात् । ३६.२४**
हम सौ वर्ष से भी अधिक जीवित रहें ।

२१०२. **मा न आयुः प्र मोषीः । १८.४९**
हमारी आयु नष्ट न करो ।

२१०३. **मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः** । २५.२२
हमारी गतिशील आयु को बीच में न समाप्त करो ।

२१०४. **मा पाद्यायुषः पुरा** । ११.४६
तुम पूर्णायु से पूर्व (असमय में) न मरो ।

२१०५. **मा म आयुः प्रमोषीः** । ४.२३
तुम मेरी आयु नष्ट न करो ।

२१०६. **यद् देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्** । ३.६२
जो देवों को तिगुनी (३०० वर्ष) आयु मिली है , वह हमें मिले ।

२१०७. **व्यशेमहि देवहितं यदायुः** । २५.२१
हम देवों के लिए हितकारी आयु प्राप्त करें ।

२१०८. **शतं जीवन्तु शरदः पुरूचीः** । ३५.१५
मनुष्य पूरे सौ वर्ष जीवित रहें ।

२१०९. **शतायुषं कृणुहि चीयमानः** । १३.४१
तुम समृद्ध होते हुए हमें शतायु करो ।

२११०. **शृणुयाम शरदः शतम्** । ३६.२४
हममें सौ वर्ष सुनने की शक्ति रहे ।

(च) नीरोगता

२१११. **अनुमार्ष्टु तन्वो यद् विलिष्टम्** । २.२४
त्वष्टा हमारे शरीर की न्यूनताओं को दूर करे ।

२११२. **अपामीवां बाधते** । ३४.२५
सूर्य रोगों को नष्ट करता है ।

२११३. **अयक्ष्मं च मेऽनामयच्च मे** । १८.६
मुझे नीरोगता और व्याधिनाशन की शक्ति मिले ।

२११४. **आयुर्मे पाहि** । १४.१७
तुम मेरी आयु की रक्षा करो ।

२११५. इन्द्रः - - अस्मभ्यं भेषजा करत् । २५.४६
इन्द्र हमारे लिए ओषधियाँ उत्पन्न करे ।

२११६. घृतं च मे मधु च मे । १८.९
मुझे घृत और मधु प्राप्त हों ।

२११७. चक्षुर्मे पाहि । १४.१७
मेरे नेत्रों की रक्षा करो ।

२११८. जहामि सेदिमनिराममीवाम् । १२.१०५
मैं विषाद (चिन्ता) को छोड़ता हूँ । यह रोग - कारक और ऐश्वर्य नाशक है।

२११९. पुष्टं च मे पुष्टिश्च मे । १८.१०
मुझे धन - वृद्धि और शारीरिक पुष्टता प्राप्त हो ।

२१२०. प्राणं मे पाहि । १४.१७
तुम मेरे प्राणों की रक्षा करो ।

२१२१. मो च नः किंचनाममत् । १६.४७
हमारा कोई पुत्रादि रोगयुक्त न हो ।

२१२२. वीडूवङ्गो हि भूयाः । २९.५२
तुम दृढ़ शरीर वाले होओ ।

२१२३. शम्वस्तु तन्वै तव । २३.४४
तुम्हारे शरीर के लिए कल्याण होवे ।

२१२४. शिवा रुतस्य भेषजी । १६.४९
हे रुद्र ! तुम्हारा शिवरूप व्याधियों के लिए ओषधि है ।

२१२५. श्रोत्रं मे पाहि । १४.१७
तुम मेरी श्रवणशक्ति की रक्षा करो ।

२१२६. सुगं च मे सुपथ्यं मे । १८.११
मुझे सुगममार्ग और पथ्य भोजन मिले ।

(छ) ओषधियाँ

२१२७. **अरं कामायं शं हृदे । १२.९२**
हे ओषधि ! तुम मेरी कामनाएँ पूर्ण करो और हृदय को सुख दो ।

२१२८. **अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता । १२.७१**
हे ओषधियाँ ! तुम्हारा पीपल पर निवास है और पत्ते में घर है ।

२१२९. **अश्वावतीं सोमावतीम् ऊर्जयन्तीम् उदोजसम् ।**
आवित्सि सर्वा ओषधीः । १२.८१
मैं सब ओषधियों को जानता हूँ । इनमें अश्व-शक्ति, सोमगुण, बलवर्धन एवं ओजस्विता के गुण हैं ।

२१३०. **अस्यै संदत्त वीर्यम् । १२.९३**
इस ओषधि को शक्ति प्रदान करो ।

२१३१. **आत्मा यक्ष्मस्य नश्यति । १२.८५**
इस ओषधि से रोग की आत्मा (मूल) ही नष्ट हो जाती है ।

२१३२. **इमं मे अगदं कृत । १२.७६**
हे ओषधियाँ ! मेरे इस सम्बन्धी को नीरोग करो ।

२१३३. **इष्कृतिर्नाम वो माता । १२.८३**
हे ओषधियाँ ! इष्कृति (रोगनिवारण) तुम्हारी माता का नाम है ।

२१३४. **उच्छुष्मा ओषधीनाम् । १२.८२**
ओषधियों की शक्तियाँ प्रकट होती हैं ।

२१३५. **उज्जिहतामोषधयः सुपिप्पलाः । ११.३८**
सुन्दर फलों वाली ओषधियाँ निकलें (उगें) ।

२१३६. **ओषधयः - - पुष्पवतीः सुपिप्पलाः । ११.४८**
फल और फूल वाली ओषधियों को लो ।

२१३७. **ओषधयः प्रति मोदध्वम् । ११.४७**
ओषधियाँ फूलें और फलें ।

२१३८. **ओषधीः प्रति मोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः ।** १२.७७
ओषधियाँ फूल और फल वाली होकर विकसित हों ।

२१३९. **ओषधीः प्राचुच्यवुर्यत् किं च तन्वो रपः ।** १२.८४
ओषधियाँ शरीर के सभी रोगों को नष्ट करती हैं ।

२१४०. **ततो यक्ष्मं वि बाधस्व ।** १२.८६
हे ओषधियाँ ! तुम रोग को नष्ट करो ।

२१४१. **त्वां गन्धर्वा अखनन् त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः ।** १२.९८
हे ओषधि ! तुमको गन्धर्व, इन्द्र और बृहस्पति ने खोदकर निकाला ।

२१४२. **द्विपाच्चतुष्पादस्माकं सर्वमस्त्वनातुरम् ।** १२.९५
हमारे मनुष्य और पशु सभी नीरोग हों ।

२१४३. **नाशयित्री बलासस्यार्शस उपचितामसि ।** १२.९७
हे ओषधि ! तुम क्षय, बवासीर और सूजन आदि को नष्ट करती हो ।

२१४४. **यं जीवमश्नवामहे न स रिष्याति पूरुषः ।** १२.९१
हम ओषधियाँ जिस पुरुष में पहुँच जाती हैं, वह नहीं मरता ।

२१४५. **याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ।** १२.८९
ओषधियाँ फलयुक्त, अफल, फूलवाली और अपुष्प होती हैं ।

२१४६. **या ओषधीः सोमराज्ञीः ।** १२.९२
ओषधियों का राजा सोम (चन्द्रमा) है ।

२१४७. **विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत ।** १२.९८
ओषधियों के प्रभाव से विद्वान् सोम राजा रोगमुक्त हुआ ।

२१४८. **व्यस्यन् विश्वा अनिरा अमीवाः ।** ११.४७
हे अग्नि ! तुम सभी अन्नाभाव और रोगों को दूर करो ।

२१४९. **शतं धामानि सप्त च ।** १२.७५
ओषधियों के सैकड़ों स्थान हैं तथा सात (मुख आदि) उसके लेने के स्थान हैं ।

२१५०. शतं वो अम्ब धामानि सहस्रमुत वो रुहः । १२.७६
हे ओषधियाँ! तुम्हारे सैकड़ों जन्म स्थान हैं और तुम सहस्रों प्रकार की हो।

२१५१. सहस्व पृतनायतः । १२.९९
तुम आक्रमणकारियों को हराओ ।

२१५२. सहस्व मे अरातीः । १२.९९
तुम मेरे शत्रुओं को जीतो ।

(ज) बल, शक्ति

२१५३. अन्ध स्थान्धो वो भक्षीय । ३.२०
तुम अन्नरूप हो, मै तुम्हारा अन्न खाऊँ ।

२१५४. ऊर्गसि ऊर्जं मयि धेहि । १०.२५
तुम बलरूप हो, मुझे बल दो ।

२१५५. ऊर्ज स्थोर्जं वो भक्षीय । ३.२०
तुम शक्तिरूप हो । तुम्हारी शक्ति को मैं खाऊँ (प्राप्त करूँ)।

२१५६. ऊर्जोर्जं वो जिन्व । १५.९
तुम अपनी शक्ति से मेरी शक्ति को पुष्ट करो ।

२१५७. कृणुष्व पाजः । १३.९
हे अग्नि! तुम अपना बल प्रकट करो ।

२१५८. घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व । १२.४४
तुम घी से अपना शरीर पुष्ट करो ।

२१५९. जीवं व्रातं सचेमहि । ३.५५
हम शक्तियुक्त पुत्रादि प्राप्त करें ।

२१६०. दृते दृंह मा । ३६.१८
हे आरक्षक ईश! तुम मुझे दृढ़ करो ।

२१६१. प्राणेन सरस्वती वीर्यम् । २०.८०
सरस्वती प्राणशक्ति के साथ वीर्य देती है ।

२१६२. **यशो न दधदिन्द्रियम् ।** २१.५८
अग्निरूप ईश यश और शक्ति प्रदान करे ।

२१६३. **रायस्पोष स्थ रायस्पोषं वो भक्षीय ।** ३.२०
तुम धन और पुष्टि देने वाले हो, मैं धन और पुष्टि प्राप्त करूं ।

२१६४. **रेतो न रूपममृतम् ।** २१.५५
इन्द्र शक्ति, सौन्दर्य और अमरत्व दे ।

२१६५. **वाजं गोमन्तमा भर ।** ८.६३
शक्ति-युक्त सामर्थ्य हमें दो ।

२१६६. **वाजो हि मा सर्ववीरं चकार ।** १८.३४
शक्ति ने मुझे सबसे बड़ा वीर बना दिया ।

२१६७. **वाजो हि मा सर्ववीरं जजान ।** १८.३३
शक्ति ने मुझे सबसे बड़ा वीर बनाया ।

२१६८. **विश्वा आशा वाजपतिर्जयेयम् ।** १८.३३
शक्तिशाली मैं सारी दिशाओं को जीतूं ।

२१६९. **शुक्रेण शुक्रं व्यपिबत् ।** १९.७९
उसने शक्ति के द्वारा शक्ति प्राप्त की ।

२१७०. **सर्वा आशा वाजपतिर्भवेयम् ।** १८.३४
मैं शक्तिशाली होकर सारी दिशाओं पर अधिकार करूँ ।

२१७१. **सोऽहं वाजं सनेयमग्ने ।** १८.३५
हे अग्नि ! मैं बल प्राप्त करूं ।

(झ) अन्न

२१७२. **अविषं नः पितुं कृणु ।** २.२०
हमारे अन्न को निर्विष करो ।

२१७३. **अश्विना भेषजं मधु ।** २०.६४
अश्विनों ने औषधि के रूप में मधु दिया ।

२१७४. इन्द्रपीतस्य - - मधुमतः - - भक्षयामि । ३८.२८
इन्द्र के द्वारा स्वीकृत मधुर भोजन मैं करूँ ।

२१७५. घृतं पीत्वा मधु चारु गव्यं - - रक्षतादिमान् । ३५.१७
घी, मधु और सुन्दर पंचगव्य पीकर इनकी रक्षा करो ।

२१७६. पाहि दुरदूमन्यै । २.२०
दूषित भोजन से मुझे बचाओ ।

२१७७. भेषजमसि भेषजं - - पुरुषाय भेषजम् । ३.५९
हे रुद्र! तुम ओषधिरूप हो । तुम मनुष्यों के लिए सर्वरोगहर हो ।

(ञ) अग्नि-जल

२१७८. अग्निः - - यासद् विश्वं न्यत्रिणम् । १७.१६
अग्नि सभी शोषक कीटाणुओं को नष्ट करता है ।

२१७९. अग्ने पित्तमपामसि । १७.६
हे अग्नि! तुम जल के पित्त (आग्नेय सार) हो ।

२१८०. अपो अद्यान्वचारिषं रसेन समसृक्ष्महि । २०.२२
हमने जल लिया और उसमें पौष्टिक रस मिलाया ।

२१८१. देवीरापः - - यो व ऊर्मिः - - इन्द्रियावान् मदिन्तमः । ६.२७
हे दिव्य जल ! तुम्हारी लहर हर्षदायक और शक्तिप्रद है ।

२१८२. नमस्ते हरसे शोचिषे । १७.११
इस शोषक और संतापक अग्नि के लिए नमस्ते ।

२१८३. नसि वीर्याय प्राणस्य पन्थाः । १९.९०
नाक से प्राणवायु का लेना शक्तिवर्धक है ।

२१८४. बाधस्व द्विषो रक्षसो अमीवाः । ११.४९
हे अग्नि! तुम द्वेषियों, राक्षसों और रोगों को नष्ट करो ।

(ट) विविध

२१८५. एजतु दशमास्यो गर्भो जरायुणा सह । ८.२८
गर्भ दसवें मास का होकर जरायु के साथ निकले ।

२१८६. जयापाम मनसा समिन्द्रियेण । १०.२१
मन और इन्द्रियों को समन्वित करके विजयी होओ ।

२१८७. परं मृत्यो अनु परेहि पन्थाम् । ३५.७
हे मृत्यु ! तुम दूसरे मार्ग से चले जाओ।

२१८८. मरुतो यस्य हि क्षये पाथा -- स सुगोपातमो जनः । ८.३१
जिसके घर में वायु देवता रक्षा करते हैं, वह सबसे अधिक सुरक्षित है ।

२१८९. मृत्योः पाहि। १०.१५
हे ईश ! तुम मेरी मृत्यु से रक्षा करो ।

२१९०. रेतो मूत्रं वि जहाति योनिं प्रविशदिन्द्रियम् । १९.७६
पुरुष की मूत्रेन्द्रिय मूत्र छोड़ती है और स्त्रीयोनि में वीर्य ।

(१०) विज्ञान

(क) पृथिवी

२१९१. अश्मा च मे मृत्तिका च मे । १८.१३
मुझे पाषाण और मिट्टी प्राप्त हों ।

२१९२. आयं गौः पृश्निरक्रमीत् । ३.६
यह नानावर्णों वाली पृथिवी (सूर्य की) परिक्रमा करती है ।

२१९३. इडे रन्ते हव्ये -- चन्द्रे ज्योतेऽदिते । ८.४३
यह पृथिवी अन्नदात्री, सुखदा, हव्यदात्री, आह्लादक, प्रकाशरूपा और अखण्डनीय है ।

२१९४. श्यामं च मे लोहं च मे । १८.१३
मुझे कांसा और लोहा प्राप्त हो ।

२१९५. सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती । ८.४२
पृथिवी अनेक धारा वाली और दुग्धादि से पूर्ण है ।। वह सहस्रों सुख दे।

२१९६. सीसं च मे त्रपु च मे । १८.१३
मुझे सीसा और रांगा प्राप्त हो ।

२२९७. **सुक्ष्मा चासि शिवा चासि स्योना चासि । १.२७**
हे पृथिवी ! तुम सुभूमियुक्त , मंगलमय और सुखकर हो ।

२२९८. **सुषदा चासि, ऊर्जस्वती चासि, पयस्वती च । १.२७**
हे पृथिवी ! तुम निवास योग्य , शक्तियुक्त और दुग्धादि से पूर्ण हो ।

२२९९. **हिरण्यं च मेऽयश्च मे । १८.१३**
मुझे सुवर्ण और ताँबा (लोहा) मिले ।

(ख) जल

२२००. **अपां पृष्ठमसि योनिरग्नेः । ११.२९, १३.२**
तुम जल के आधार हो और अग्नि के कारण हो ।

२२०१. **अपो देवा मधुमतीः । १०.१**
हे देवो ! जल मधुर है ।

२२०२. **अपो देवीरुप सृज मधुमतीरयक्ष्माय प्रजाभ्यः । ११.३८**
प्रजा की नीरोगता के लिए मधुर एवं दिव्य जल से वृक्षादि सींचो।

२२०३. **अप्स्वन्तरमृतम् अप्सु भेषजम् । ९.६**
जल में अमृततुल्य शक्ति है और जल ओषधि है ।

२२०४. **आपः शुन्धन्तु मैनसः । २०.२०**
जल मेरे पापों को धो डाले ।

२२०५. **आपो अस्मान्मातरः शुन्धयन्तु । ४.२**
जल माता के तुल्य है। वह हमें पवित्र करे ।

२२०६. **आपो देवीर्बृहतीर्विश्वशंभुवः । ४.७**
जल देवता है , महान् है और विश्व का कल्याणकारी है ।

२२०७. **आपो हि ष्ठा मयोभुवः । ११.५०**
जल सुखदाता है ।

२२०८. **इदमापः प्र वहतावद्यं च मलं च यत् । ६.१७**
जल हमारे पाप और मैल को दूर करे ।

२२०९. **इमा आपः शमु मे सन्तु देवीः । ४.१**
यह दिव्य जल मेरे लिए सुखकर हो ।

२२१०. **ओजोऽसि, सहोऽसि, अमृतमसि । १०.१५**
जल ओज देता है, शक्ति देता है और अमृततुल्य है ।

२२११. **कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या उन्नयामि । ६.२८**
हे जल! तुम कृषि के लिए हितकर हो । समुद्र-स्थल से मैं तुम्हें लाता हूँ ।

२२१२. **घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु । ४.२**
हे जल! तुम घृत से पवित्र करते हो, हमें घी से पवित्र करो ।

२२१३. **तमिद् गर्भं प्रथमं दध्र आपः । १७.३०**
सृष्टि के आदि-बीज को सर्वप्रथम जल ने धारण किया।

२२१४. **ता अस्मभ्यम् अयक्ष्मा अनमीवाः । ४.१२**
जल हमारे लिए रोगनाशक और स्वास्थ्यवर्धक हो ।

२२१५. **ता न ऊर्जे दधातन । ११.५०**
जल हमें शक्ति दे ।

२२१६. **दिवो वृष्टिमेरय । १४.८**
मरुत् द्युलोक से वृष्टि लावें ।

२२१७. **दीक्षातपसोस्तनूरसि । ४.२**
जल दीक्षा और तपस्या का आधार है ।

२२१८. **देवीरापो अग्रेगुवो अग्रेपुवः । १.१२**
दिव्य जल आगे-आगे चलते हैं और पवित्र करते हैं ।

२२१९. **माऽपो - - हिंसीः । ६.२२**
जल को दूषित न करो ।

२२२०. **मित्रोऽसि वरुणोऽसि । १०.१६**
हे जल! तुम मित्र हो, वरुण हो ।

२२२१. **यत्र देवाः समगच्छन्त विश्वे । १७.३०**
जल में सारे देवगण एकत्र हैं ।

२२२२. **यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः । ११.५१**
हे जल! तुम्हारा जो अति सुखद रस है, वह हमें दो ।

२२२३. **विश्वं हि रिप्रं प्रवहन्ति देवीः । ४.२**
दिव्य जल सभी मलों को नष्ट कर देता है ।

२२२४. **सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु । ६.२२, ३६.२३**
जल और ओषधियाँ हमारे लिए मित्रवत् हों ।

२२२५. **स्वदन्तु देवीरमृता ऋतावृधः । ४.१२**
जल अमृत है और ऋतवर्धक है । वह स्वादिष्ट हो ।

(ग) अग्नि

२२२६. **अग्नावग्निश्चरति प्रविष्टः । ५.४**
अग्नि में अग्नि (ब्रह्म) प्रविष्ट होकर रहता है ।

२२२७. **अग्निरमृतो अभवत् । १२.१**
अग्नि अमृततुल्य है ।

२२२८. **अग्नेऽभ्यावर्तिन् अभि मा नि वर्तस्व । १२.७**
हे चारों ओर भ्रमणशील अग्नि! तुम मेरे पास आवो ।

२२२९. **अग्ने गर्भो अपामसि । १२.३७**
हे अग्नि! तुम जल के गर्भ (कारणरूप) हो ।

२२३०. **अथर्वा त्वा प्रथमो निरमन्थदग्ने । ११.३२**
हे अग्नि! अथर्वा (ज्ञानी) ने तुम्हें सबसे पहले मथकर निकाला ।

२२३१. **अप्स्वग्ने सधिष्टव । १२.३६**
हे अग्नि! जल में तुम्हारा निवास है ।

२२३२. **आकूत्यै प्रयुजेऽग्नये स्वाहा । ४.७**
चिन्तनरूपी प्रेरक अग्नि के लिए आहुति है ।

२२३३. **आयुषा वर्चसा प्रजया धनेन । १२.७**
अग्नि हमें आयु, वर्चस्, प्रजा और धन दे ।

२२३४. **आ रोदसी भानुना भात्यन्तः । १२.६**
अग्नि द्यावापृथिवी में अपने तेज से प्रकाशित है ।

२२३५. **उत्त वा दिवस्परि । १३.४५**
अग्नि द्युलोक से भी ऊपर है ।

२२३६. **गर्भो अस्योषधीनाम् । १२.३७**
अग्नि ओषधियों का गर्भ (पोषक) है ।

२२३७. **गर्भो वनस्पतीनाम् । १२.३७**
अग्नि वनस्पतियों का गर्भ (पोषक) है ।

२२३८. **गर्भो विश्वस्य भूतस्य । १२.३७**
अग्नि जीवमात्र का गर्भ (पोषक) है ।

२२३९. **जनस्य गोपा अजनिष्ट जागृविरग्निः सुदक्षः । १५.२७**
अग्नि मनुष्यों का रक्षक, सदा जागरूक एवं अति सक्रिय है ।

२२४०. **जातवेदसमयक्ष्माय त्वा संसृजामि प्रजाभ्यः । ११.५३**
लोक-कल्याण और नीरोगता के लिए तुझ अग्नि को हम रखते हैं ।

२२४१. **तमु त्वा दध्यङ् ऋषिः पुत्र ईधे अथर्वणः । ११.३३**
अथर्वा के पुत्र दध्यङ् (दधीचि) ऋषि ने तुझे सर्वप्रथम प्रदीप्त किया।

२२४२. **त्वमग्ने द्युभिः, अद्भ्यः, अश्मनः, ओषधीभ्यः, जायसे । ११.२७**
हे अग्नि! तुम आकाश से, जल से, पत्थर से और ओषधियों से उत्पन्न होते हो ।

२२४३. **त्वामग्ने पुष्करादधि अथर्वा निरमन्थत । ११.३२**
हे अग्नि! अथर्वा ने तुम्हें तालाब से मथकर उत्पन्न किया ।

२२४४. **दीक्षायै तपसेऽग्नये स्वाहा । ४.७**
दीक्षा और तपरूपी अग्नि के लिए यह आहुति है ।

२२४५. **प्राणदा अपानदा व्यानदा वर्चोदा वरिवोदाः । १७.१५**
अग्नि प्राणशक्ति, अपानशक्ति, व्यानशक्ति, वर्चस् और धन देता है ।

२२४६. **प्रासावीद् भद्रं द्विपदे चतुष्पदे । १२.३**
अग्नि ने मनुष्यों और पशुओं के लिए सुख उत्पन्न किया ।

२२४७. **मेधायै मनसेऽग्नये स्वाहा । ४.७**
मेधा और मनरूपी अग्नि के लिए आहुति है ।

२२४८. **या ते अग्नेऽयःशया तनूः । ५.८**
हे अग्नि ! तेरा स्वरूप लोहे (धातुमात्र) में व्याप्त है ।

२२४९. **या ते अग्ने रजःशया तनूः । ५.८**
हे अग्नि ! तेरा रूप प्रत्येक कण में व्याप्त है ।

२२५०. **या ते अग्ने हरिशया तनूः । ५.८**
हे अग्नि ! तेरा रूप हरे वृक्षादि में व्याप्त हैं ।

२२५१. **ये अग्नयः समनसोऽन्तरा द्यावापृथिवी इमे । १३.२५**
इस द्यावापृथिवी के बीच समन्वित अग्नियाँ व्याप्त हैं ।

२२५२. **विश्वा रूपाणि प्रति मुञ्चते कविः । १२.३**
यह क्रान्तदर्शी अग्नि सभी रूपों को धारण करता है ।

२२५३. **शतं ते प्राणाः सहस्रं व्यानाः । १७.७१**
अग्नि की सैकड़ों प्राणशक्तियाँ और सहस्रों व्यानशक्तियाँ है।

२२५४. **सन्या मेधया रय्या पोषेण । १२.७**
अग्नि अभीष्टलाभ , मेधा , ऐश्वर्य और पोषण दे ।

२२५५. **सरस्वत्यै पूष्णेऽग्नये स्वाहा । ४.७**
विद्या और पुष्टिकारक अग्नि के लिए यह आहुति है ।

(घ) सूर्य

२२५६. **अग्निं तं मन्ये यो वसुः । १५.४१**
सूर्य अग्नि रूप है और वह वसु (आश्रयदाता) है ।

२२५७. **अपां रसम् उद्वयसं सूर्ये सन्तं समाहितम् । ९.३**
जल का जीवनप्रद सारभाग सूर्य में स्थित है ।

२२५८. **अपां रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तमम् । ९.३**
जल के सार का सार उत्तम (वृष्टि) रूप में तुम्हारे लिए लाता हूँ ।

२२५९. **उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः । १०.६**
मैं दोषरहित पवित्र सूर्य की किरणों से तुम्हें पवित्र करता हूँ ।

२२६०. **चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः । ७.४२**
सूर्य मित्र, वरुण और अग्नि शक्तियों का प्रकाशक है ।

२२६१. **ज्योतिर्यच्छन्त्यजस्रम् । ३.३३**
सूर्य की किरणें निरन्तर ज्योति देती हैं ।

२२६२. **दाधर्थ पृथिवीमभितो मयूखैः । ५.१६**
सूर्य अपनी किरणों से पृथिवी को चारों ओर से रोके हुए है ।

२२६३. **नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु । १३.६**
पृथिवी पर विद्यमान सूर्य की किरणों को नमस्कार ।

२२६४. **ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः । १३.६**
अन्तरिक्ष और द्युलोक में विद्यमान सूर्य की किरणों को नमस्कार ।

२२६५. **ये वा सूर्यस्य रश्मिषु । १३.८**
सूर्य की किरणों में सर्प (मरीचि) रहते हैं ।

२२६६. **शुक्रं त्वा शुक्र आ धूनोमि,**
अह्नो रूपे सूर्यस्य रश्मिषु । ८.४८
दिन के प्रकाश और सूर्य को शक्तिशाली किरणों में बलशाली सोम को हम हिलाकर रखते हैं ।

२२६७. **सविता पुनात्वच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः । ४.४**
सविता निर्दोष सूर्य की पवित्र किरणों से तुम्हें पवित्र करे ।

२२६८. **सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च । १३.४६**
सूर्य चर और अचर जगत् की आत्मा है ।

२२६९. **सूर्यस्त्वा पुरस्तात् पातु । २.५**
सूर्य पूर्व की ओर से तुम्हारी रक्षा करे ।

२२७०. सूर्यस्त्वाऽभि पातु मह्या स्वस्त्या । १५.६४
सूर्य महान् कल्याण से तुम्हारी रक्षा करे ।

२२७१. सो अग्निर्यो वसुः । १५.४२
सूर्य अग्नि रूप है और वसु (आश्रयदाता) है ।

(ङ) मित्र-वरुण

२२७२. अपो दत्तोदधिं भिन्त । १८.५५
हे अग्नि! तुम जल दो और उदधि मेघ को फाड़ो ।

२२७३. चक्षुष्पा अग्नेऽसि चक्षुर्मे पाहि । २.१६
हे अग्नि! तुम नेत्र-रक्षक हो। मेरे नेत्रों की रक्षा करो ।

२२७४. दिवस्पर्जन्यादन्तरिक्षात् - - ततो नो वृष्ट्याऽव । १८.५५
द्युलोक, मेघ और अन्तरिक्ष से वृष्टि लाकर हमारी रक्षा करो ।

२२७५. मरुतां पृषतीर्गच्छ वशा पृश्निर्भूत्वा
दिवं गच्छ ततो नो वृष्टिमावह ।। २.१६
यज्ञिय धूम वायु के साथ अन्तरिक्ष में जावे, वहाँ से स्वतंत्र और चित्रवर्ण होकर द्युलोक में जावे और वहाँ से हमारे लिए वर्षा लावे ।

२२७६. मित्रावरुणौ त्वा वृष्ट्यावताम् । २.१६
मित्र और वरुण वृष्टि के द्वारा तुम्हारी रक्षा करें ।

२२७७. वातो गन्धर्वस्तस्यापो अप्सरसः । १८.४१
वायु गन्धर्व (शक्तिधारक) है और जल उसकी अप्सराएँ हैं ।

२२७८. समुद्रे ते हृदयमप्स्वायुः । १८.५५
अग्नि का हृदय समुद्र में है और जल में उसकी आयु (जीवन-शक्ति) है ।

२२७९. सूर्यस्य रश्मये वृष्टिवनये । ३८.६
सूर्य की किरणें वृष्टि देती हैं ।

(च) आयुध आदि

२२८०. अन्धेनामित्रास्तमसा सचन्ताम् । १७.४४
तामस अस्त्र से शत्रु घोर अंधकार में फँस जाएँ ।

२२८१. **अभि प्रेहि निर्दह हृत्सु शोकैः । १७.४४**
हे तामस अस्त्र! तुम जाओ और शत्रुओं के हृदय शोक से जला दो ।

२२८२. **अहं सूर्यमुभयतो ददर्श । ८.९**
मैंने सूर्य को दोनों ओर से देखा है ।

२२८३. **इमं देव यज्ञं स्वाहा वाते धाः । ८.२१**
हे देव! इस यज्ञ को वायुमंडल में रख दो ।

२२८४. **उर्वश्यसि आयुरसि । ५.२**
हे अग्नि! तुम मेघ में व्याप्त विद्युत् (उर्वशी) हो । तुम आयु (आयुदाता) हो ।

२२८५. **गायत्रेण त्वा छन्दसा मन्थामि । ५.२**
मैं गायत्री छन्द से तेरा मन्थन करता हूँ ।

२२८६. **तां गूहत तमसाऽपव्रतेन । १७.४७**
तामस अस्त्र से शत्रु-सेना को घोर अन्धकार से ढक दो ।

२२८७. **त्रैष्टुभेन त्वा छन्दसा मन्थामि । ५.२**
मैं त्रिष्टुप् छन्द से तेरा मन्थन करता हूँ ।

२२८८. **त्वामग्ने पुष्करादधि अथर्वा निरमन्थत । १५.२२**
हे अग्नि! तुम्हें अथर्वा (विद्वान्) ने तालाब से मथकर निकाला ।

२२८९. **पुरूरवा असि । ५.२**
हे मेघ! तुम पुरूरवा (घोर गर्जन करने वाले मेघ) हो ।

२२९०. **यथाऽमी अन्यो अन्यं न जानन् । १७.४७**
तामस अस्त्र के प्रयोग से शत्रुसेना एक-दूसरे को नहीं पहचान पाती है ।

(छ) विज्ञान

२२९१. **आहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि । २९.१४**
ज्योति के द्युलोक में तीन बन्धन (मित्र, वरुण, अग्नि) हैं ।

२२९२. **त्रीण्यप्सु त्रीण्यन्तः समुद्रे । २९.१५**
विद्युत् के जल में तीन और समुद्र में तीन बन्धन हैं ।

२२९३. **समाववर्ति पृथिवी समुषाः समु सूर्यः । २०.२३**
पृथिवी, उषा और सूर्य, ये तीनों परिक्रमा करते हैं ।

२२९४. **समु विश्वमिदं जगत् (समाववर्ति) । २०.२३**
यह सारा संसार परिक्रमा करता है ।

२२९५. **सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वः । १८.४०**
सुषुम्णा सूर्य की किरण है और चन्द्रमा गन्धर्व (सुषुम्णा से प्रकाशित) है।

२२९६. **सूरादश्वं वसवो निरतष्ट । २९.१३**
विद्वानों ने सूर्य से अश्वशक्ति (सौरशक्ति) निकाली ।

(ज) शिल्प

२२९७. **उदधिर्निधिः । ३८.२२**
समुद्र निधि (रत्नों की खान) है ।

२२९८. **दैवीं नावं स्वरित्रामनागसम् । २१.६**
हम सुन्दर पतवार वाली और अभेद्य दिव्य नौका पर बैठें ।

२२९९. **विमान एष दिवो मध्य आस्त**
आपप्रिवान् रोदसी अन्तरिक्षम् । १७.५९
यह विमान (सूर्य) द्युलोक के मध्य में है और यह द्यावापृथिवी तथा अन्तरिक्ष को प्रकाश से पूर्ण करता है ।

२३००. **शतारित्रां स्वस्तये । २१.७**
सौ पतवार वाली दिव्य नौका पर सुखद यात्रा के लिए हम चढ़ें ।

२३०१. **शिल्पा वैश्वदेव्यः । २४.५**
शिल्प सभी देवों से संबद्ध है ।

२३०२. **सुनावमा रुहेयम् अस्रवन्तीमनागसम् । २१.७**
छिद्ररहित और अभेद्य उत्तम नौका पर हम चढ़ें ।

२३०३. **सुपेशसा सुशिल्पे - - उभे नक्तोषासा । २८.२९**
रात्रि और उषा दोनों सुरूप हैं और विचित्र कार्य करने वाली हैं ।

२३०४. **हिरण्यशृङ्गोऽयो अस्य पादाः । २९.२०**
यह घोड़ा सुनहरी सींग वाला है और इसके पैर लोहे के बने हैं ।

(११) मनोविज्ञान

२३०५. **अगन्महि मनसा सं शिवेन । २.२४**
हम पवित्र मन से युक्त हों ।

२३०६. **अन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः । १३.३८, १७.९४**
हृदय के अन्दर विद्यमान मन से हम पवित्र हों ।

२३०७. **आकूतिमग्निं प्रयुजं स्वाहा । ११.६६**
विचाररूपी प्रेरक अग्नि के लिए यह आहुति है ।

२३०८. **आ न एतु मनः पुनः क्रत्वे दक्षाय जीवसे । ३.५४**
हमें क्रिया, ज्ञान और जीवनशक्ति के लिए मन पुनः प्राप्त हो ।

२३०९. **आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः । २५.१४**
हमें सब ओर से शुभ विचार प्राप्त हों ।

२३१०. **चित्तं विज्ञातमग्निं प्रयुजं स्वाहा । ११.६६**
चित्त और विज्ञानरूपी प्रेरक अग्नि के लिए यह आहुति है ।

२३११. **चित्तं विज्ञातायादित्यै स्वाहा । २२.२०**
अदिति (अनिर्वचनीय ब्रह्म) के ज्ञान के लिए चित्त है ।

२३१२. **तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु । ३४.१**
मेरा मन शुभ संकल्पों वाला हो ।

२३१३. **दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकम् । ३४.१**
मन सुदूरगामी है और प्रकाशों का एकमात्र प्रकाशक है ।

२३१४. **भद्रं मनः कृणुष्व वृत्रतूर्ये । १५.३९**
पाप-नाश के लिए अपने मन को पवित्र करो ।

२३१५. **मनः प्रजापतये स्वाहा । २२.२०**
मन प्रजापति है । उसके लिए यह आहुति है ।

२३१६. मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय । ३९.४
मैं मन की कामनाओं को, संकल्पों को तथा वाणी की सत्यता को प्राप्त करूँ।

२३१७. मनस्तनूषु बिभ्रतः । ३.५६
जाग्रत् स्वप्न और सुषुप्ति, तीनों शरीरों में मन को केन्द्रित करें ।

२३१८. मनो गन्धर्वस्तस्य ऋक्सामान्यप्सरसः । १८.४३
मन गन्धर्व (ज्ञानधारक) है, ऋक् और साम वेद उसकी अप्सराएँ हैं ।

२३१९. मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य । २.१३
मन अतिवेगशील है । वह घृताहुति स्वीकार करे ।

२३२०. मनो ददातु दैव्यो जनः । ३.५५
दिव्य जन हमें मनोबल दें ।

२३२१. मनो न्वाह्वामहे नाराशंसेन स्तोमेन । ३.५३
लोकहितकारी स्तुति से हम मनोबल का आह्वान करते हैं ।

२३२२. मनो मेधामग्निं प्रयुजं स्वाहा । ११.६६
मन और मेधारूपी प्रेरक अग्नि के लिए यह आहुति है ।

२३२३. मनो मे हार्दि यच्छ । ६.२१
हार्दिक सद्भावों से युक्त मन हमें दो ।

२३२४. यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु । ३४.३
मन मनुष्यों के अन्दर अमर ज्योति है ।

२३२५. यत् प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च । ३४.३
मन के तीन गुण हैं– ज्ञान, स्मरण और धारण ।

२३२६. यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानाम् । ३४.२
मन मनुष्यों के अन्दर अनुपम पूज्य देव है ।

२३२७. यस्मान्न ऋते किं चन कर्म क्रियते । ३४.३
मन के बिना कोई कार्य नहीं किया जा सकता है ।

२३२८. **यस्मिन् ऋचः साम यजूंषि । ३४.५**
मन में ही ऋग्, साम और यजुर्वेद प्रतिष्ठित हैं ।

२३२९. **यस्मिंश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानाम् । ३४.५**
मन में ही मनुष्यों का चित्त ओतप्रोत है ।

२३३०. **येन यज्ञस्तायते सप्तहोता । ३४.४**
मन ही सात होता (५ ज्ञानेन्द्रियाँ, मन, बुद्धि) वाला यज्ञ करता है ।

२३३१. **येना समत्सु सासहः । १५.३९**
हे अग्नि! मन से ही युद्धों ने विजय प्राप्त करते हो ।

२३३२. **वाचो विधृतिमग्निं प्रयुजं स्वाहा । ११.६६**
वाणी में धारणाशक्तिरूपी प्रेरक अग्नि के लिए यह आहुति है।

२३३३. **हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठम् । ३४.६**
मन हृदय में स्थित है, अति कर्मठ और अतिवेगशाली है ।

२३३४. **हृदा मतिं जनय । २०.७८**
अग्नि (ईश्वर) के लिए शुद्ध हृदययुक्त बुद्धि उत्पन्न करो ।

२३३५. **हृदे त्वा मनसे त्वा । ६.२५**
हे सोम! हम हार्दिक पवित्रता और मनोबल के लिए तुम्हें पुकारते हैं ।

(१२) वनस्पति-शास्त्र

२३३६. **उच्छ्रयस्व वनस्पते । ४.१०**
हे वनस्पति! तुम ऊपर बढ़ते जाओ ।

२३३७. **एव नो दूर्वे प्र तनु सहस्रेण शतेन च । १३.२०**
हे दूर्वा (दूब) ! तुम अपनी तरह हमें भी सहस्रों प्रकार से फैलाओ।

२३३८. **ओषधे त्रायस्व । ४.१, ५.४२**
हे ओषधि! तुम इसकी रक्षा करो ।

२३३९. **ओषधे त्रायस्व स्वधिते मैनं हिंसीः । ६.१५**
हे ओषधि! यजमान की रक्षा करो । हे क्षुर! इसको हानि न पहुँचाओ ।

२३४०. **ओषध्यास्ते मूलं मा हिंसिषम् । १.२५**
हम ओषधियों की जड़ को हानि न पहुँचावें ।

२३४१. **ता अस्मभ्यं मधुमतीर्भवन्तु । ९.२३**
ओषधियाँ हमारे लिए मधुमय हों ।

२३४२. **त्वं देव वनस्पते शतवल्शो वि रोह । ५.४३**
हे वृक्ष देव ! तुम सैकड़ों शाखाओं वाले होकर बढ़ो ।

२३४३. **मध्वानक्तु सुपिप्पलाभ्यस्त्वौषधीभ्यः । ६.२**
हे वृक्ष ! सविता तुम्हें मधुरता, सुन्दर फल और ओषधियों से युक्त करे ।

२३४४. **पाह्यंहसः । ४.१०**
हे वृक्ष ! तुम पापों (प्रदूषणों) से बचाओ ।

२३४५. **माऽपो मौषधीर्हिंसीः । ६.२२**
जल और ओषधियों को हानि न पहुँचाओ ।

२३४६. **या शतेन प्रतनोषि सहस्रेण विरोहसि । १३.२१**
हे ओषधि ! तुम सैकड़ों ढंग से फैलती हो और हजारों ढंग से बढ़ती हो ।

२३४७. **वनस्पतयोऽसृज्यन्त सोमोऽधिपतिरासीत् । १४.३१**
वनस्पतियाँ उत्पन्न हुईं और सोम (चन्द्रमा) इनका स्वामी हुआ ।

२३४८. **वनस्पतिः - - मधुशाखः - - देवमिन्द्रमवर्धयत् । २८.२०**
मधुमय शाखाओं वाले वनस्पति ने देव इन्द्र को पुष्ट किया ।

२३४९. **वीरुधश्च म ओषधयश्च मे । १८.१४**
मुझे लताएं एवं ओषधियाँ प्राप्त हों ।

२३५०. **सं मधुमतीर्मधुमतीभिः पृच्यन्ताम् । १.२१**
मधुर ओषधियाँ मधुर ओषधियों से संयुक्त हों ।

२३५१. **समाप ओषधीभिः, समोषधयो रसेन । १.२१**
जल ओषधियों से और ओषधियाँ विविध रसों से संयुक्त हों ।

२३५२. **सविता - - सोमो वनस्पतीनाम् । ९.३९**
सोम (चन्द्रमा) ओषधियों का प्रेरक (विकासकर्ता) है ।

२३५३. सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु । ६.२२
जल और ओषधियाँ हमारे लिए परम मित्रवत् हों ।

२३५४. स्वधिते मैनं हिंसीः । ४.१
हे कुल्हाड़ी! तुम इस वृक्ष को हानि न पहुँचाओ ।

(१३) प्राणि-विज्ञान

(क) पशु

२३५५. अघ्न्याः – अनमीवा अयक्ष्माः । १.१
गायें रोगरहित और स्वस्थ हों ।

२३५६. अन्तकाय गोघातम् । ३०.१८
गो-हत्या करने वाले के लिए अन्तक (मृत्युदंड) है ।

२३५७. अश्वा भवत वाजिनः । ९.६
घोड़े शक्तिशाली हों ।

२३५८. आ ते त्वष्टा पत्सु जवं दधातु । ९.८
हे अश्व! त्वष्टा (विधाता) तेरे पैरों में वेग और शक्ति दे ।

२३५९. आप्यायध्वमघ्न्याः । १.१
गायें हृष्ट-पुष्ट हों ।

२३६०. इहैव स्त मापगात । ३.२१
गायें यहीं रहें । हमें छोड़कर न जावें ।

२३६१. उपहूता इह गाव उपहूता अजावयः । ३.४३
हमारे घरों में गाय, बकरी, भेड़ आमन्त्रित हैं ।

२३६२. उपास्थाद् वाजी धुरि रासभस्य । २५.४४
रासभ (गधा, खच्चर) की धुरा में घोड़ा जुता ।

२३६३. घृतेनाक्तौ पशून् त्रायेथाम् । ६.११
घृत-सिक्त तुम दोनों देव पशुओं की रक्षा करो ।

२३६४. पर्णं न वेरनुवाति प्रगर्धिनः । ९.१५
वेग से दौड़ते हुए घोड़े की कलंगी पक्षी के पंख के तुल्य उड़ती है ।

२३६५. **पशुभिः पशूनाप्नोति । १९.२०**
पशुसेवा से पशुओं को प्राप्त करता है ।

२३६६. **पशून् मे तर्पयत । ६.३१**
तुम मेरे पशुओं को तृप्त करो ।

२३६७. **मा व स्तेन ईशत माऽघशंसः । १.१**
हे पशुओ ! तुम्हें चोर और पापी भगाकर न ले जा सकें ।

२३६८. **यजमानस्य पशून् पाहि । १.१**
हे ईश ! यजमान के पशुओं की रक्षा करो ।

२३६९. **यवसेन गावः । ७.१०**
घास एवं तृणादि से गायें पुष्ट होती हैं ।

२३७०. **रेवती रमध्वमस्मिन् योनावस्मिन् गोष्ठे । ३.२१**
सुन्दर गायें इस घर और गोशाला में आनन्द से रहें ।

२३७१. **वाजिनो वाजजितो - - काष्ठां गच्छत । ९.१३**
युद्धों में विजयी घोड़े दूर दिशाओं तक जावें ।

२३७२. **वाजे वाजेऽवत वाजिनो नः । ९.१८**
हमारे घोड़े प्रत्येक युद्ध में हमारी रक्षा करें ।

२३७३. **वातरंहा भव वाजिन् । ९.८**
हे अश्व ! तुम वायु के तुल्य वेग वाले होओ ।

२३७४. **व्रजं गच्छ गोष्ठानम् । १.२५**
हे पशु ! तुम गायों के निवास व्रज (बाड़ा) में जाओ ।

२३७५. **शं नो भवन्तु वाजिनो हवेषु । ९.१६**
घोड़े युद्धों में हमारे लिए सुखकर होवें ।

२३७६. **शंस्य पशून् मे पाहि, अथर्य पितुं मे पाहि । ३.३७**
हे प्रशंसनीय अग्नि ! मेरे पशुओं की रक्षा करो । हे प्रज्वलित अग्नि ! मेरे अन्न की रक्षा करो ।

२३७७. श्येनस्येव ध्रजतो अङ्कसं परि । ९.१५
उड़ते हुए बाज की तरह दौड़ते हुए घोड़े के चमर आदि उसके शरीर पर चिपट जाते हैं ।

(ख) पक्षी

२३७८. अद्भ्यः क्षीरं व्यपिबत् क्रुङ् । १९.७३
क्रौंच पक्षी ने पानी में से दूध पी लिया ।

२३७९. कामाय पिकः । २४.३९
कोयल की ध्वनि कामोत्तेजक होती है ।

२३८०. शारिः पुरुषवाक् । २४.३३
मैना पुरुष की तरह बोलती है ।

२३८१. शुकः पुरुषवाक् । २४.३३
तोता पुरुष की तरह बोलता है ।

२३८२. सुपर्णोऽसि गरुत्मान् दिवं गच्छ स्वः पत । १२.४
गरुड़ के सुन्दर पंख हैं । वह आकाश में उड़े ।

२३८३. सोममद्भ्यो व्यपिबत् - - हंसः । १९.७४
हंस ने जल में से सोम रस पी लिया ।

२३८४. हरिभिर्याहि मयूररोमभिः । २०.५३
मोर के तुल्य रोम वाले घोड़ों से तुम जाओ ।

(१४) विविध

(क) वेद

२३८५. ऋक्सामाभ्यां संतरन्तो यजुर्भिः । ४.१
ऋक्, साम और यजुर्वेद के अध्ययन से तुम पार हो जाओ ।

२३८६. ऋचं वाचं प्रपद्ये, मनो यजुः प्रपद्ये, साम प्राणं प्रपद्ये । ३६.१
ऋग्वेद में वाक्तत्त्व, यजुर्वेद में मनस्तत्त्व और सामवेद में प्राणतत्त्व है । उन्हें मैं प्राप्त करता हूँ।

२३८७. **ऋचः सामानि जज्ञिरे । ३१.७**
परम पुरुष से ऋक् और साम वेद उत्पन्न हुए।

२३८८. **ऋचो नामास्मि यजूंषि नामास्मि सामानि नामास्मि । १८.६७**
वह ईश्वर ऋग्वेदरूप, यजुर्वेदरूप और सामवेदरूप है ।

२३८९. **छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत । ३१.७**
उस विराट् पुरुष से छन्दस् (अथर्ववेद) और यजुर्वेद उत्पन्न हुए ।

(ख) ऋषि

२३९०. **तत्र जागृतो अस्वप्नजौ सत्रसदौ च देवौ । ३४.५५**
स्वप्नावस्था में प्राण और अपानरूपी ऋषि जागते रहते हैं ।

२३९१. **तस्य चक्षुः - - जमदग्निर्ऋषिः । १३.५६**
चक्षु जमदग्नि ऋषि है ।

२३९२. **तस्य प्राणः - - वसिष्ठ ऋषिः । १३.५४**
प्राण वसिष्ठ ऋषि है ।

२३९३. **तस्य मनो - - भरद्वाज ऋषिः । १३.५५**
मन भरद्वाज ऋषि है ।

२३९४. **तस्य श्रोत्रं - - विश्वामित्र ऋषिः । १३.५७**
कान विश्वामित्र ऋषि है ।

२३९५. **तस्यै वाङ् मात्या - - विश्वकर्म ऋषिः । १३.५८**
बुद्धि की पुत्री वाणी विश्वकर्मा ऋषि है ।

२३९६. **सप्त ऋषयः प्रतिहिताः शरीरे । ३४.५५**
शरीर में सात ऋषि (५ ज्ञानेन्द्रियाँ, मन, बुद्धि) रहते हैं ।

२३९७. **सप्त रक्षन्ति सदमप्रमादम् । ३४.५५**
ये ७ ऋषि (५ ज्ञानेन्द्रियाँ, मन, बुद्धि) सदा शरीर की रक्षा करते हैं ।

२३९८. **सहप्रमा ऋषयः सप्त दैव्याः । ३४.४९**
सातों दिव्य ऋषि ज्ञानवान् हैं ।

(ग) भाषा-विज्ञान

२३९९. अर्चन्तो अङ्गिरसो गा अविन्दन् । ३४.१७
अंगिरा ऋषियों ने पूजा करते हुए वाक्‌तत्व का ज्ञान पाया ।

२४००. एकपदीं द्विपदीं त्रिपदीं चतुष्पदीमष्टापदीम् । ८.३०
भाषा का पदविभाजन अनेक रूप में किया गया– एक, दो, तीन, चार और आठ के रूप में ।

२४०१. चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादाः । १७.९१
उस शब्दब्रह्म के चार सींग (नाम, आख्यात, उपसर्ग, निपात) हैं और तीन पैर (३ काल, वर्तमान, भूत, भविष्य) हैं ।

२४०२. त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति । १७.९१
वह शब्दब्रह्म तीन स्थानों (हृदय, कण्ठ, शिर) पर बँधा हुआ शब्द करता है ।

२४०३. द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य ।१७.९१
उस शब्दब्रह्म के २ सिर (स्फोट, ध्वनि) और सात हाथ (सात विभक्तियाँ) हैं ।

२४०४. महो देवो मर्त्यां आ विवेश । १७.९१
शब्दब्रह्म महादेव के रूप में मनुष्य में प्रविष्ट है ।

२४०५. येना नः पूर्वे पितरः पदज्ञाः । ३४.१७
हमारे पूर्वज पितृगण पदतत्त्व के ज्ञाता थे।

२४०६. वाग्देवी जुषाणा सोमस्य तृप्यतु । ८.३७
वाग्देवी प्रसन्न होकर सोमपान करे ।

२४०७. वाचस्पतिं विश्वकर्माणमूतये - - हुवेम । ८.४५
विश्वकर्मारूप बुद्धि को रक्षा के लिए हम पुकारते है ।

२४०८. वृत्रं हनति वृत्रहा शतक्रतुः । ३३.९६
शतक्रतु वृत्रहा (इन्द्र) वृत्र को मारता है ।

२४०९. सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेण । १८.३७
बुद्धि वाग्यन्त्र के द्वारा वाणी का नियन्त्रण करती है ।

(घ) संगीत

२४१०. नृत्तायानन्दाय तलवम् । ३०.२०
नृत्त और आनन्द के लिए तबला है ।

२४११. नृत्ताय सूतं गीताय शैलूषम् । ३०.६
नृत्त के लिए सारथि और गीत के लिए नट है ।

२४१२. महसे वीणावादम्, अवरस्पराय शंखध्मम् । ३०.१९
उत्सव के लिए वीणावादक और आमन्त्रणार्थ शंखवादक हैं ।

२४१३. स्वरश्च मे श्लोकश्च मे । १८.१
मुझे स्वर (संगीतस्वर) और श्लोक (गेय-पद) प्राप्त हो ।

(ङ) ज्योतिष

२४१४. अष्टौ व्यख्यत् ककुभः पृथिव्याः । ३४.२४
पृथिवी की ८ दिशाएँ देखीं ।

२४१५. इषश्चोर्जश्च शारदावृतू । १४.१६
इष् (आश्विन) और ऊर्ज् (कार्तिक) शरद् ऋतु हैं ।

**२४१६. मधवे माधवाय, शुक्राय शुचये, नभसे नभस्याय,
इषे ऊर्जे, सहसे सहस्याय, तपसे तपस्याय । ७.३०**
ये १२ मास हैं– चैत्र-वैशाख, ज्येष्ठ-आषाढ़, श्रावण-भाद्रपद, क्वार-कार्तिक, अगहन-पूष, माघ-फाल्गुन।

२४१७. ऋतव स्थ ऋतावृधः - - कामदुघाः । १७.३
ऋतुएँ ऋत की वर्धक हैं और कामधेनु हैं ।

२४१८. तपश्च तपस्यश्च शैशिरावृतू । १५.५७
तप (माघ) और तपस्य (फाल्गुन) शिशिर ऋतु हैं ।

२४१९. त्रिंशद् धाम विराजति । ३.८
अहोरात्र में ३० धाम (मुहूर्त या ६० घड़ी) होते हैं ।

२४२०. नभश्च नभस्यश्च वार्षिकावृतू । १४.१५
श्रावण और भाद्रपद वर्षा ऋतु हैं ।

२४२१. प्रज्ञानाय नक्षत्रदर्शम् । ३०.१०
विज्ञान के लिए नक्षत्रदर्श (ज्योतिषी) है ।

२४२२. मधुश्च माधवश्च वासन्तिकावृतू । १३.२५
चैत्र-वैशाख वसन्त ऋतु हैं ।

२४२३. शुक्रश्च शुचिश्च ग्रैष्मावृतू । १४.६
ज्येष्ठ-आषाढ़ ग्रीष्म ऋतु हैं ।

२४२४. सहश्च सहस्यश्च हैमन्तिकावृतू । १४.२७
अगहन-पूष हेमन्त ऋतु हैं ।

(च) प्रश्नोत्तर

२४२५. अग्निर्हिमस्य भेषजम् । २३.४६
अग्नि शीत की ओषधि है ।

२४२६. गोस्तु मात्रा न विद्यते । २३.४८
गाय की महिमा अनन्त है ।

२४२७. चन्द्रमा जायते पुनः । २३.४६
चन्द्रमा पुनः जन्म लेता है ।

२४२८. ब्रह्म सूर्यसमं ज्योतिः । २३.४८
ब्रह्म सूर्य के समान ज्योति वाला है ।

(छ) मन्त्र, तन्त्र

२४२९. इदं हिरण्यं वर्चस्वद् जैत्रायाविशतादु माम् । ३४.५०
यह सुवर्ण तेजोमय है । यह विजय के लिए मुझे मिले ।

२४३०. तन्त्रायिणे नमो द्यावापृथिवीभ्याम् । ३८.१२
सूर्य द्यावापृथिवी को तन्त्रवत् नियन्त्रित करता है । उसे नमस्ते।

२४३१. तन्म आ बध्नामि शतशारदाय । ३४.५२
इस सुवर्ण को मैं शतायु के लिए हाथ में बाँधता हूँ ।

२४३२. **दाक्षायणं हिरण्यं - - कृणुते दीर्घमायुः । ३४.५१**
दाक्षायण (जीवनप्रद) सुवर्ण मनुष्य को दीर्घायु बनाता है ।

२४३३. **मन्त्रं वदति - - यस्मिन् - - देवा ओकांसि चक्रिरे । ३४.५७**
मन्त्रों में देवों (दिव्य शक्तियों) का निवास है ।

२४३४. **स्तुता मन्त्राः कविशस्ता अवन्तु । ३४.५३**
कवियों द्वारा प्रशंसित एवं स्तुति किए गए मंत्र हमारी रक्षा करें ।

*****♣****



पद्मश्री डा० कपिलदेव द्विवेदी
निदेशक, विश्वभारती अनुसंधान परिषद्
ज्ञानपुर (भदोही)

जन्म—गहमर (गाजीपुर) उ० प्र०
तिथि—१६-१२-१९१९ ई०
पिता—श्री बलरामदास जी
शिक्षा—गुरुकुल म० वि० ज्वालापुर (हरिद्वार), लाहौर, इलाहाबाद।
उपाधियाँ—एम.ए. (संस्कृत, हिन्दी), डी०फिल्० (इलाहाबाद), व्याकरणाचार्य (वाराणसी)। जर्मन, फ्रेंच, रूसी, चीनी भाषाओं में विशेष योग्यता। अवकाश-प्राप्त प्राचार्य, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय उ०प्र०। प्रकाशन—७० से अधिक ग्रन्थ। उ०प्र० शासन द्वारा पुरस्कृत ग्रन्थ—१. अर्थविज्ञान और व्याकरणदर्शन (१९५२), २. संस्कृत-व्याकरण (१९७२), ३. संस्कृत-निबन्ध-शतकम् (१९७७), ४. राष्ट्रगीतांजलिः (१९७८), ५. भक्तिकुसुमांजलिः (१९९०), ६. अथर्ववेद का सांस्कृतिक अध्ययन (१९९१)। अन्य विशेष उल्लेखनीय ग्रन्थ—१. भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र, २. प्रौढ रचनानुवाद-कौमुदी, ३. रचनानुवाद-कौमुदी, ४. प्रा० रचनानुवाद-कौमुदी, ५. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, ६. वेदामृतम् (२० भाग) सुखी जीवन, सुखी गृहस्थ, सुखी परिवार, सुखी समाज, आचार-शिक्षा, नीति-शिक्षा, वेदों में नारी, वैदिक मनोविज्ञान, यजुर्वेद सुभाषितावली, सामवेद-सुभाषितावली, अथर्ववेद-सुभाषितावली, ऋग्वेद-सुभाषितावली, वेदों में आयुर्वेद, वेदों में राजनीतिशास्त्र।

'वेदों की महिमा अपार है। वेद ज्ञान के स्रोत हैं। विश्व को सर्वप्रथम ज्ञान देने का श्रेय वेदों को है। वेद मानव-मात्र के लिए प्रकाश-स्तम्भ हैं। जहाँ वेदों की ज्योति है, वहाँ प्रकाश है, उन्नति है, सुख है, शान्ति और सतत विकास है।.....वेदों का स्वाध्याय प्रत्येक व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और विश्व की उन्नति का साधन है, विश्वबन्धुत्व का प्रेरक है और विश्व-धर्म का संस्थापक है।'

—डा० कपिलदेव द्विवेदी (वेदामृतम्)